भगवद्वाणी

बहाई

प्रार्थनाएँ

”अपने हृदय को पवित्र कर लो
ताकि तुम मेरा स्मरण कर सको,
अपने कानों को शुद्ध कर लो
ताकि तुम मेरे शब्दों को सुन सको।
तब तुम अपना ध्यान
उस पवित्र स्थल की ओर लगाओ
जहाँ सर्वदयालु, तुम्हारे स्वामी का
सिंहासन स्थापित किया गया है
और कहोः ”हे मेरे स्वामी !
तेरी जय हो।“

***

”तुम्हारी सभी व्याधियों को
दूर करने वाला मेरा स्मरण है,
इसे मत भूलो......।“

***

”स्वयं को मेरी वाणी के महासिन्धु में
निमग्न कर लो ताकि तुम इसके रहस्यों
को उजागर कर सको
और इसकी गहराइयों में छिपे हुए
मणिमुक्ताओं को खोज पाओ....!“

- बहाउल्लाह

“मंगलमय है वह स्थल, और वह गृह और वह स्थान और वह नगर और वह हृदय और वह पर्वत और वह आश्रय और वह गुफा और वह उपत्यका और वह धरती और वह सागर और वह द्वीप और वह उपवन जहाँ उस परमेश्वर का उल्लेख हुआ है और उसके यश की महिमा गाई गई है।“

- बहाउल्लाह

विषय सूची

1. अनासक्ति	1
2. आध्यात्मिक गुण	12
3. आध्यात्मिक सभा	16
4. आरोग्य	19
5. एकता	21
6. कोष	23
7. दृढ़ता	24
8. दिवगंतों के लिये	28
9. परिवार	32
*पति के लिये	32
*माता-पिता के लिये	32
*गर्भवती माताओं के लिये	34
10. परीक्षा और सहायता	35
11. परीक्षाएँ और कठिनाइयाँ	39
12. प्रभात	42
13. प्रभुधर्म की विजय	44
14. बालक और युवा	47
15. विवाह	51
16. शयनकाल	55
17. शिक्षण	57

18. मध्यरात्रि की प्रार्थना 63
19. स्तुति और कृतज्ञता 64
20. सभाएँ 67
21. सहायता 71
22. संविदा में अडिगता 76
23. संरक्षण 80
24. क्षमा याचना 84
25. अनिवार्य प्रार्थनाएँ 89
*लघु अनिवार्य प्रार्थना 89
*मध्यम अनिवार्य प्रार्थना 89
*लम्बी अनिवार्य प्रार्थना 91
विशेष शक्तिसम्पन्न प्रार्थनाएँ **94**
26. अहमद की पाती 94
27. अग्नि पाती 97
28. आरोग्य के लिये लम्बी प्रार्थना 102
विशेष अवसरों के लिये प्रार्थनाएँ 107
29. तीर्थयात्रा की पाती 107
(बाब और बहाउल्लाह की समाधियों पर पढ़ी जाने वाली प्रार्थना)
30 तीर्थयात्रा की प्रार्थना 109
(अब्दुल-बहा की समाधि पर पढ़ी जाने वाली प्रार्थना)
31. अधिदिवस (लोंद के दिन) 111

32. उपवास 113

33. नवरूज़ की प्रार्थना 118

34. रिज़वान की पाती 120

35. कार्मल की पाती 122

*सेवा 124

*प्रार्थना का प्रभाव 127

अनासक्ति

(1)

तू महिमावंत है, हे मेरे ईश्वर! मैं धन्यवाद देता हूँ तुझे कि तूने मुझे उसका ज्ञान कराया, जो तेरी दया का उद्गमस्थल है, जो तेरी अनुकम्पा का उदयस्थल है और जो तेरे धर्म का कोषागार है। जिस नाम के स्मरण मात्र से उनके चेहरे दीप्तिमान हो उठते हैं, जो तेरे समीप हैं और उनके हृदय-पखेरू तुझ तक पहुँचने के लिये तड़प उठते हैं, जो तेरे भक्त हैं। मैं तेरे उस नाम के सहारे याचना करता हूँ कि यह वर दे कि प्रतिपल, प्रत्येक परिस्थिति में तेरी डोर को थामे रहूँ और तुझे छोड़कर अन्य सबकी आसक्ति से मुक्त हो जाऊँ और तेरे प्रकटीकरण की ओर एकटक देखता रहूँ और तूने जो अपनी पातियों में विहित किया है उसका अनुपालन कर सकूँ। हे मेरे ईश्वर! मेरे बाह्य और अन्तर्मन को अपनी अनुकम्पा और प्रेममय दया के परिधान से सुसज्जित कर। मुझे सुरक्षित रख और तुझे जो कुछ भी अप्रिय है उससे दूर रख और अपनी आज्ञाओं के अनुपालन में कृपापूर्ण मेरी और मेरे प्रियजनों की सहायता कर और मेरे अंदर जो भी विषय-प्रवृत्ति और दुष्काम भाव हैं उन पर विजय पाने में मेरी सहायता कर।

तू सत्य ही, समस्त मानवजाति का ईश्वर है, और इसलोक और परलोक का स्वामी है। तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं, सर्वज्ञ, सर्वप्रज्ञ।

- बहाउल्लाह

(2)

हे मेरे ईश्वर ! मुझे अपने निकट आने की और अपने प्रांगण की पावन परिधि में रहने की अनुमति दे। तुझसे दूर रहकर मैं निष्प्राण हो गया हूँ; अपने अनुग्रह के पंखों की छाया तले विश्राम करने दे, तुझसे वियोग की ज्वाला ने मेरे हृदय को द्रवित कर दिया है। मुझे, उस सरिता के निकट ला जो सत्य ही जीवन है। तेरी खोज में मेरी आत्मा निरंतर प्यास से दग्ध हो गई है। हे मेरे ईश्वर ! मेरी आहें, मेरी वेदना की तीक्ष्णता और मेरे आँसू तेरे प्रति मेरे प्रेम के प्रतीक हैं। उस गुणगान के माध्यम से जिसका बखान तू ने किया, मैं याचना करता हूँ, ऐसी अनुकम्पा कर कि मैं उन लोगों में गिना जाऊँ जिन्होंने तेरे दिवस में तुझे पहचाना है और तेरी प्रभुसत्ता स्वीकार की है। हे मेरे ईश्वर! अपनी प्रेममयी दयालुता के जीवंत जल का अपनी दया के करों से पान करने में सहायता कर, ताकि मैं तुझे छोड़, सब कुछ को

पूरी तरह भूला दूँ और पूरी तरह तुझमें ही रम जाऊँ। तू जो चाहे करने में समर्थ है। तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं, संकट में सहायक, स्वयंजीवी। तू सर्वशक्तिमान है; हे तू, जो सभी सम्राटों का सम्राट है, तेरी ही महिमा का गुणगान हो।

- बहाउल्लाह

(3)

तेरे ही नाम की स्तुति हो,, हे मेरे ईश्वर! तेरी आज्ञा से और तेरी इच्छा के अनुकूल सम्पूर्ण सृष्टि में व्याप्त, तेरी अनुकम्पा के परिधान की सुरभि के सहारे और तेरे दिव्य इच्छा के सूर्य के सहारे, जो तेरे दया के क्षितिज पर तेरी शक्ति और प्रभुसत्ता के साथ प्रकाशमान हुआ है, मैं याचना करता हूँ कि मेरे हृदय से व्यर्थ-कल्पनाओं और निरर्थक धारणाओं को धो डाल, ताकि तन-मन से मैं तेरी ओर उन्मुख हो सकूँ। हे तू, जो संपूर्ण मानवजाति का स्वामी है! मैं तेरा सेवक और तेरे सेवक का पुत्र हूँ ! हे मेरे ईश्वर! मैंने तेरी अनुकम्पा की बांह पकड़ ली है और तेरी स्नेहिल कृपा की डोर को दृढ़ता से थाम लिया है। मेरे लिये शुभ पदार्थों का विधान कर जो तेरी हैं और अपने आशीष के आकाश से, अपने अनुग्रह के आकाश से भेजे गये सहभोज में सम्मिलित होने दे। तू सत्य ही, सभी लोकों का स्वामी है और उन सबका ईश्वर है, जो धरती और आकाश पर हैं।

- बहाउल्लाह

(4)

हे ईश्वर! तेरे धर्म की ऊष्मा ने अनेक अचेत हृदयों को प्रदीप्त किया है और तेरी वाणी के माधुर्य ने अनेक सोये हुए लोगों को जगाया है। न जाने कितने ऐसे अनजाने लोग हैं, जिन्होंने तेरी एकता के तरुवर की छाया में आश्रय चाहा है और न जाने कितने ऐसे प्यासे लोग हैं जो तेरे इस दिवस में तेरी जीवंत जलधारा की ओर आकुल हो दौड़ पड़े हैं।

वह धन्य है जो तेरी ओर उन्मुख हुआ है और जिसने तेरी मुख ज्योति के उद्गमस्थल की उपस्थिति पाने की शीघ्रता की है। धन्य है वह जो पूर्ण स्नेह से तेरे प्राकट्य के उदयस्थल की ओर, तेरी प्रेरणा के निर्झरस्रोत की ओर उन्मुख हुआ है। धन्य है वह जिसने तेरे पथ में तेरी उदारता और कृपा से प्राप्त अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया है। धन्य है वह जिसने तुझे पाने की उत्कट चाह में तेरे सिवा अपना सर्वस्व त्याग दिया है। धन्य है वह जिसने तेरी अंतरंग घनिष्ठता का सुख पाया है और जो सिवाय तेरे सब कुछ से विरक्त हो गया है।

मैं याचना करता हूँ, हे मेरे नाथ ! उसके माध्यम से जो तेरा ’नाम‘ है, तेरी ही सत्ता से जो उसके कारागार के क्षितिज पर उदित हुई है, कि तू सबको वह प्रदान कर जो तू उचित समझता है और जो तेरे परम पद के अनुरूप है। वस्तुतः, तेरी शक्ति सर्वोपरि है।

- बहाउल्लाह

(5)

हे मेरे ईश्वर, मैं नहीं जानता, कि वह कौन सी अग्नि है जो तूने अपनी धरा पर प्रज्वलित की है। धरती कभी भी इसके तेज को आच्छादित नहीं कर सकती और न जल इसकी अग्नि को बुझा सकता है। संसार के समस्त निवासी भी इसके वेग को बाधित करने में असमर्थ हैं। वह जो इसके निकट खिंच आया है और इसकी गर्जना को जिसने सुना है उसे प्राप्त आशीर्वाद महान हैं।

हे मेरे ईश्वर, कुछ को, तूने अपनी शक्तिदायिनी कृपा के द्वारा इसकी ओर आने के योग्य बनाया है, जबकि दूसरों को इस कारण जो तेरे दिवस में उनके हाथों ने किया है, पीछे रखा है। जिसने भी शीघ्रता से इसकी ओर पग बढ़ाये हैं और तेरे सौन्दर्य को निहारने की उत्कंठा में जो भी तुझ तक पहुँचा है, उसने तेरे पथ में अपना जीवन न्योछावर कर दिया है और तेरे अतिरिक्त अन्य सब कुछ से पूर्णतया अनासक्त होकर तुझ तक पहुँच गया है।

मैं याचना करता हूँ कि उस ज्वाला से जो तेरी सृष्टि में प्रज्वलित हुई है, उन पर्दों को विदीर्ण कर दे, जिन्होंने मुझे तेरी भव्यता के सिंहासन के सम्मुख उपस्थित होने और तेरे प्रवेश-द्वार पर खड़ा होने से रोक रखा है। हे मेरे प्रभु! मेरे लिये अपने ग्रंथ में विहित प्रत्येक उत्तम वस्तु का विधान कर और मुझे अपनी दया की शरण से दूर हटाये जाने का दुःख न दे। तू जैसा चाहे वैसा करने में सक्षम है; तू निश्चय ही, सर्वशक्तिशाली, परम उदार है।

- बहाउल्लाह

(6)

स्तुति हो तेरी हे मेरे ईश्वर! मैं तेरे उन सेवकों में से एक हूँ जिन्होंने तुझ पर और तेरे चिन्हों पर विश्वास किया है। तू देखता है कि कैसे तेरी दया के द्वार की ओर मैं अपना ध्यान लगाये हुए हूँ और तेरी स्नेहमयी कृपा की ओर उन्मुख हो गया हूँ। मैं तुझसे याचना करता हूँ, तेरी परम श्रेष्ठ उपाधियों और परम उदात्त गुणों के नाम पर, कि मेरे सम्मुख अपने वरदानों के

द्वार खोल दे और तब जो शुभ हो वह करने में मेरी सहायता कर। हे तू, जो सभी नामों और गुणों का स्वामी है!

हे मेरे प्रभु! मैं दरिद्र हूँ, तू सर्वसम्पन्न है! मैं तेरी ओर उन्मुख हूँ और स्वयं को तेरे अतिरिक्त अन्य सभी से मुक्त कर लिया है। मैं विनती करता हूँ तुझसे कि मुझे अपनी मृदुल दया के पवन झकोरों से वंचित मत कर और जो कुछ तूने अपने चुने हुए सेवकों के लिये निश्चित किया है, उसे मुझ तक आने से न रोक।

हे मेरे प्रभु, मेरे नेत्रों से पर्दा हटा दे, जिससे जो भी तूने अपने प्राणियों के लिये चाहा है, मैं उसे पहचान पाऊँ और तेरे सृजन के सभी मूर्त रूपों में तेरी सर्वसामर्थ्यमय शक्ति के प्रकटीकरणों को खोज पाऊँ। हे मेरे प्रभु, मेरी आत्मा को अपने परम सामर्थ्यमय चिन्हों से उल्लसित कर दे और मुझे मेरी भ्रष्ट और अधम इच्छाओं की गर्त से बाहर निकाल। तब मेरे लिये इहलोक और परलोक के समस्त शुभ मंगल का विधान कर। तुझमें जो चाहे वह करने की सामर्थ्य है। तुझ सर्वमहिमावान के अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है, जिसकी सहायता की कामना सभी मानव करते हैं।

हे मेरे प्रभु! मैं धन्यवाद देता हूँ तुझे, कि तूने मुझे मेरी निद्रा से जगाया और मुझे गतिमान कर दिया है और मेरे अंदर वह देख पाने की लालसा जगाई है जिसे समझने में तेरे अधिकांश सेवक विफल रहे हैं। इसलिये, हे मेरे नाथ, अपने प्रेम और प्रसन्नता के लिये तेरी जो भी कामना है, वह देखने योग्य मुझे बना। तू वह है जिसकी सामर्थ्य और सत्ता की शक्ति की समस्त वस्तुएँ साक्षी हैं।

तू सर्वशक्तिमान, कल्याणकारी है; तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है !

- बहाउल्लाह

(7)

तेरे स्वामी, सृष्टिकर्ता, सर्वपरिपूरक, परमउदात्त के नाम से जिसकी याचना सभी मनुष्य करते हैं, कहोः ”हे मेरे ईश्वर! तू, जो समस्त धरती और आकाशों का रचयिता है, हे दिव्य लोक के स्वामी! तू भलीभाँति मेरे हृदय के रहस्यों को जानता है, जबकि तेरा अस्तित्व तेरे अतिरिक्त अन्य सभी के ज्ञान से परे है। मेरा जो भी है, वह सब तू देखता है, जबकि तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ऐसा नहीं कर सकता है। अपने अनुग्रह से मेरे लिये वह प्रदान कर जो मुझे तेरे सिवा अन्य सबसे स्वतंत्र कर दे। वर दे कि मैं इहलोक और परलोक में

अपने जीवन के सुफल प्राप्त करूँ। मेरे सम्मुख अपने अनुग्रह के द्वार खोल दे और कृपापूर्वक मुझे अपनी स्नेहिल दया और वरदानों से विभूषित कर।

हे तू, जो असीम अनुकम्पाओं का स्वामी है। जो तुझसे प्रेम करते हैं, उन्हें अपनी दिव्य सहायता से आवृत कर और हमें अपने उपहारों और अक्षय सम्पदाओं का दान दे। तू हमारे लिये परिपूरक बन। हमारे पापों को क्षमा कर दे और हम पर दया कर। तू ही हमारा स्वामी और सभी सृजित वस्तुओं का स्वामी है। तेरे अतिरिक्त हम अन्य किसी का आह्वान नहीं करते और तेरे अतिरिक्त अन्य किसी के अनुग्रहों की याचना नहीं करते। तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं, सर्वसम्पन्न, सर्वोच्च!

हे मेरे स्वामी, अपने दिव्य संदेशवाहकों पर, उन पावन और सदाचारी जनों पर अपने आशीष प्रदान कर। सत्य ही तू, अद्वितीय, सर्ववशकारी ईश्वर है।

- बाब

(8)

हे स्वामी! मुझे तेरी शरण में आना चाहता हूँ, और तेरे समस्त चिन्हों की ओर मैं ध्यान लगाये हुये हूँ।

हे स्वामी! चाहे यात्रा में हूँ या घर में, और अपने व्यवसाय अथवा अपने कार्य में; मैं अपनी सम्पूर्ण आस्था तुझमें ही रखता हूँ।

तब मुझे अपनी पर्याप्त सहायता प्रदान कर जो मुझे समस्त वस्तुओं से स्वतंत्र कर दे, हे तू जो अपनी दया में सर्वोत्तम है!

हे स्वामी! मुझे मेरा अंश प्रदान कर, जैसा तू चाहता है और जो भी तूने मेरे लिए नियत किया है उसमें मुझे संतुष्ट कर दे।
आदेश देने का सम्पूर्ण अधिकार तेरा ही है।

- बाब

(9)

हे ईश्वर, मेरे ईश्वर! मेरे पात्र को समस्त वस्तुओं से अनासक्ति से भर दे, और अपनी भव्यता और दानशीलता के कारण प्रेम की मदिरा से मुझे उल्लसित कर दे, मुझे वासनाओं और कामनाओं के आघातों से मुक्त कर, मेरे इस निम्न गतम के बांधनों को तोड़ डाल, परम

आनन्द के साथ मुझे अपने अलौकिक लोक में ले चल और अपनी सेविकाओं के बीच मुझे अपनी पावनता की सांसों के द्वारा नवस्फूर्ति दे।

अपने आशीषों के प्रकाश से मेरे मुखड़े को दीप्तिमान कर, अपनी सर्वसमर्थ शक्ति के दर्शन से मेरे नेत्रों को नवज्योति प्रदान कर और अपने उस ज्ञान के द्वारा, जो सर्वसम्पूर्ण है, मुझे आह्लादित कर दे। हे तू, जो इहलोक और परलोक के साम्राज्य का राजाधिराज है! हे तू सत्ता और शक्ति के स्वामी! मेरी आत्मा को नवस्फूर्ति प्रदान करने वाले महान आनन्द के समाचारों से मुझे आनन्दविभोर कर दे, ताकि मैं तेरे प्रतीकों और तेरी शिक्षाओं का प्रसार दूर-दूर तक कर सकूँ, तेरे विधानों का पालन कर सकूँ और तेरी वचनों को यशस्वी बना सकूँ।

तू निश्चय ही, शक्तिशाली, सर्वप्रदाता, सुयोग्य, सर्वशक्तिमान है।

- अब्दुल-बहा

(10)

हे ईश्वर! मेरे ईश्वर! तू मेरी आशा और मेरा प्रियतम, मेरा सर्वोच्च लक्ष्य और कामना है ! अत्यन्त विनीत भाव से और सम्पूर्ण समर्पण के साथ मैं तूझसे याचना करता हूँ, मुझे अपनी धरती पर अपने प्रेम की एक मीनार बना, अपने प्राणियों के मध्य अपने ज्ञान का दीप बना और अपने साम्राज्य में अपनी दिव्य कृपा की ध्वजा बनने दे।

मुझे अपने ऐसे सेवकों में गिन जिन्होंने स्वयं को तेरे अतिरिक्त अन्य सबसे अनासक्त कर लिया है, स्वयं को इस संसार की क्षणभंगुर वस्तुओं से पवित्र कर लिया है और अपने आपको निरर्थक, कपोल कल्पनाओं की दुहाई देने वालों के इशारों से मुक्त कर लिया है।

अपने लोक की चेतना की सम्पुष्टि के द्वारा मेरे हृदय को आनन्दविभोर कर दे और अपनी सर्वशक्तिमय महिमा के साम्राज्य से मुझ पर निरन्तर बरसने वाली दिव्य सहायता के समूहों के दर्शन से मेरे नेत्रों को दीप्तिमान कर दे।

तू सत्य ही, सर्वसामर्थ्यशाली, सर्वमहिमामय, सर्वशक्तिमंत है।

- अब्दुल-बहा

आध्यात्मिक विकास

(11)

हे ईश्वर! मेरे ईश्वर! यह तेरा सेवक तेरी ओर बढ़ चला है। तेरे प्रेम के पथ में विचरण कर रहा है। तेरी अक्षय सम्पदाओं की आशा करते हुए तेरे साम्राज्य पर भरोसा रखे हुए और तेरे वरदानों की मदिरा से मदहोश होकर तेरे प्रेम की मरूभूमि में भावना के उन्माद में भटक रहा है, तेरे अनुग्रहों की अपेक्षा रखे हुए। हे मेरे ईश्वर! अपने प्रति अनुराग की उसकी प्रचंडता को, तेरी स्तुति की इस निरंतरता को और तेरे प्रति प्रेम की प्रखरता को बढ़ा दे।

निश्चय ही तू परमउदार, भरपूर कृपा का स्वामी है। तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है। सदा क्षमाशील, सर्वदयामय।

- अब्दुल-बहा

(12)

हे ईश्वर, मेरे ईश्वर! अपने प्रियजनों को अपने धर्म में अडिग रहने, अपने पथ पर चलने और प्रधर्म में अडिग रहने में सहायता कर; अहम् और वासना के आवेग को दमित करने की शक्ति प्रदान कर ताकि वे दिव्य मार्गदर्शन के पथ का अनुसरण कर सकें। तू शक्तिशाली, महिमावान, स्वयंजीवी, दाता, दयालु, सर्वसमर्थ और सर्वप्रदाता है।

- अब्दुल-बहा

(13)

हे मेरे ईश्वर! अपनी अनन्तता की सुवासित जलधाराओं में से मुझे पान करने दे, और अपने अस्तित्व के वृक्ष के फलों का स्वाद चखने योग्य मुझे बना, हे मेरी आशा! अपने प्रेम के स्फटिक निर्मल झरनों से घूंट भरने दे मुझे, हे मेरी महिमा! और अपने अनन्त मंगल विधान की छत्रछाया में मुझे विश्राम करने दे, हे मेरी ज्योति! अपनी निकटता के उपवन में, अपने सान्निध्य में, मुझे विश्राम करने योग्य बना, हे मेरे प्रियतम! और अपने सिंहासन की दाहिनी भुजा पर मुझे बैठा, हे मेरी कामना अपने उल्लास के सुवासित झकोरों का एक झोंका मुझ पर से बह जाने दे, हे मेरे लक्ष्य! अपने सत्य के आकाश की ऊँचाइयों में मुझे प्रवेश पाने दे, हे मेरे आराध्य! अपनी एकता की दिव्य कोकिला की मधुर स्वर-लहरी को सुन पाने का

अवसर दे मुझे, हे देदीप्यमान ईश्वर! अपनी शक्ति और सामर्थ्य की चेतना से मुझे अनुप्राणित कर दे, हे मेरे विश्वम्भर! अपने प्रेम में मुझे अटल बना, हे मेरे सहायक! और अपनी सुप्रसन्नता के पथ में मेरे पगों को अडिग रख, हे मेरे स्रष्टा! अपनी अमरता के उपवन में, अपने मुखारविन्द के सम्मुख सदा निवास करने दे मुझे, हे तू जो सदासर्वदा मुझ पर दयालु है! और अपनी महिमा के आसन पर मुझे प्रतिष्ठित कर, हे तू, जो मेरा स्वामी है! अपनी प्रेममयी कृपा के आकाश तक मुझे उड़ान भरने दे, हे मेरे जीवनाधार! और अपने मार्गदर्शन के सूर्य से मेरा पथ आलोकित कर, हे मनमोहन! अपनी अदृश्य चेतना से मेरा साक्षात्कार करा, हे तू जो मेरा उद्गम है और मेरी सर्वोपरि इच्छा है; और अपने सौन्दर्य की सुरभि के सार तक मुझे लौटने दे, हे तू जो मेरा ईश्वर है!

तुझे जो प्रिय है, वह करने में तू समर्थ है। तू, सत्य ही, परम उदात्त, सर्वमहिमामय, सर्वोच्च है।

- बहाउल्लाह

(14)

वह कृपालु, सर्वउदार है ! हे ईश्वर! मेरे ईश्वर! तेरी पुकार ने मुझे अपनी ओर आकृष्ट किया है और तेरी महिमा की लेखनी ने मुझे जाग्रत किया है। तेरे पावन वचन के निर्झर ने मुझे आनन्दविभोर कर दिया है और तेरी प्रेरणा की मदिरा ने मुझे सम्मोहित कर दिया है। हे ईश्वर! तू देखता है मुझे, तेरे अतिरिक्त अन्य सबसे विरक्त, तेरे आशीषों की डोर से बंधा हुआ और तेरी अनुकम्पा के चमत्कारों के लिये आकुल-व्याकुल मन-प्राण लिये, तेरी स्नेहसिक्त कृपा के उमड़ते सागर और तेरे संरक्षण के दमकते प्रकाश के नाम पर मैं तेरी विनती करता हूँ कि तू ऐसा वर दे जो मुझे तेरे समीप ले जाये और तेरे नाम-रत्न का धनी बना दे। मेरी जिह्वा, मेरी लेखनी, मेरा तन-मन तेरी शक्ति, तेरी सामर्थ्य, तेरी अनुकम्पा और तेरी कृपा का प्रमाण दे रहे हैं कि तू ही है ईश्वर और तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं, शक्तिसम्पन्न, सामर्थ्यवान।

- बहाउल्लाह

(15)

हे मेरे ईश्वर, मैं इस क्षण साक्षी देता हूँ अपनी निरीहता और तेरी सर्वोपरि सत्ता, अपनी दुर्बलता और तेरी शक्तिमयता की। मैं नहीं जानता कि मेरे लिये क्या है लाभकारी और क्या है हानिकर। तू, सत्य ही, सर्वज्ञाता, सर्वप्रज्ञ है। हे मेरे ईश्वर, मेरे स्वामी, तू मेरे लिये उसका विधान कर जो मुझे तेरे पुरातन आदेश में संतुष्टि की अनुभूति कराये और मुझे तेरे प्रत्येक लोक में समृद्धि दिलाये। तू, सत्य ही, दयालु, और प्रदाता है।

हे स्वामी! मुझे अपनी सम्पदा के महासागर और अपनी कृपा से दूर मत हटा और मेरे लिये इहलोक तथा परलोक के शुभ-मंगल का विधान कर। वस्तुतः, तू दया के परमोच्च सिंहासन का स्वामी है, तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है, एकमेव, सर्वज्ञाता, सर्वप्रज्ञ!

- बहाउल्लाह

(16)

हे मेरे स्वामी! अपने सौंदर्य को मेरा भोज्य, अपनी निकटता को मेरा जीवन-जल, अपनी सुप्रसन्नता को मेरी आशा, अपनी स्तुति को मेरा दैनिक कर्म, अपने स्मरण को मेरा साथी, अपनी सम्प्रभुता शक्ति को मेरा सहायक, अपने आलय को मेरा आश्रयस्थल और अपने उस स्थान को मेरा निवास बना जहाँ वैसे लोगों का प्रवेश वर्जित है जो एक पर्दे के कारण तुमसे परे हैं।

सत्य ही तू, सर्वसामर्थ्यमय, सर्वमहिमामय, सर्वशक्तिशाली है।

- बहाउल्लाह

(17)

तेरे ही नाम की स्तुति हो, हे ईश्वर, मेरे ईश्वर! मैं तेरा वह सेवक हूँ जिसने तेरी करुणामयी दया के आँचल को थाम लिया है और जो तेरी असीम दातारपन के आंचल से लिपट गया हूँ। तेरे नाम पर जिसके द्वारा तूने सृष्टि की समस्त दृश्य तथा अदृश्य वस्तुओं को अपने अधीन किया है और जिसके द्वारा यह श्वांस, जो वस्तुतः जीवन ही है, समस्त सृष्टि में प्रवाहित की गई है, मैं याचना करता हूँ कि तू धरती तथा आकाश को आवृत करने वाली अपनी शक्ति से मुझे सबल बना और समस्त विपदाओं एवं रोगों से मेरी रक्षा कर। मैं साक्षी

देता हूँ कि तू ही समस्त नामों का स्वामी है और तू वैसी ही आज्ञा देने वाला है जो तुझे पसंद हो, तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं, सर्वशक्तिशाली, सर्वज्ञाता, सर्वप्रज्ञ!

हे मेरे स्वामी! मेरे लिये उसका विधान कर जो तेरे प्रत्येक लोक मे मेरे लिये कल्याणकारी हो। और तब मेरे लिये वह भेज जो तूने अपने चुने हुए प्राणियों के लिये निर्धारित किया है: ऐसे प्राणी, जिन्हें न तो दोष देने वालों का दोषारोपण, न ही अधर्मियों का कोलाहल और न ही तुझसे विमुख प्राणियों की आसक्तियाँ तेरी ओर उन्मुख होने से रोक सकी है।

तू सत्य ही, अपनी सर्वोपरि सत्ता से, संकट में सहायक है। तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है, परम बलशाली, सर्वशक्तिमान।

- बहाउल्लाह

आध्यात्मिक सभा

(जब भी तुम परामर्श के लिये सभाकक्ष में प्रवेश करो, तो ईश्वर के प्रेम से धड़कते हृदय और मात्र उसके स्मरण के अतिरिक्त अन्य सभी कुछ से मुक्त हुई जिह्वा से इस प्रार्थना का पाठ करो, जिससे कि वह सर्वशक्तिमान सर्वोच्च विजय प्राप्त कराने में अनुग्रहपूर्वक तुम्हारी सहायता करे।)

हे ईश्वर, मेरे ईश्वर! हम तेरे सेवक हैं जो भक्तिपूर्वक तेरे पावन मुखड़े की ओर उन्मुख हुए हैं, जिन्होंने इस महिमामय दिवस में तेरे अतिरिक्त अन्य सभी से स्वयं को अनासक्त कर लिया है। हम इस आध्यात्मिक सभा में, अपने विचारों और चिन्तन में, एक बनकर उपस्थित हुए हैं और मानवजाति के मध्य तेरी वाणी का यशोगान करने के लिये हमारे उद्देश्य एक हो गये हैं। हे स्वामी! हमारे ईश्वर! हमें अपने दिव्य मार्गदर्शन के चिन्ह, मनुष्यों के मध्य अपने उदात्त धर्म की ध्वजाएँ, अपनी सशक्त संविदा के सेवक बना, हे तू हमारे परमोच्च स्वामी ! हमें अपने अब्हा साम्राज्य में अपनी दिव्य एकता की अभिव्यक्तियाँ, और सर्वत्र चमकते दीप्तिमान सितारे बना। स्वामी! हमें अपनी अद्भुत कृपा की विराट तरंगों से तरंगित सागर बनने में हमारी सहायता कर, तेरे सर्वमहिमामय शिखरों से प्रवाहित सरितायें, अपनी दिव्य धर्म के तरूवर पर लगे सुमधुर फल तेरी दिव्य अंगूर-वाटिका में तेरे उदारता की समीरों से झूमते हुए तरूवर बना। हे ईश्वर! हमारी आत्माओं को अपनी दिव्य एकता के छंदों पर आश्रित कर दे, हमारे हृदय तेरी कृपा से आनंदित जिससे कि हम समुद्र की तरंगों के समान एक हो जायें, तेरे देदीप्यमान प्रकाश कि किरणों के समान एक-दूसरे में विलीन हो जायें; कि हमारे विचार, हमारे मत, हमारी अनुभूतियाँ एक वास्तविकता बन जायें, जो सम्पूर्ण विश्व में एकता की भावना को व्यक्त करें। तू कृपालु, उदार, प्रदाता, सर्वशक्तिमान, दयावान, करूणामय है।

- अब्दुल-बहा

(18)

हे तू दिव्य साम्राज्य के स्वामी! हमारे शरीर यहाँ अवश्य एकत्र हैं, लेकिन हम मंत्रमुग्ध हैं, तुम्हारे प्रेम ने हमारे मन-प्राण को हर लिया है; हम तेरे देदीप्यमान मुखड़े की किरणों से आनंदित हो उठे हैं। भले ही हम दुर्बल हैं, किन्तु तेरे सामर्थ्य और शक्ति के प्रकटन की

प्रतीक्षा करते हैं। भले ही हम दरिद्र हैं, सम्पत्ति और साधन से हैं हीन, फिर भी हम तेरे दिव्य साम्राज्य की निधियों से समृद्धि पाते हैं। भले ही हम हैं बूंद मात्र है, फिर भी तेरे महासिंधु की अतल गहराइयों से हम अपना भाग ग्रहण करते हैं! हम धूलकण मात्र हैं, फिर भी, तेरे सूर्य की भव्य महिमा से कांति पाते हैं। हे पालनहार ईश्वर! अपनी सहायता भेज, ताकि यहाँ एकत्रित प्रत्येक व्यक्ति एक प्रकाशित दीप बन जाये, हर एक आकर्षण का केन्द्रबिन्दु और तेरे दिव्य प्रांगण में पुकार लगाने वाला हरकारा बन जाये, ताकि हम इस अधम लोक को तेरे स्वर्ग का दर्पण बना सकें।

- अब्दुल-बहा

(19)

(आध्यात्मिक सभा की बैठक की समाप्ति पर यह प्रार्थना करें)

हे ईश्वर! मेरे ईश्वर! अपनी एकता के अदृश्य साम्राज्य से तू देखता है कि तुझमें सम्पूर्ण आस्था, तेरे चिन्हों में सम्पूर्ण विश्वास के साथ और तेरी संविदा एवं इच्छा के प्रति अडिग होकर, तेरे प्रति आकर्षित होकर, तेरे प्रेम की अग्नि से प्रदीप्त, तेरे धर्म के प्रति निष्ठावान बन हम इस आध्यात्मिक सभा में एकत्रित हुए। हम तेरी बगिया के सेवक हैं, तेरे धर्म के प्रसारक, तेरे मुखारबिंदु के प्रति समर्पित साधक, तेरे प्रियजनों के प्रति विनम्र, तेरे द्वार पर विनत हैं और तुझसे याचना करते हैं कि अपने प्रियजनों की सेवा करने का अवसर दे, शक्ति दे कि हम तेरी आराधना कर सकें, तेरे प्रति समर्पित रह सकें और तुझसे संभाषण कर सकें।

हे हमारे स्वामी! हम निर्बल हैं, तू सबल है; हम प्राणविहीन हैं, तू प्राणाधार चेतना है; हम अभावों से घिरे हैं, तू दाता, रक्षक, शक्तिशाली है।

हे हमारे स्वामी! अपने कृपालु मुखारविन्द की ओर हमें उन्मुख कर, अपनी असीम कृपा से, अपने दिव्य सहभोज में हमें सम्मिलित कर, अपने सर्वोपरि देवदूतों द्वारा हमें सहायता दे और आभालोक के साम्राज्य के पावन जनों के द्वारा हमारी सेवा को स्वीकार कर।

सत्य ही, तू उदार और कृपालु है; अक्षय सम्पदाओं का स्वामी है। सत्य ही, तू क्षमाशील और करुणामय है।

- अब्दुल-बहा

(20)

हे ईश्वर, मेरे ईश्वर! हम तेरे वे ही सेवक हैं जो भक्तिपूर्वक तेरे पावन मुखड़े की ओर उन्मुख हुए हैं, जिन्होंने इस महिमामय दिवस में तेरे अतिरिक्त अन्य सभी कुछ से स्वयं को अनासक्त कर लिया है। हम इस आध्यात्मिक सभा में अपने विचारों और चिन्तन में एक बनकर उपस्थित हुए हैं और मानवजाति के बीच तेरी वाणी का यशोगान करने के लिये हमारे उद्देश्य एक हो गये हैं। हे ईश्वर, हमारे ईश्वर! हमें अपने दिव्य मार्गदर्शन के प्रतीक चिन्ह, मनुष्यों के मध्य अपने उदात्त धर्म की ध्वजाएँ और अपनी सशक्त संविदा के सेवक बना, हे हमारे ईश्वर ! हमें अपने आभा लोक में अपनी दिव्य एकता के मूर्त रूप और सभी देशों-प्रदेशों पर जगमगाने वाले सितारे बना। प्रभो! हमें अपनी अद्‌भुत कृपा की विराट तरंगों से प्रवाहित होने वाली सरितायें, अपनी दिव्य धर्म के तरूवर पर फलने वाले सुफल और स्वर्गिक उपवन में अपनी कृपा के समीर से झूमने वाले तरूवर बना। हे ईश्वर! हमारी आत्माओं को अपनी दिव्य एकता के छन्दों पर आश्रित कर दे, हमारे हृदयों को अपनी अनुकम्पा की बरखा से उल्लसित कर दे, जिससे कि हम समुद्र की तरंगों के समान एक दूसरे में समा जायें, कि हमारे चिन्तन, हमारे विचार, हमारी अनुभूतियाँ एक ही सत्य का रूप ले लें, जो सम्पूर्ण विश्व में एकता की भावना को मूर्त करे। तू कृपालु, परम सम्पदामय, वरदाता, सर्वसामर्थ्यवान, दयामय, करूणामय है।

- अब्दुल-बहा

आरोग्य

आरोग्य के लिये जिन प्रार्थनाओं को प्रकट किया गया है, वे भौतिक एवं आध्यात्मिक, दोनों प्रकार से निरोग रहने के लिये हैं। इसलिये, आत्मा और शरीर दोनों के स्वास्थ्य लाभ के लिये ये प्राथनाएँ की जानी चाहिये।)

-अब्दुल बहा

(21)

तेरा नाम ही मेरा आरोग्य है, हे मेरे ईश्वर, और तेरा स्मरण ही मेरी औषधि है। तेरा सामीप्य ही मेरी आशा, और तेरा प्रेम ही मेरा सहचर है। मुझ पर तेरी दया ही मेरी निरोगता और इहलोक तथा परलोक दोनों में मेरी सहायक है। सत्य हीः, तू ही है सर्वउदार, सर्वज्ञ एवं सर्वप्रज्ञ।

- बहाउल्लाह

(22)

हे स्वामी मेरे ईश्वर! स्तुति हो तेरी! मैं तुझसे याचना करता हूँ तेरे परम महान नाम के द्वारा, जिसके माध्यम से तूने अपने सेवकों को सक्रिय बनाया है, और अपने नगरों का निर्माण किया है; तेरे परम श्रेष्ठ उपाधियों से और तेरे परम महान गुणों के द्वारा मैं तुझसे याचना करता हूँ कि अपने जनों की सहायता कर, ताकि वे तेरी बहुमुखी उदारताओं की ओर प्रवृत्त हों और अपने मुखड़ों को तेरी प्रज्ञा के वितान की ओर कर लें। उन रोगों को दूर कर जिन्होंने मानवात्माओं को प्रत्येक दिशा से आक्रांत किया है और सब को अपनी छत्रछाया देने वाले तेरे नाम के आश्रय में स्थित स्वर्ग की ओर देखने से रोका है, जिसे तूने धरती और आकाश में विद्यमान सभी के लिये नामों का सम्राट होने का विधान किया है। जो जैसा चाहे वैसा करने में समर्थ है। तेरे हाथों में सभी नामों का साम्राज्य है। तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है, सामर्थ्यशाली, प्रज्ञावान।

हे मेरे स्वामी, मैं एक दीन-हीन प्राणी हूँ, मैं तेरी सम्दाओं के छोर को थामे हुये हूँ। मैं अत्यधिक रूग्ण हूँ, मैं तेरी उपचार की डोर को दृढ़ता से थामे हुए हूँ। मुझे उन समस्याओं से मुक्ति दे, जिन्होंने मुझे घेर रखा है। अपनी कृपालुता और दया के जल से मुझे पूर्णतया निर्मल कर दे, अपनी क्षमाशीलता और उदारता के द्वारा मुझे स्वास्थवर्द्धता और दया के

परिधान से सुसज्जित कर दे। मेरे नेत्रों को स्वयं पर स्थिर कर दे और स्वयं के अतिरिक्त अन्य सभी के प्रति आसक्ति से मुझे मुक्त कर दे। तू जो चाहता है उसको करने में, और जो तुझे प्रिय है, उसको पूरा करने में, मेरी सहायता कर।

तू सत्य ही, इस जीवन का और आगामी जीवन का स्वामी है, तू सत्य ही, सदा-क्षमाशील, परम दयावान है।

-बहाउल्लाह

(23)

हे ईश्वर, मेरे ईश्वर! मैं तुझसे तेरी आरोग्यदायी शक्ति के महासिंधु के नाम पर और तेरे अनुग्रह के दिवानक्षत्र के प्रभापुंजों के नाम पर और तेरे नाम पर जिसके द्वारा तूने अपने सेवकों को अपने अधीन किया है और तेरे परमोच्च शब्द की सर्वव्यापी शक्ति के नाम पर, और तेरी परम उदात्त लेखनी की शक्ति के नाम पर और तेरी दया के नाम पर जो आकाश और धरती पर विद्यमान सब की सृष्टि से पहले उद्भूत हुई थी, तुझसे याचना करता हूँ कि मुझे अपनी कृपा के जल से समस्त व्याधियों, रोगों, निर्बलता और दुर्बलता से मुक्त कर दे।

तू देखता है, हे मेरे स्वामी, अपने इस आराधक को तेरी अनुकम्पा के द्वार पर राह देखते हुए और तेरी उदारता की डोरी थाम आस लगाये हुए। मैं अनुनय करता हूँ तुझसे कि उसे उन वस्तुओं से वंचित न कर जिन्हें वह तेरी कृपा के महासिंधु और तेरी स्निग्ध कृपालुता के दिवानक्षत्र से मांगता है।

तू जैसा चाहे वैसा करने में सक्षम है, तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है, सदा क्षमाशील, परम उदार।

- बहाउल्लाह

एकता

(24)

हे मेरे ईश्वर! हे मेरे ईश्वर! अपने सेवकों के हृदयों को एक कर दे और उन पर अपना महान उद्देश्य प्रकट कर। जिससे वे तेरे आदेशों का अनुपालन करें और तेरे नियम पर अटल रहें। हे ईश्वर! तू उनके प्रयासों में उनकी सहायता कर और उन्हें अपनी सेवा करने की शक्ति प्रदान कर। हे ईश्वर! उन्हें उनके ऊपर न छोड़; उनके पगों का, अपने ज्ञान के प्रकाश द्वारा मार्गदर्शन कर और उनके हृदयों को अपने प्रेम से आनंदित कर दे। सत्य ही, तू उनका सहायक और उनका स्वामी है।

- बहाउल्लाह

(25)

हे दयालु ईश्वर! तूने समस्त मानवजाति को एक ही मूल कुटुम्ब से उत्पन्न किया है। तूने ऐसा निश्चित किया है कि सभी मनुष्य एक ही कुटुम्बी हैं। तेरे पवित्र सान्निध्य में सब तेरे ही सेवक हैं और समस्त मानवजाति तेरी ही छत्रछाया में आश्रित है। सब तेरी अक्षय सम्पदाओं के सहभोज में एकत्रित हैं। सब तेरे मंगल विधान की ज्योति से प्रकाशित हैं।

हे ईश्वर्! तू सब पर कृपालु है, तूने सबको आजीविका दी है, सबको आश्रय दिया है, सबको जीवन प्रदान किया है; तूने सबको प्रतिभा और गुणों से सम्पन्न किया है; सब तेरी कृपा के महासागर में निमग्न हैं। हे तू दयालु स्वामी ! सबको एक कर दे। धर्मों को सहमत होने दे, राष्ट्रों को एक राष्ट्र बना दे, ताकि वे सब परस्पर एक-दूसरे को, एक ही परिवार के सदस्यों की भाँति देखें और सम्पूर्ण वसुधा को एक ही कुटुम्ब मानें। वे सब मिलकर सद्भाव के वातावरण में रहें। हे ईश्वर! मानवजाति की एकता का ध्वजा उन्नत कर दे। हे ईश्वर! परम् महान शांति स्थापित कर। सबके हृदयों को मिलाकर एक कर दे। हे तू दयालु पिता, हे ईश्वर, अपनी स्नेह-सुरभि से हमारे हृदयों को उल्लास से भर दे। अपने मार्गदर्शन के प्रकाश द्वारा हमारे नेत्रों को प्रदीप्त कर। अपने शब्दों के स्वरमाधुर्य से हमारे कानों को झंकृत कर दे और अपने मंगल विधान के संरक्षण के दुर्ग में आश्रय प्रदान कर। तू सर्वसमर्थ, सर्वशक्तिमान्, क्षमावंत, मानवजाति के दोषों को अनदेखा करने वाला है।

- अब्दुल-बहा

(26)

ईश्वर करे, कि एकता की ज्योति सारी पृथ्वी पर छा जाये और "साम्राज्य ईश्वर का है" यह मुहर इसके समस्त जनों के ललाट पर अंकित हो जाये।

- बहाउल्लाह

(27)

स्तुति हो तेरी, हे ईश्वर कि तूने मानवजाति के प्रति अपने प्रेम को प्रकट रूप दिया है। हे तू जो हमारा जीवन और हमारी ज्योति है, अपने पथ में अपने सेवकों का मार्गदर्शन कर और हमें तुझमें समृद्ध बना और तेरे अतिरिक्त अन्य सभी से हमें मुक्त रख।

हे ईश्वर! हमें अपनी एकता की शिक्षा दे और अपनी एकता की हमसे अनुभूति करा जिससे कि हम तेरे अतिरिक्त अन्य कुछ न देखें, तू दयालु और उदारता का स्वामी है।

हे ईश्वर! अपने प्रियजनों के हृदयों में अपने प्रेम की ज्वाला प्रज्वलित कर, जिससे कि वे तेरे अतिरिक्त, अन्य सभी विचारों को भस्मसात कर दें।

हे ईश्वर! हमारे सम्मुख अपनी परमोच्च अनन्तता को प्रकट कर, कि तू सदैव रहा है और सदा रहेगा और तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है। सत्य ही तुझ में हम विश्रांति और शक्ति पायेंगे।

- बहाउल्लाह

(28)

हे तू, जो सम्राटों का सम्राट है! मैं साक्षी देता हूँ कि तू ही समस्त सृष्टि का स्वामी है और समस्त दृश्य-अदृश्य प्राणियों का शिक्षक है। मैं साक्षी देता हूँ कि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड तेरी शक्ति के अधीन है और पृथ्वी की समस्त शक्तियाँ भी तुझे प्रकंपित नहीं कर सकतीं और न ही तेरे उद्देश्य को पूरा करने में सम्राटों और राष्ट्रों की शक्ति तुझे रोक सकती है। मैं स्वीकार करता हूँ कि सम्पूर्ण विश्व को नवजीवन देने और लोगों के बीच एकता की स्थापना करने तथा उनकी मुक्ति के अतिरिक्त तेरी कोई और इच्छा नहीं है।

- बहाउल्लाह

कोष

ईश्वर के समस्त मित्रों को....यथासंभव दान देना चाहिये, उनके द्वारा समर्पित राशि, चाहे कितनी भी अल्प क्यों न हो। ईश्वर किसी भी आत्मा पर उसकी क्षमता से अधिक भार नहीं डालता। ऐसे दान सभी केन्द्रों एवं समस्त अनुयायियों से आने चाहिये.."हे ईश्वर के मित्रों ! तुम आश्वस्त रहो कि इन योगदानों के बदले तुम्हारी खेती-बाड़ी, तुम्हारे उद्योग और व्यापार को सुंदर उपहारों और दानों का कई गुना आशीर्वाद प्राप्त होगा। निःसंदेह जो सद्कर्म करता है, पुरस्कार में वह दस गुना प्राप्त करेगा। इसमें कोई संदेह नहीं कि जीवंत स्वामी उन्हें अत्यधिक सम्पुष्टि प्रदान करता है, जो उसके पथ में अपनी सम्पदा व्यय करते हैं।"

- अब्दुल-बहा

(29)

हे ईश्वर, मेरे ईश्वर! अपने सच्चे प्रेमियों के मस्तक को तेजवान बना, और निश्चित विजय के देवदूतों के समूहों से उन्हें सहारा दे। अपने सीधे पथ पर उनके पगों को अडिग बना दे, और अपनी पुरातन उदारता से उनके समक्ष अपने आशीषों के द्वार खोल दे, क्योंकि जो कुछ तूने उन्हें प्रदान किया है, वे तेरे मार्ग में व्यय करते हैं, तेरे धर्म की रक्षा करते हैं, तेरे स्मरण में विश्वास रखते हैं, तेरे प्रेम के निमित्त अपने हृदयों को अर्पित करते हैं, और जो कुछ उनके पास है, उसे वे तेरे सौंदर्य की आराधना और तुझे प्रसन्न करने की विधियों की खोज में देने से इन्कार नहीं करते।

हे मेरे स्वामी! उनके लिए एक प्रचुर अंश, एक नियत पुरस्कार और निश्चित पारितोषिक का विधान कर।

वस्तुतः तू ही पालनहार, सहायक, अतिशय दाता, उदार, सदा-प्रदाता है।

- अब्दुल-बहा

दृढ़ता

(30)

महिमावंत हो तेरा नाम, हे स्वामी, मेरे ईश्वर! तेरी शक्ति के द्वारा, जिसने समस्त सृष्टि को आवृत्त किया है, और तेरी उस स्वामित्व के नाम पर, जो सम्पूर्ण सृष्टि से परे है, और तेरे विवेक में लुप्त उस शब्द के नाम पर, जिसके द्वारा तूने आकाश और धरती की सृष्टि की है, मैं याचना करता हूँ, ऐसा वर दे कि तेरे लिये अपने प्रेम में हम दृढ़ रह सकें, तेरी प्रसन्नता के अनुकूल आज्ञा पालन में अडिग बनें, तेरे मुखड़े को निरंतर नेत्रों से निहार सकें और तेरी महिमा की स्तुति कर सकें। हे मेरे ईश्वर ! चहुँओर तेरे प्राणियों के मध्य तेरे नाम के प्रकाश फैलाने और तेरे साम्राज्य में तेरे धर्म की रक्षा करने की हमें शक्ति दे। सदा रहा है तेरा स्वतंत्र अस्तित्व और तू ऐसा ही रहेगा सदासर्वदा, तुम्हारे प्राणी तुम्हारा स्मरण करें, न करें! तुझको ही मैने अपनी पूरी आस्था समर्पित की है, तेरी ओर ही मैं उन्मुख हुआ हूँ, तेरे प्रेममय विधान की डोर को मैंने दृढ़ता से थाम रखा है, और तेरी कृपा की छत्रछाया की ओर मैंने अपने पाँव बढ़ाये हैं। मुझे अपने द्वार के बाहर रख कर निराश मत कर, हे मेरे परमेश्वर! अपनी दया मुझसे दूर मत रख, क्योंकि मैं केवल तेरी ही कामना करता हूँ। तेरे अतिरिक्त अन्य कोई परमेश्वर नहीं है, सदा क्षमाशील, सर्वकृपालु। स्तुति हो तेरी हे तू, जो उनका प्रियतम है, जिन्होंने तुझे जाना है।

- बहाउल्लाह

(31)

हे तू, जिसकी निकटता मेरी कामना है, जिसका सान्निध्य मेरी आशा है, जिसका स्मरण मेरी आकांक्षा है, जिसकी महिमा का दरबार मेरी मंजिल है, जिसका निवास ही मेरा लक्ष्य है, जिसका नाम मेरा रोग-निवारक है, जिसका प्रेम मेरे हृदय की शक्ति है, जिसकी सेवा मेरी सर्वोच्च अभिलाषा है; मैं तेरे नाम के द्वारा जिसके द्वारा तूने, तुझे पहचानने वालों को अपने ज्ञान की परम उदात्त ऊँचाइयों तक उड़ने में समर्थ बनाया है, और भक्तिपूर्वक तेरी आराधना करने वालों को अपने अनुग्रह की परिधि में पहुँचने की शक्ति दी है, तुझसे याचना

करता हूँ कि मुझे तेरे मुखारविंद की ओर उन्मुख होने में, तुझ पर अपनी दृष्टि स्थिर रखने में, और तेरी महिमा की चर्चा करने में सहायता दे।

मैं वह हूँ, हे मेरे नाथ! जिसने तेरे अतिरिक्त सब कुछ भुला दिया है और जो तेरी कृपा के दिवास्रोत की ओर उन्मुख हो गया है, जिसने तेरे दरबार की निकटता पाने की आशा में, तेरे अतिरिक्त अन्य सब का परित्याग कर दिया है। देख मुझे उस आसन की ओर निहारते हुए जो तेरे मुखारबिंद के प्रकाश की भव्यता से प्रकाशमान है। इसलिये, हमारे प्रियतम, मुझ तक वह भेज जो मुझे तेरे धर्म में दृढ़ रहने के योग्य बनाये, जिससे नास्तिकों के संदेह, मुझे तेरी ओर उन्मुख होने में बाधक न बन सकें।

वस्तुतः, तू ही शक्ति का ईश्वर, संकटों में सहायक, सर्वप्रतापशाली, सामर्थ्यशाली है!

- बहाउल्लाह

(32)

हे ईश्वर, मेरे ईश्वर! मैं पश्चाताप में तेरी ओर मुड़ा हूँ। वस्तुतः तू ही क्षमादाता, करुणामय है। हे ईश्वर, मेरे ईश्वर! मैं तेरे पास लौट आया हूँ और सत्य ही, तू ही सदा क्षमाशील, कृपालु है।

हे ईश्वर, मेरे ईश्वर! मैं तेरी कृपा की डोर से बंध गया हूँ। तेरे ही पास आकाश और धरती की सभी सम्पदाओं का अक्षय भंडार है।

हे ईश्वर, मेरे ईश्वर! मैंने तेरी ओर आने की शीघ्रता की है और सत्य ही, तू ही क्षमा करने वाला और कृपा का स्वामी है।

हे ईश्वर, मेरे ईश्वर! मैं तेरी कृपा की दिव्य मदिरा का प्यासा हूँ। और सत्य ही तू दाता, कृपालु, सर्वसामर्थ्यवान, सर्वशक्तिशाली है।

हे ईश्वर, मेरे ईश्वर! मैं साक्षी देता हूँ कि तूने अपना धर्म प्रकट किया है, अपना वचन पूरा किया है और अपनी कृपा के आकाश से उसे अवतरित किया है, जिसने तेरे कृपापात्रों के हृदय तेरी ओर खींच लिये हैं। सौभाग्य होगा उसका जिसने तेरी मजबूत डोर को दृढ़ता से थाम लिया है और तेरे देदीप्यमान परिधान की छोर से जो दृढ़ता से बंधा है।

हे समस्त अस्तित्व के स्वामी, गोचर और अगोचर के सम्राट!, मैं तेरी शक्ति, तेरी भव्यता और तेरी सम्प्रभुता के नाम पर याचना करता हूँ कि अपनी महिमा की लेखनी द्वारा मेरा नाम अपने उन श्रद्धालु भक्तों की श्रेणी में अंकित कर दे, जिन्हें पापियों के लम्बे लेख तेरे मुखारबिंद के प्रकाश की ओर उन्मुख होने से रोक नहीं पाये हैं। हे प्रार्थना सुनने वाले और उसका प्रतिउत्तर देने वाले ईश्वर !

- बहाउल्लाह

(33)

स्तुति हो तेरी, हे मेरे ईश्वर। मेरे परम् प्रियतम! अपने धर्म में मुझे दृढ़ बना और वर दे कि मैं उनमें गिना जाऊँ जिन्होंने तेरी संविदा का उल्लंघन नहीं किया है और न ही अपनी व्यर्थ कल्पना के देवों का अनुसरण किया है। मुझे समर्थ बना कि तेरे सान्निध्य में मैं सत्यतः का दामन थाम सकूँ, अपनी दया का दान दे और मुझे अपने उन सेवकों में शामिल होने दे जो भय नहीं करते, न ही चिन्तातुर होते हैं। मुझे मेरे हाल पर न छोड़, हे ईश्वर, न ही मुझे उसे पहचानने से वंचित कर जो तेरा ही प्रतिरूप है और न ही मुझे उनमें गिन जो तुझसे विमुख हो चुके हैं। हे मेरे ईश्वर! मुझे उनमें गिन जिन्होंने तेरे सौन्दर्य को पहचाना है, जिन्होंने अपना सर्वस्व न्योछावर करने का सौभाग्य प्राप्त किया है और जो अपने समर्पण का एक पल भी सम्पूर्ण सृष्टि के साम्राज्य के बदले देना पसंद नहीं करेंगे। हे ईश्वर, दया कर, विशेषरूप से तब जब तेरी धरती के अधिकांश लोग राह भटक गये हैं, घातक दोषों से भर गये हैं। हे मेरे ईश्वर, मुझे वह दे जो तेरी दृष्टि में शोभनीय है। तू, सत्य ही, सर्वशक्तिशाली, उदार, करुणामय और सदा क्षमाशील है।

वर दे, हे मेरे ईश्वर! कि मैं उनमें न गिना जाऊँ जो कान रहते सुन नहीं पाते, आँख रहते देख नहीं पाते, जिह्वा होते हुए भी मूक बने बैठे हैं और जिनके हृदय कुछ भी समझने में विफल हो गये हैं। हे ईश्वर, मुझे अज्ञानता की अग्नि और स्वार्थी इच्छाओं से मुक्त कर, अपनी सर्वोच्च दया की परिधि में रहने दे और मुझे वह दे जो तूने चुने हुये जनों के लिये निर्धारित किया है। तू जैसा चाहे करने में समर्थ है। सत्य ही तू, संकटमोचन, स्वयंजीवी है।

- बाब

(34)

तू स्तुत्य और महिमावंत है, हे ईश्वर!

तेरी निकटता प्राप्त करने का दिवस शीघ्र आये, ऐसा वर दे। अपने प्रेम और प्रसन्नता की शक्ति से हमारे हृदय उल्लसित कर दे और हम स्वेच्छा से तेरी इच्छा और आदेश के प्रति समर्पित हो सकें, ऐसी दृढ़ता प्रदान कर। वस्तुतः तेरे ज्ञान की परिधि में वह सब हैं, जिनका सृजन तूने किया है और जिनका सृजन तू करेगा। तेरी शक्ति उन सबकी समझ से परे है, जिनको तूने अस्तित्व दिया है और जिन्हें तू अस्तित्व देगा। तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है, जिसकी आराधना मेरी कामना है। तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है, जो स्तुत्य है। तेरी सुप्रसन्नता के अतिरिक्त मुझे कोई भी प्रिय नहीं है।

वस्तुतः; तू ही सर्वोपरि शासक, परम् सत्य, संकट में सहायक, स्वःनिर्भर है।

- बाब

(35)

हे स्वामी, मेरे ईश्वर! अपने प्रियजनों को अपने धर्म में अडिग रहने, अपने पथ पर चलने, ईश्वर के धर्म में दृढ़ रहने में सहायता दे। उन्हें अपनी कृपा प्रदान कर कि वे अहंकार और वासना के आघातों को सह सकें और तेरे दिव्य मार्गदर्शन का अनुसरण कर सकें। तू शक्तिशाली, कृपालु, स्व:निर्भर, उदात्त, करुणामय, सर्वसमर्थ, सर्वदयालु है।

- अब्दुल-बहा

दिवंगतों के लिये

दिवंगतों के लिये इस प्रार्थना का पाठ केवल वैसे मृतकों के लिये करें जिनकी उम्र पंद्रह वर्ष से अधिक है। ”यह एकमात्र प्रार्थना है, जो समूह में कही जाती है। यह प्रार्थना एक अनुयायी द्वारा कही जाती है जबकि अन्य सभी जो उस स्थान पर उपस्थित हैं, खड़े रहते हैं। इस प्रार्थना का पाठ करते समय किब्ले की ओर मुँह करना आवश्यक नहीं है।“

- बहाउल्लाह

(36)

हे मेरे ईश्वर! ये तेरा सेवक है और तेरे सेवक का पुत्र है जिसने तुझ पर और तेरे चिन्हों में आस्था रखी है और जो तेरी ओर उन्मुख हुआ है तथा जो तेरे अतिरिक्त अन्य सब कुछ से अनासक्त हो चुका है। तू सत्य ही उन सब से, जो दया करते हैं, परम दयालु हैं।

हे तू, जो मनुष्यों के पापों को क्षमा करता है और उनके दोषों पर पर्दा डालता है, इसके साथ वैसा ही व्यवहार कर, जैसा कि तेरी उदारता के आकाश और तेरी कृपा के महासागर को शोभा देता है। अपनी ज्ञानातीत दया की परिधि में, जो धरती और आकाश की स्थापना से पहले भी विद्यमान थी, इसे प्रवेश दे। तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है, तू है सदा क्षमाशील; परम उदार !

(इसके बाद महानतम नाम (अल्लाह-हो-अब्हा) अभिवादन का एक बार उच्चारण करने के बाद 19-19 बार दिये गये छंदों का निम्न प्रकार पाठ करें)

अल्लाह-हो-अब्हा (एक बार)

हम सब सत्य ही, ईश्वर की आराधना करते हैं।

(19 बार)

अल्लाह-हो-अब्हा (एक बार)

हम सब सत्य ही, ईश्वर के सम्मुख नमन करते हैं।

(19 बार)

अल्लाह-हो-अब्हा (एक बार)

हम सब सत्य ही, ईश्वर के प्रति आस्थावान हैं।

(19 बार)

अल्लाह-हो-अब्हा (एक बार)

हम सब सत्य ही, ईश्वर की स्तुति करते हैं।

(19 बार)

अल्लाह-हो-अब्हा (एक बार)

हम सब सत्य ही, ईश्वर को धन्यवाद देते हैं।

(19 बार)

अल्लाह-हो-अब्हा (एक बार)

हम सब सत्य ही, ईश्वर के प्रति धैर्यवान हैं ।

(19 बार)

(यदि दिवंगत आत्मा नारी है, तो प्रार्थना करने वाला कहे ”यह तेरी सेविका और तेरी सेविका की पुत्री है“ इत्यादि!)

- बहाउल्लाह

(37)

महिमा हो तेरी, हे ईश्वर, मेरे ईश्वर! अपनी अनन्त प्रभुसत्ता की शक्ति के सहारे जिसे तूने ऊपर उठाया है उसे गिरने न दे और जिसे तूने अपनी अनन्तता के मंडप तले प्रवेश के योग्य बनाया है उसे अपने से दूर न रख। हे मेरे ईश्वर! क्या तू उसे अपने से दूर रखेगा, जिसे तूने अपनी प्रभुता की छाया दी है? हे मेरी आकांक्षा! क्या तू उसे अपने से दूर कर देगा जिसके लिये तू आश्रय रहा है। जिसे तूने ऊपर उठाया है उसे तू नीचे नहीं गिरा सकता, जो तुझे याद करता रहा, क्या तू उसे भुला सकता है?

महिमा हो, अति महिमा हो तेरी! तू वह है जो अनन्तकाल से सम्पूर्ण सृष्टि का सम्राट रहा है और रहा है इसका गतिदाता और तू ही सदा रहेगा सभी सृजित वस्तुओं का स्वामी तथा नियंता। तू महिमावंत है, हे मेरे ईश्वर! यदि तू अपने सेवकों पर दया करना छोड़ देगा तो

कौन उन पर दया करेगा? यदि तू अपने प्रियजनों को सहायता देना बंद कर देगा तो कौन है दूसरा जो सहायता दे सकेगा?

महिमा हो, अति महिमा हो तेरी। तू सत्य से अभीष्ट है और सत्य ही, हम सभी तेरी आराधना करते हैं, तू अपने न्याय में प्रकट है, और सत्य ही हम सब इसके साक्षी है, और सत्य ही, तू अपनी अनुकम्पाओं में प्रिय है। तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं, संकटों में सहायक, स्वयंजीवी।

- बहाउल्लाह

(38)

हे ईश्वर! मेरे ईश्वर! निश्चय ही तेरा यह सेवक तेरी दिव्य सर्वोच्चता के सम्मुख विनीत, तेरी एकता के द्वार पर विनत है; इसने तुझमें और तेरे छंदों में विश्वास किया, तेरे पावन शब्दों का साक्ष्य दिया है, तेरे प्रेम के प्रकाश से इसका पथ आलोकित हुआ है, तेरे ज्ञान के महासागर की अतल गहराइयों में जो खोया रहा है, जो तेरे पवन-झकोरों की ओर बढ़ा है, जिसने तुझ पर भरोसा किया है, जो तेरी ओर उन्मुख हुआ है, जिसने तेरी आराधना की और जो तेरी क्षमा के लिये आश्वस्त है।

इसने अपना भौतिक देहरूपी चोला छोड़ दिया है और इस चाह के साथ कि तुझसे मिलन होगा, अमरता के साम्राज्य की ओर प्रयाण किया है।

ईश्वर! इसे महिमामंडित कर, अपनी सर्वोच्च दया के मंडप तले इसे आश्रय दे, अपने महिमाशाली स्वर्ग में प्रवेश करा और अपनी गुलाब वाटिका में इसके अस्तित्व को सुनिश्चित कर, ताकि रहस्यों के लोक में यह प्रकाश-सिंधु में निमग्न हो जाये।

सत्य ही तू उदार, शक्तिशाली, दाता और क्षमादाता है।

- अब्दुल-बहा

(39)

हे मेरे ईश्वर! हे तू पापों को क्षमा करने वाले, उपहारों के प्रदाता, व्याधियों को दूर करने वाले!

सत्य ही, मैं तुझसे याचना करता हूँ कि तू उनके पापों को क्षमा कर दे जो इस भौतिक परिधान को त्याग दिया है और आध्यात्मिक लोक में आरोहण कर गये हैं।

हे मेरे स्वामी! उन्हें सीमा के उल्लंघनों से पवित्र कर दे, उनके दुखों को दूर कर दे, और उनके अंधकार को प्रकाश में परिवर्तित कर दे। उन्हें आनन्द उद्यान में प्रवेश करा, परम पावन जल से उन्हें स्वच्छ कर दे, और उन्हें अनुमति दे कि वे उच्चतम पर्वत पर तेरी भव्यताओं के दर्शन कर सकें।

- अब्दुल-बहा

परिवार

(40)

पति के लिये

हे मेरे ईश्वर! मेरे ईश्वर! तेरी यह सेविका, अपना भरोसा तुझ पर रखकर, तेरी ओर उन्मुख हो कर, तुझसे याचना करती हुई तुझे पुकार रही है कि अपनी दिव्य उदारता उस पर बरसा दे, उसके समकक्ष अपने आध्यात्मिक रहस्यों को प्रकट कर दे और उस पर अपने ईश्वरत्व का प्रकाश डाल।

हे मेरे स्वामी! मेरे पति की आँखों को देखने की शक्ति प्रदान कर। अपने ज्ञान के प्रकाश से तू उसके हृदय को आनन्दित कर दे, उसके मन को अपने देदीप्यमान सौन्दर्य की ओर आकर्षित कर ले, अपनी सुस्पष्ट भव्यता को उस पर प्रकट करके उसकी चेतना को आनंदित कर दे।

हे मेरे स्वामी! उसकी आँखों से परदा हटा दे, उस पर अपनी प्रचुर उदारताओं की वर्षा कर, अपने प्रेम की मदिरा से उसे मदोन्मत कर दे, उसे अपने देवदूतों में से एक बना दे जो चलते तो इस धरा पर हैं किंतु उनकी आत्माएँ परमोच्च आकाश में उड़ान भरती हैं। उसे तेरे जनो के मध्य तेरी प्रज्ञा के प्रकाश से चमकता हुआ देदीप्यमान दीपक बना दे।

सत्य ही तू अनमोल, सदा प्रदाता, मुक्तहस्त है।

- अब्दुल-बहा

(41)

माता-पिता के लिये

हे स्वामी! इस सर्वमहान धर्मकाल में माता-पिता की ओर से संतानों द्वारा की गई प्रार्थना को तू स्वीकार करता हैं। यह इस धर्मकाल के विशेष अनन्त आशीषों में एक है। अतः, हे कृपालु स्वामी! अपनी एकमेवता की देहरी पर अपने इस सेवक की विनती स्वीकार कर और अपनी अनुकम्पा के महासागर में इसके पिता को निमग्न कर दे, क्योंकि यह पुत्र तेरी सेवा करने के लिये उठ खड़ा हुआ है और तेरे प्रेम के पथ पर प्रति क्षण प्रयत्नशील है। सत्य ही, तू दाता, क्षमादाता और कृपालु है।

- अब्दुल-बहा

(42)

देखता है तू, हे स्वामी ! तेरी अनुकम्पा और कृपा के लिये आकाश की ओर फैले मेरे याचना भरे हाथों को। वर दे कि ये तेरी उदारता और कृपा से परिपूर्ण सहायता के बहुमूल्य रत्नों से भर जायें। मुझे और मेरे माता-पिता को क्षमादान दे और मैंने तेरे आशीष और तेरी दिव्य उदारता के महासागर से जो कुछ भी पाना चाहा है, उनसे इन्हें भर दे। मेरे हृदय के प्रिय ईश्वर, अपनी राह में अर्पित मेरे सभी कर्म स्वीकार कर। सत्य ही, तू सर्वशक्तिशाली, सर्वोच्च, अतुलनीय, एकमेव है। सत्य ही, तू एकाकी, क्षमादाता, करूणामय है।

- बहाउल्लाह

(43)

महिमा हो तेरी, हे ईश्वर, मेरे स्वामी! मैं तुझसे याचना करता हूँ कि क्षमा कर दे मुझे और उन्हें, जो तेरे धर्म के समर्थक हैं। वस्तुतः, तू सर्वसमर्थ स्वामी, क्षमादाता, सर्वाधिक उदार है। अपने वैसे सेवकों को, जो ज्ञानविहीन हैं, अपने धर्म को स्वीकार करने के योग्य बना, क्योंकि एक बार यदि वे तेरे बारे में जान जायेंगे तो वे न्याय दिवस की सत्यता के साक्षी बनेंगे और तेरी कृपा के प्रकटीकरण का विरोध नहीं करेंगे। उनके लिये अपनी दया के चिन्ह भेज और वे जहाँ कहीं भी निवास करें उन्हें अपनी उदारता का अंशदान दे, जिसका विधान तूने उनके लिये किया है जो तेरे सेवकों के बीच विशुद्ध हृदय हैं। तू सत्य ही सर्वोपरि सम्राट, सर्वकृपालु, परम करुणामय है। अपनी कृपा और अपने आशीषों की बूंदें बरसने दे वहाँ जिनके निवासियों ने तेरे धर्म को अपनाया है। वस्तुतः, क्षमादान देने में तू सर्वोपरि है। यदि तेरी कृपा उन तक नहीं पहुँच पायेगी तो तेरे इस दिवस में वे तेरे भक्तों में कैसे गिने जायेंगे। मुझे आशीष दे, हे मेरे ईश्वर! और उन्हें भी जो इस पूर्व निर्धारित दिवस में तेरे चिन्हों पर विश्वास करेंगे! जो अपने हृदयों में तेरा प्रेम धारण करते हैं, ऐसा प्रेम जिसे तूने ही उन्हें दिया है, सत्य ही, तू न्याय का स्वामी, सर्वोच्च है!

- बाब

(44)

गर्भवती माताओं के लिये

हे सर्वकृपालु की सेविकाओं! बच्चों की प्रारम्भिक अवस्था से ही उन्हें प्रशिक्षित करने का उत्तरदायित्व तुम पर है और इसमें तनिक भी लापरवाही बरतने की अनुमति नहीं दी गई है।

- अब्दुल-बहा

हे ईश्वर ! मेरे स्वामी! तूने अपनी इस समर्पित सेविका पर जो अनुग्रह किया है उसके लिये मैं तेरे प्रति प्रशंसा और आभार प्रकट करती हूँ। यह तेरी दासी तेरी प्रार्थना और अभ्यर्थना करती है, क्योंकि सत्य ही तूने अपने प्रत्यक्ष साम्राज्य की ओर मार्गदर्शन किया है, इस क्षणभंगुर जगत में अपने आह्वान के योग्य बनाया है और उन चिन्हों के दर्शन कराये हैं जो समस्त पदार्थों पर तेरी विजय के प्रमाण प्रकट करते हैं।

हे स्वामी! जो मेरी कोख में है उसे मैं तुझे समर्पित करती हूँ। अपनी कृपा और उदारता से उसे अपने साम्राज्य में प्रशंसा योग्य और सौभाग्यशाली संतान बना, ताकि तेरी शिक्षाओं के अधीन वह विकास करे। वस्तुतः तू कृपालु है, निश्चय ही तू महान अनुग्रहों का स्वामी है।

- अब्दुल-बहा

परीक्षा और सहायता

(45)

हे ईश्वर, मेरे ईश्वर! अपनी कृपा और उदारता से मुझे शोक से मुक्त कर दे और अपनी सत्ता और शक्ति से मेरी वेदना को दूर कर दे। हे मेरे ईश्वर! तू देख रहा है कि मैं ऐसे समय में तेरी ओर उन्मुख हूँ जब दुःखों ने मुझे चहुँओर से घेर लिया है। तू स्वामी समस्त अस्तित्व का है, सभी दृश्य तथा अदृश्य पदार्थों पर तेरी छत्रछाया है। मैं याचना करता हूँ तुझसे, तेरे उस नाम पर, जिसके द्वारा तूने मानव-हृदय और आत्माओं को अपने अधीन किया है। मैं याचना करता हूँ तेरी दया के महासागर की उन तरंगों के नाम पर और तेरी असीम कृपालुता के दिवानक्षत्र की प्रभा के नाम पर, कि तू मेरी गिनती उनमें कर जिन्हें कोई भी वस्तु तेरी ओर उन्मुख होने से रोक नहीं सकी है। हे तू जो सभी नामों का स्वामी, आकाशों का सृजनकर्ता है। हे मेरे स्वामी तू देख रहा है जो तेरे दिवसों में मुझ पर आन पड़ा है। उसके द्वारा मैं तुझसे प्रार्थना करता हूँ जो तेरे नामों का अरुणोदय और तेरे गुणों का उद्गम स्थल है, कि मेरे लिये उसका विधान कर जो मुझे तेरी सेवा में उठ खड़े होने और तेरी महिमा की स्तुति करने के योग्य बना दे। वस्तुतः, तू ही सर्वसामर्थ्यवान, सर्वशक्तिशाली है, जो सबकी प्रार्थना सुनता है। तेरे मुखारविन्द के प्रकाश के नाम पर मैं तुझसे याचना करता हूँ कि मुझे मेरे कार्यों में सिद्धि दे, मुझे ऋण-मुक्त कर और मेरी आवश्यकताओं को पूरा कर। तू वह है, जिसकी शक्ति और जिसकी सत्ता का प्रमाण प्रत्येक जिह्वा ने दिया है, जिसकी विभूति और जिसकी प्रभुसत्ता को प्रत्येक विवेकयुक्त हृदय ने स्वीकारा है। तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं, जो सबकी सुनता है, सबका दुःखहर्ता है।

- बहाउल्लाह

(46)

ईश्वर के अतिरिक्त कठिनाइयों को दूर करने वाला क्या कोई अन्य है? कह दोः ईश्वर की स्तुति हो! वही ईश्वर है! सभी उसके सेवक हैं, तथा सभी उसके आदेश का अनुपालन करते हैं।

- बाब

(47)

हे मेरे ईश्वर! मैं तेरी शक्ति की सौगंध देता हूँ कि परीक्षाओं की घड़ी में कोई क्षति न होने दे और असावधानी के पलों में अपनी प्रेरणा से मेरे पगों को सही राह दिखा। तू ही ईश्वर है, जैसा चाहे वैसा करने में समर्थ; कोई भी तेरी इच्छा का विरोध नहीं कर सकता और न ही तेरे उद्देश्य को विफल कर सकता है।

- बाब

(48)

हे स्वामी! तू प्रत्येक वेदना का हर्ता है और प्रत्येक व्याधि को दूर करने वाला है। तू वह है जो प्रत्येक शोक को दूर करता है, प्रत्येक दास को मुक्त करता है और प्रत्येक आत्मा का उद्धारकर्ता है। हे स्वामी! अपनी दया के द्वारा मुझे मुक्ति प्रदान कर और मुझे अपने ऐसे सेवकों में गिन जिन्होंने मोक्ष पा लिया है।

- बाब

(49)

कहोः ईश्वर सर्वोपरि परिपूरक है, समस्त आसमानों एवं धरती पर ऐसा कुछ भी नहीं, जिसे वह पूरा नहीं कर सकता हो। सत्य ही, वह ज्ञाता, अवलम्बनदाता, सर्वशक्तिमान है।

- बाब

(50)

हे मेरे स्वामी, मेरे ईश्वर! विपत्ति में मेरे आश्रय! आपदा में मेरे ढ़ाल और मेरे शरणस्थल! आवश्यकता के समय मेरे आश्रय और शरण! एकाकीपन में मेरे सखा, वेदना में मेरी सांत्वना और अकेलेपन में मेरे एक स्नेहिल मित्र, मेरे दुःखों की पीड़ा हरने वाले और मेरे पापों के क्षमाकर्ता!

मैं पूरी तरह तेरी ओर उन्मुख हूँ और अपने समर्पित हृदय से, अपनी जिह्वा से तुझसे अत्यन्त विनीत भाव से याचना करता हूँ कि मेरी उस सबसे रक्षा कर जो तेरी इच्छा के

विरूद्ध हैं, तेरी दिव्य एकता के चक्र में, और मुझे उन सभी मलिनता से निर्मल कर जो तेरे कृपा वृक्ष की छांव पा सकने में बाधक है ताकि मैं निष्कलंक, निष्पाक रह सकूं।

हे स्वामी निर्बल पर, दया कर! रोगी को स्वस्थ कर और अतृप्त को तृप्त कर। उस हृदय को प्रसन्न कर जिसमें तेरे प्रेम की ज्वाला सुलगती हो, उसे अपने दिव्य प्रेम की लौ और चेतना से प्रदीप्त कर।

दिव्य एकता के वितानों को अपनी पावनता के परिधान से सुसज्जित कर और अपनी कृपादृष्टि का ताज मुझे पहना।

मेरे मुखड़े को अपनी कृपा के प्रभामंडल से उद्भासित कर और अपनी इस पावन देहरी की सेवा करने में कृपापूर्वक मेरी सहायता कर।

मेरे हृदय को अपने प्रणियों के प्रेम से सराबोर कर दे ताकि मैं तेरी दया का चिन्ह, तेरे अनुग्रह का प्रतीक और तेरे प्रियजनों में स्नेह-भावना बढ़ाने वाला बन जाऊँ, तेरे प्रति समर्पित हो तेरा ही स्मरण करूँ, अपने अहम् को भूलकर जो कुछ तेरा है उसके प्रति सदा सजग रहूँ।

हे ईश्वर, मेरे ईश्वर ! अपनी अनुग्रह और क्षमा के पवन-झकोरों को मुझ तक आने से न रोक और मुझे अपनी सहायता और कृपा के स्रोतों से वंचित न कर।

अपनी सुरक्षा के पंखों के सहारे मुझे नीड़ बनाने दे और मुझ पर अपने सर्वरक्षक नेत्र की कृपादृष्टि डाल।

मेरी जिह्वा को जड़ता से मुक्त कर कि तेरे नाम की स्तुति कर सकूँ, ताकि मेरी वाणी विराट सभाओं में उच्च स्वर में गुंजायमान हो और मेरे होठों से तेरी स्तुति का प्रबल प्रवाह बह निकले।

तू ही समस्त सत्य में, अनुकम्पामय, महिमावंत, समर्थ और सर्वशक्तिशाली है।

- अब्दुल-बहा

(51)

वह करुणामय, सर्वकृपालु है! हे ईश्वर, मेरे ईश्वर! तू मुझे देखता है, तू मुझे जानता है, तू ही मेरी शरण और मेरा आश्रय है, मैंने तेरे अतिरिक्ति किसी अन्य की न कामना की है, न करूंगा। तेरे प्रेम-पथ के सिवा मैंने अन्य किसी पथ पर न पाँव रखा है न रखूँगा। निराशा

की अंधियारी रात में मेरी आँखें, अपेक्षा और आशा से भरी हुई, तेरे असीम अनुग्रह के प्रभात की ओर लगी हैं और अरुणोदय की बेला में मेरी मुरझाई हुई आत्मा तेरे सौन्दर्य और तेरी परिपूर्णता के स्मरण से नवस्फूर्ति और शक्ति प्राप्त करती है। जिसे तेरी दया का सहारा है वह एक बूंद भी हो तो असीम महासागर बन जायेगा और जिस पर तेरी स्नेहिल कृपालुता का उमड़ता प्रवाह हो वह तुच्छ धूलकण होकर भी जगमगाता सिंतारा सा जगमगायेगा।

हे तू पावनता की चेतना! हे तू जो असीम दाता है। अपने इस दीप्त दास को अपनी सुरक्षा में शरण दे।

अस्तित्व के इस संसार में इसे शक्ति दे कि यह तेरे प्रेम में दृढ़ और अडिग रहे और वर दे कि यह पंख टूटे पंछी को स्वर्गिक वृक्ष के नीड़ में शरण और आश्रय पाये।

- अब्दुल-बहा

परीक्षाएँ और कठिनाइयाँ

(52)

हे तू जिसकी परीक्षायें उनके लिए जो तेरे निकट हैं रोग-निवारक औषधि हैं, जिसकी खड्ग उन सब की प्रबल इच्छा है जो तुझसे प्रेम करते हैं, जिसका बर्छा उन सब की परम प्रिय कामना है, जो तेरी लालसा रखते हैं, जिसका आदेश उनकी एकमात्र आशा है जिन्होंने तेरे सत्य को स्वीकार कर लिया है। मैं तेरे दिव्य माधुर्य, और तेरे मुखमण्डल की महिमा की भव्यता के माध्यम से तुझसे याचना करता हूँ कि सर्वोच्च एकांतवास से वह भेज जो हमें तेरे निकट पहुँचने के योग्य बनाये। हे मेरे ईश्वर, अपने धर्म में, मेरे पगों को दृढ़ कर दें और ज्ञान की दीप्ति से हमारे हृदयों को प्रकाशित कर दे, और अपने नामों की कांति से हमारे हृदयों को प्रदीप्त कर दे।

-बहाउल्लाह

(53)

स्तुति हो तेरी, हे मेरे ईश्वर! यदि वे दुःख न होते जो तेरे पथ में सहने पड़ते हैं तो तेरे सच्चे प्रेमी कैसे पहचाने जाते, और यदि वे संकट न होते जो तेरे प्रेम के कारण उठाने पड़ते हैं तो, तेरी चाह रखने वालों के पद कैसे प्रकट होते? तेरी सामर्थ्य मेरी साक्षी है कि जो भी तेरी आराधना करते हैं, उन सबके सहचर, उनके बहाए हुए आँसू हैं और तेरी आकांक्षा करने वालों को सांत्वना देने वाले हैं उनके मुख से निकली आहें। जो तुझसे मिलने की शीघ्रता करते हैं, उनका आहार उनके टूटे हुए दिल के टुकड़े हैं।

मुझे कितना मधुर स्वाद देती है तेरे पथ में भोगी गई मृत्यु की कटुता और कितने अनमोल हैं मेरी दृष्टि में तेरी वाणी के यशोगान के बदले लगने वाले तेरे शत्रुओं के तीर। अपने धर्म की राह में तू जो चाहे वह सब विष मुझको पीने दे। अपने प्रेम में वह सब सहने दे मुझको, जिसका तूने आदेश दिया है। तेरी महिमा की सौगंध! जो तू चाहे बस वही मेरी भी इच्छा है और प्रिय है मुझको बस वही जो तुझको प्रिय है। हर समय बस तुझमें ही मैंने अपनी सम्पूर्ण आस्था रखी है।

मैं तुझसे याचना करता हूँ, हे मेरे ईश्वर, कि तू इस धर्म के ऐसे सहायकों को उत्पन्न कर जो तेरे नाम और सम्प्रभुता के योग्य हों, ताकि वे तेरे प्राणियों के मध्य तुझे स्मरण कर

सकें और तेरी धरा पर विजय-पताका फहरा सकें। तुझे जैसा अच्छा लगे वैसा करने में तू समर्थ है। तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं, संकटों में सहायक, स्वयंजीवी।

- बहाउल्लाह

(54)

तू प्रतापशाली है, हे स्वामी, मेरे ईश्वर! अंतर्दृष्टि सम्पन्न प्रत्येक व्यक्ति तेरी सम्प्रभुता और तेरे अधिराज्य को स्वीकार करता है और प्रत्येक विवेकशील नेत्र तेरे वैभव की महानता और सामर्थ्य की बाध्यकारी शक्ति को देख पाता है ।

परीक्षाओं के प्रचंड झंझावात भी उन्हें रोक सकने में असमर्थ हैं। जो तेरी महिमा के क्षितिज को निहारते हैं, और तेरी निकटता का आनन्द पाते हैं; जिन्होंने तेरी इच्छा के प्रति स्वयं को पूरी तरह कर समर्पित कर दिया है, उन्हें तेरे सानिध्य से दूर कर पाने में या तुझ तक पहुँचने में संकटों के झंझावात भी बाधा नहीं बन सकते। ऐसा लगता है कि उनके हृदय में प्रज्वलित प्रेम के दीपक और ललक उठी है तेरी मृदुलता की ज्योति उनके वक्ष में है। विपदायें भी उन्हें तेरे धर्म से विमुख करने में असमर्थ हैं और भाग्य के उलट-फेर भी उन्हें तेरी सुप्रसन्नता के पथ से नहीं भटका सकते हैं।

मैं तुझसे याचना करता हूँ हे मेरे ईश्वर, उनके द्वारा और उनकी उन आहों के द्वारा जो तेरे वियोग में उनके हृदय से निकली हैं, कि उन्हें अपने विरोधियों के दुष्कृत्यों से सुरक्षित रख और उनकी आत्मा को उससे पोषित कर जिसका विधान तूने अपने उन प्रियजनों के लिये किया है जिन्हें कोई भय ग्रस्त नहीं करता और जिन पर कोई विपदा नहीं आयेगी।

- बहाउल्लाह

(55)

हे मेरे ईश्वर, तू भलीभांति जानता है कि सभी दिशाओं से मुझ पर विपदायें टूट पड़ी हैं और तेरे अतिरिक्त अन्य कोई नहीं जो उन्हें दूर कर सकता है या कम ही कर सकता है। तेरे प्रति अपने प्रेम के कारण मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि तू किसी भी आत्मा को तब तक विपदाग्रस्त नहीं करता जब तक तू अपने पावन स्वर्ग में उसके स्थान को ऊँचा करने का निर्णय नहीं ले लेता या जब तक यह भौतिक जीवन जीने के लिये उसके हृदय को सशक्त करने का तेरा इरादा नहीं होता। अपनी शक्ति के से तू ये सुरक्षा-कवच उसे इसलिये प्रदान करता है कि दुनिया के मिथ्या अभिमान के प्रति उसका झुकाव न हो जाये। यह सच है

और तू भलीभाँति इससे परिचित भी है कि दुनिया और आसमानों के समस्त सुख से भी अधिक तेरे नाम के स्मरण में मैं प्रसन्नता का अनुभव करता हूँ।

हे मेरे ईश्वर, अपने प्रेम और अपनी आज्ञाओं के पालन में मेरे हृदय को सशक्त कर और ऐसा वर दे कि तेरे विरोधियों की छाया से मैं पूरी तरह दूर रह सकूँ। सत्य ही, मैं तेरी महिमा के नाम पर सौगन्ध लेता हूँ कि तेरे अतिरिक्त किसी अन्य की समीपता की कामना मैं नहीं करता और न ही तेरी दया के अतिरिक्त किसी अन्य की दया का पात्र ही बनना चाहता हूँ, न ही मुझे तेरे न्याय के अतिरिक्त किसी अन्य से न्याय पाने की अभिलाषा है।

तू परम् उदार है, हे आसमानों और धरा के ईश्वर, समस्त मानवों की स्तुति से परे तेरे आज्ञाकारी सेवकों को शांति प्राप्त हो और ईश्वर की महिमा बढ़े, तू ही सभी लोकों का स्वामी है!

- बाब

प्रभात

(56)

मैं तेरी शरण में जाग उठा हूँ, हे मेरे ईश्वर! और जो उस शरण की कामना करे उसके लिये यह उचित है कि वह तेरे संरक्षण के अभय-स्थल और तेरी सुरक्षा के दुर्ग में निवास करे। मेरे अन्तर्मन को भी, हे मेरे स्वामी! अपने प्राकट्य के अरुणोदय की प्रभा द्वारा वैसे ही आलोकित कर दे जिस प्रकार तूने मेरे बाह्य अस्तित्व को अपनी कृपा के प्रभात-प्रकाश द्वारा आलोकित किया है।

- बहाउल्लाह

हे मेरे ईश्वर और मेरे स्वामी! मैं तेरा सेवक और तेरे सेवक का पुत्र हूँ। इस प्रभात बेला में मैं अपनी शय्या से जाग उठा हूँ, जब तेरे आदेश की पुस्तक में विहित विधान के अनुसार ही तेरी एकमेवता का सूर्य तेरी इच्छा के क्षितिज से प्रकट होकर जगमगाया है और उसने सम्पूर्ण विश्व पर अपनी प्रभा बिखेर दी है।

स्तुति हो तेरी, हे मेरे ईश्वर, कि हम तेरे ज्ञान के आलोकपुंज के प्रति जाग उठे हैं। हमारे लिये वह भेज, हे मेरे स्वामी! जो हमें इस योग्य बना दे कि हम तेरे सिवा अन्य सभी से अनासक्त हो सकें, जो हमें तेरे सिवा सभी आसक्तियों से मुक्त होने में समर्थ बनाये। मेरे लिये और जो मेरे प्रियजनों के लिए, स्त्री-पुरुष सभी के लिये समान रूप से, इहलोक और परलोक के शुभ को लिख दे। अपने अचूक संरक्षण के द्वारा हमें उन सबसे सुरक्षित रख जिन्हें तूने आसुरी प्रवृत्तियों का मूर्तरूप बनाया है, जो मनुष्यों के हृदयों को भ्रमित करते हैं। तू जो चाहे करने में समर्थ है। तू सत्य ही, सर्वशक्तिशाली, संकट में सहायक स्वःनिर्भर है।

उसे आशीष दे, हे स्वामी, मेरे ईश्वर! जिसे तूने अपनी परम श्रेष्ठ उपाधियों के साथ भेजा है और जिसके द्वारा तूने सदाचारियों और दुष्टों के बीच का अंतर प्रकट किया है, मुझे अनुग्रहपूर्वक वह करने में सहायता कर जिससे तू प्रेम करता है और जिसे तू चाहता है। इसके अतिरिक्त हे मेरे ईश्वर उनको आशीष दे जो तेरे शब्द और तेरे अक्षर हैं और वे जो तेरी ओर उन्मुख हुए हैं, और तेरे मुखमण्डल की ओर प्रवृत्त हो गये हैं और तेरा आह्वान सुना है।

तू सत्य ही, सभी समस्त जनों का स्वामी और सम्राट है, और समस्त वस्तुओं पर सामर्थ्यवान है।

- बहाउल्लाह

हे मेरे ईश्वर! मैं तेरी कृपा से इस प्रभात वेला में जाग उठा हूँ, और तुझ में ही अपना सम्पूर्ण विश्वास अर्पित कर अपना निवास छोड़ा है और स्वयं को तेरे संरक्षण में सौंप दिया। अपनी दया के आकाश से तू मुझ पर अपने आशीष भेज, और मुझे अपने घर सुरक्षित लौटने में वैसे ही समर्थ बना, जैसे तूने मुझे घर से प्रस्थान करते समय, अपनी सुरक्षा में रखकर, अपनी ओर उन्मुख होने के योग्य बनाया।

तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं, एक, अतुलनीय, सर्वज्ञाता, सर्वज्ञ

- बहाउल्लाह

(57)

घर से निकलते समय

हे मेरे ईश्वर! मैं तेरी कृपा से इस प्रभात वेला में जाग उठा हूँ, और तुझ में ही अपना सम्पूर्ण विश्वास अर्पित कर अपना निवास छोड़ा है और स्वयं को तेरे संरक्षण में सौंप दिया है। अपनी दया के आकाश से तू मुझ पर अपने आशीष भेज और मुझे अपने घर सुरक्षित लौटने में वैसे ही समर्थ बना, जैसे तूने मुझे घर से प्रस्थान करते समय, अपनी सुरक्षा में रखकर, अपनी ओर उन्मुख होने के योग्य बनाया है। तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं, एक और केवल एक, अतुलनीय, सर्वज्ञ तथा सर्वप्रज्ञ।

- बहाउल्लाह

धर्म की विजय

(58)

गुणगान हो तेरे नाम का, हे स्वामी, मेरे ईश्वर! समस्त भू पर अंधियारा छा गया है और सभी राष्ट्रों को दुष्ट शक्तियों ने घेर लिया है। इसमें भी मैं तेरे विवेक को और पाता हूँ तेरे विधान की चमक देखता हूँ ।

वे जो तुझसे दूर आवरण में लिपटे हैं, उन्होंने समझ लिया है कि उनमें तेरे प्रकाश को बुझा देने की और तेरी अग्नि को मिटा देने की और तेरी कृपा के पवन झकोरों को रोक लेने की शक्ति है, किन्तु नहीं, तेरी प्रभुता मेरी साक्षी है यदि प्रत्येक विपदा तेरे विवेक और प्रत्येक अग्नि-परीक्षा तेरे मंगल-विधान का संवाहक नहीं बनाई गई होती तो हमारा विरोध करने का साहस कोई भी नहीं दिखाता, भले ही धरती तथा आकाश की समस्त शक्तियाँ हमारे विरूद्ध उठ खड़ी होतीं। यदि मैं तेरे विवेक के अद्‌भुत रहस्यों को, जो मेरे सम्मुख खुले पड़े हैं, प्रकट कर देता तो तेरे शत्रुओं के साम्राज्य विदीर्ण हो जाते। अतः, गुणगान हो तेरे नाम का, हे मेरे ईश्वर! मैं तुझसे याचना करता हूँ, तेरे परम महान नाम से कि जो तुझसे प्रेम करते हैं, उन्हें अपने उस विधान के चतुर्दिक एकत्र कर जो तेरी इच्छा की कृपा से प्रवाहित हुआ है, और उनके लिये वह भेज जो उनके हृदयों को आश्वस्त करे।

तू जैसा चाहे वैसा करने में समर्थ है। सत्य ही तू संकट में सहायक, स्वयंजीवी है।

- बहाउल्लाह

(59)

गुणगान हो तेरा, हे स्वामी, तूने अपने आदेश की शक्ति से समस्त सृजित वस्तुओं को अस्तित्व दिया है।

हे स्वामी! तेरे अतिरिक्त जिसने अन्य सब कुछ को त्याग दिया है, उसकी सहायता कर और उसे विजय प्रदान कर। हे स्वामी, अपने सेवकों की सहायता करने के लिये, उन्हें सहयोग और सहायता प्रदान करने के लिये, उन्हें महिमा से आच्छादित करने के लिये, उन्हें सम्मान एवं उच्चता प्रदान करने के लिये, उन्हें समृद्ध बनाने के लिये और अद्‌भुत विजय के द्वारा उन्हें विजयी बनाने के लिये, देवदूतों को भेज जो आकाश और धरती पर तथा जो इनके मध्य में है।

तू उनका स्वामी है, धरती और आकाश का स्वामी है और समस्त लोकों का स्वामी है। हे ईश्वर, अपने सेवकों की शक्ति के माध्यम से इस धर्म को शक्तिशाली बना और संसार के सभी जनों पर प्रभावशाली होने में उनकी सहायता कर; क्योंकि, वे सत्य ही, तेरे ऐसे सेवक हैं जिन्होंने स्वयं को तेरे अतिरिक्त अन्य सभी कुछ से अनासक्त कर लिया है और तू सत्य ही, सच्चे सेवकों का रक्षक है।

हे स्वामी, अनुदान दे कि तेरे परम पावन धर्म के प्रति अपनी निष्ठा के माध्यम से उनके हृदय, उन सभी वस्तुओं से अधिक शक्तिशाली बन जायें, जो आकाश में और धरती पर है, तथा जो कुछ भी इनके मध्य है, हे स्वामी, अपनी अद्भुत शक्ति के चिन्हों से उनके हाथों को सशक्त बना ताकि वे समस्त मानवजाति के समक्ष तेरी शक्ति को प्रकट कर सकें।

- बाब

(60)

हे स्वामी, अपनी दिव्य एकता के वृक्ष के शीघ्र विकास का विधान कर। हे स्वामी, अपनी सुप्रसन्नता की जलधार से इसे सींच और अपने दिव्य आश्वासन के प्रकटीकरण से इससे ऐसे फल उपजा जैसा तू अपने गुणगान एवं महिमागान के लिये, अपनी स्तुति और आभार के लिये, अपने नाम की स्तुति के लिये, अपने सारत्व की एकता के लिये और अपनी उपासना में समर्पण के लिये चाहता है! सभी कुछ तेरी मुट्ठी में है। परम सौभाग्यशाली हैं वे जिनके रक्त का तूने अपने अस्तित्व के वृक्ष को सींचने के लिये और अपनी पावन और अतुलनीय वाणी को यशस्वी बनाने के लिये चुना है।

- बाब

(61)

हे स्वमी! धरती के समस्त जनों को अपने धर्म के स्वर्ग में प्रवेश पाने योग्य बना, ताकि अस्तित्व में आया कोई भी प्राणी, तेरी सुप्रसन्नता की परिधि से बाहर न रह जाये।

अनन्तकाल से तू, वह करने में समर्थ रहा है जो तू चाहता है और तू अपनी इच्छा से परे है।

- बाब

वह ईश्वर है! हे स्वामी, मेरे ईश्वर, मेरे परम प्रियतम! ये तेरे वे सेवक हैं जिन्होंने तेरी पुकार सुनी है, तेरी वाणी, तेरे आह्वान पर ध्यान दिया है और विश्वास किया है; ये साक्षी रहे हैं तेरी अद्‌भुत लीला के, इन्होंने तेरे प्रमाणों को और पुष्ट किया है तेरे साक्ष्यों को स्वीकारा है; तेरे मार्गदर्शन का अनुसरण किया है, और जाना है तेरा रहस्य, और पाया है मंत्र तेरे ग्रंथ का; तेरी पातियों का स्रोत पाया है, तेरे संदेशों का भाव और तेरे प्रकाशन और भव्यता के परिधान का आंचल दृढ़ता से थाम लिया है; जिनके पग तेरी संविदा में अडिग हैं, तेरे प्रमाण में उनके हृदय दृढ़ हैं।

स्वामी! तू उनके हृदय में अपने दिव्य आकर्षण की लौ को प्रज्वलित कर दे और वरदान दे कि प्रेम और ज्ञान का पंछी उनके हृदय में चहके। वर दे कि वे तेरे ऐसे समर्थ चिन्ह बनें, ऐसी जगमगाती ध्वजायें बनें व परिपूर्णता को प्राप्त हों जैसे तेरे शब्द परिपूर्ण हैं। तू अपना धर्म उनके माध्यम से उन्नत कर, अपनी धर्म-ध्वजा और दूर-दूर तक फहरा, अपनी अद्‌भुत लीला का विस्तार कर। अपनी वाणी को उनके माध्यम से विजयी बना और अपने प्रियजनों के मेरूदंड सशक्त कर। उनकी वाणी को अपने गुणगान के लिये मुक्त कर, उन्हें तू अपनी पावन इच्छा के पालन के लिये प्रेरित कर। अपने पावन साम्राज्य में उनके मुखड़ों को आलोकित कर और अपने धर्म की विजय के लिये उठ खड़े होने में उनकी सहायता करके उनका आनन्द बढ़ा। स्वामी, हम निर्बल हैं, हमें अपनी पावनता की सुरभि का प्रसार करने की शक्ति दे; हम दरिद्र हैं, अपनी दिव्य एकता के कोष से हमें समृद्ध बना; हम परिधानहीन हैं, अपनी कृपा के परिधान हमें धारण करा; हम पापी हैं, अपनी कृपालुता, अनुग्रह और क्षमाशीलता से हमारे पापों को क्षमा कर। सत्य ही, तू ही सम्बल देने वाला, सहायक, कृपालु, सामर्थ्यशाली और शक्तिशाली है। महिमाओं की महिमा उन पर विराजे, जो दृढ़ और अटल हैं।

-अब्दुल-बहा

बच्चों के लिए

हे ईश्वर! मेरा मार्गदर्शन कर, मेरी रक्षा कर, मुझे एक दीप्तिमान दीप और देदीप्यमान सितारा बना दे। तू शक्तिशाली एवं बलशाली है।

-अब्दुल-बहा

हे ईश्वर! इन बच्चों को शिक्षित कर। ये बच्चे तेरी बगिया के पौधे हैं, तेरे तृणभूमि के फूल हैं, तेरी वाटिका के गुलाब हैं। अपनी वर्षा की फुहारें इन पर पड़ने दे, सत्य के इस सूर्य को अपने स्नेह सहित इन पर जगमगाने दे। अपने समीरण को इनमें ताजगी भरने दे, ताकि ये प्रशिक्षित हो सकें, विकास और वृद्धि कर सकें और परम सौन्दर्य में परिलक्षित हो सकें। तू दाता है। तू करुणामय है।

-अब्दुल-बहा

हे तू दयालु स्वामी! ये प्यारे बच्चे तेरी शक्ति की उंगलियों के हस्तकौशल हैं; ये तेरी महानता के अद्भुत चिन्ह हैं। हे ईश्वर! इन बच्चों की रक्षा कर, उनके शिक्षित होने में कृपापूर्वक उनकी सहायता कर और मानवता के जगत की सेवा करने के लिए उन्हें समर्थ बना। हे ईश्वर! ये बच्चे माणिक्य हैं, इन्हें अपनी स्नेहपूर्ण कृपालुता के कवच में इनका पोषण करा।

तू दयालु और सभी को प्रेम करने वाला है।

-अब्दुल बहा

युवकों के लिए

हे स्वामी, इस युवा को दीप्तिमान बना, और इस अकिंचन प्राणी को अपनी उदारता प्रदान कर। इसे ज्ञान प्रदान कर, प्रत्येक प्रभात के साथ इसे शक्ति का अनुदान दे और अपने संरक्षण के आश्रय में इसे सुरक्षा दे ताकि यह त्रुटि से मुक्त हो सके, स्वयं को तेरे धर्म की सेवा में समर्पित करे, पथभ्रष्टों का मार्गदर्शन कर सके, अभागो को राह दिखा सके, दासों को मुक्त कर सके और असावधानों को जगा सके। जिससे सभी तेरे स्मरण और स्तुति से धन्य हो सकें। तू शक्तिशाली और शक्तिसम्पन्न है।

-अब्दुल-बहा

(63)

हे ईश्वर! मेरा मार्गदर्शन कर, मेरी रक्षा कर, मेरे हृदय दीप को प्रदीप्त कर दे और मुझे एक देदीप्यमान सितारा बना दे। तू शक्तिशाली एवं बलशाली है।

-अब्दुल-बहा

(64)

हे ईश्वर! मेरे स्वामी! मैं छोटी उम्र का बालक हूँ, अपनी दया के दुग्ध से मेरा पोषण कर, अपने प्रेम के वक्ष से मुझे प्रशिक्षण दे, अपने मार्गदर्शन की पाठशाला में मुझे शिक्षित कर और अपने आशीष की छत्रछाया में मेरा विकास कर। मुझे अंधकार से मुक्ति दे, मुझे एक दीप्त प्रकाशपुंज बना दे; मुझे उदासी से छुटकारा दिला; मुझे अपनी गुलाब वाटिका का एक पुष्प बना; मुझे अपनी पावन देहरी का एक सेवक बना और मुझे सदाचारियों की वृत्ति और स्वभाव प्रदान कर; मुझे मानव संसार के लिये सम्पदाओं का एक माध्यम बना और मेरे मस्तक को शाश्वत जीवन के मुकुट से सुशोभित कर। तू निश्चय ही शक्तिशाली, सामर्थ्यवान, सर्वद्रष्टा और सबका सुनने वाला है !

-अब्दुल-बहा

(65)

हे ईश्वर! इन बालकों को शिक्षित कर। ये तेरी फूलों की बगिया के पौधें हैं, तेरे उपवन के फूल हैं, तेरी वाटिका के गुलाब हैं। अपनी वर्षा की फुहारें इन पर पड़ने दे, सत्य के इस सूर्य को अपने स्नेह सहित इन पर जगमगाने दे। अपने समीरण को इनमें ताजगी भरने दे, ताकि ये प्रशिक्षित हो सकें, विकास कर सकें और परम सौन्दर्य को मूर्त कर सकें। तू दातार है, तू करुणामय है।

-अब्दुल-बहा

(66)

स्तुति हो तेरी, हे स्वामी, मेरे ईश्वर! कृपापूर्वक वर दे कि यह शिशु तेरी स्नेहसिक्त दया और तेरे प्रेमपूर्ण मंगलविधान के स्तनों से आहार पाये और तेरे दिव्य वृक्ष के फल से पोषित हो। इसे अपने अतिरिक्त अन्य किसी के सार-सम्भाल में न छोड़, क्योंकि तूने अपनी सर्वोपरि इच्छा और शक्ति से इसका सृजन किया है और इसे अस्तित्व दिया है। तुझ सर्वशक्तिशाली, सर्वज्ञाता के सिवा अन्य कोई ईश्वर नहीं है।

(67)

महिमावंत है तू, हे मेरे प्रियतम, इस पर अपनी दिव्य सुरभि और अपने पावन वरदानों की सुगंध प्रवाहित कर। इसे अपने परम पावन नाम की छाया तले आश्रय की आकांक्षा करने योग्य बना, हे तू जो अपनी मुट्ठी में समस्त नामों और गुणों का साम्राज्य धारण किये हुए है! वस्तुतः तू जो चाहे करने में समर्थ है और तू निश्चय ही सामर्थ्यशाली, सदा क्षमाशील, अनुग्रहमय और कृपालु है।

- बहाउल्लाह

(68)

हे दयालु स्वामी! ये नन्हें बालक तेरी शक्ति की उंगलियों से बने हैं; ये तेरी महानता के अद्भुत चिन्ह हैं। हे ईश्वर! इन बालकों की रक्षा कर। इन्हें सहायता दे ताकि ये मानवजाति की सेवा के योग्य बन सकें। हे ईश्वर! ये बालक मोती हैं, इन्हें अपनी स्हनेहिल कृपा की सीप में सुरक्षित रख। तू दयालु है और सभी को प्रेम करने वाला है।

-अब्दुल-बहा

हे ईश्वर, इस युवक को तेजस्वी बना और इस दीन-हीन प्राणी को अपनी उदारता का दान दे। इसे ज्ञान प्रदान कर, प्रत्येक प्रातः इसे अतिरिक्त शक्ति से सम्पन्न बना और अपने संरक्षण के आश्रय में इसे सुरक्षा दे, ताकि यह भूलों से मुक्त हो सके, पथभ्रष्टों को राह दिखा सके, दुःखी व्यक्ति को प्रसन्नता की ओर ले चले, दासों को मुक्त कर सके और नासमझों को जगा सके। ऐसा वर दे कि तेरे स्मरण और गुणगान से सभी धन्य हो सकें। तू सर्वसमर्थ और शक्तिसम्पन्न है।

-अब्दुल-बहा

(”.....आरम्भ से ही बच्चों को ईश्वर का ज्ञान कराना चाहिये और ईश्वर का स्मरण करने के लिये उन्हें याद दिलाते रहना चाहिये। उनके अन्तर्मन में ईश्वर का प्रेम कुछ इस तरह व्याप्त हो जाने दें जैसे उनकी माँ का दूध उनकी नस-नस में घुल-मिल जाता है.....“)

-अब्दुल-बहा

विवाह

”बहाई विवाह दो पक्षों के बीच मृदुल मिलन और स्नेहपूर्ण सम्बन्ध है, लेकिन उन्हें (विवाह बंधन में बंधने वाले स्त्री-पुरूष को) अत्यंत सावधानी बरतनी चाहिये और एक दूसरे के चरित्र से सुपरिचित हो जाना चाहिये। एक सुदृढ़ संविदा द्वारा यह चिरंतन बंधन संरक्षित कर लिया जाना चाहिये और उद्देश्य होना चाहिये मधुर सम्बन्ध, साहचर्य और एकता तथा अनन्त जीवन को बढ़ावा देना।“

”....एक विवाहित जोड़े का जीवन आसमान के फरिश्तों की भाँति होना चाहिये - ख़ुशियों से भरा और आध्यात्मिक आनन्द से परिपूर्ण, एकता का प्रतीक और मित्रवत् - मानसिक और दैहिक मित्रता....। उनके मत और विचार सत्य के सूर्य की किरणों के समान और आसमान के चमकते सितारों की प्रखरता लिये हों। सहभागिता और समरसता के वृक्ष की टहनियों पर मधुर गान गुंजित करते पक्षियों की भाँति उनका जीवन हो। उन्हें निरन्तर आनन्द से उल्लसित होना चाहिये और दूसरों के हृदयों को प्रसन्नता देने का साधन बनना चाहिये। उन्हें अपने संगी साथियों के समक्ष एक उदाहरण बनना चाहिये, एक-दूसरे के प्रति सच्चा प्रेम और वफ़ादारी रखनी चाहिये और अपने बच्चों को कुछ इस प्रकार शिक्षित करना चाहिये कि वे अपने परिवार का नाम रौशन करें।“

-अब्दुल-बहा

विवाह की प्रतिज्ञा परम पावन पुस्तक ”किताब-ए-अक़दस“ में वर्णित वह श्लोक है जो वर और वधू द्वारा बारी-बारी से वैसे दो गवाहों की उपस्थिति में पढ़ी जानी चाहिये जो आध्यात्मिक सभा को स्वीकार्य हों। विवाह की प्रतिज्ञा इस प्रकार है:

”हम, सत्य ही, ईश्वर की इच्छा का अनुपालन करेंगे।“

वह दाता और उदार है!

स्तुति हो ईश्वर की, जो पुरातन, चिरन्तन, निर्विकार, शाश्वत है। वह जो स्वयं अपने अस्तित्व का साक्ष्य है कि वह सत्य ही एकाकी, एकल, अबाधित, उदात्त है। हम साक्षी हैं कि उसके अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है, हम उसकी एकमेवता को स्वीकारते हैं, उसकी अखण्डता पर विश्वास करते हैं। उसने सदैव ही अगम्य उच्च शिखरों पर निवास किया है, वह स्वयं के अतिरिक्त किसी के भी उल्लेख से पवित्र तथा स्वयं के अतिरिक्त अन्य किसी के भी वर्णन से परे है।

और जब उसने मनुष्यों पर कृपा और उपकार व्यक्त करने और संसार को सुव्यवस्थित करने की इच्छा की, उसने प्रथाओं को प्रकट किया और विधानों की रचना की, उसने उसमें विवाह के विधान की स्थापना की और इसे कल्याण और मुक्ति के दुर्ग के रूप में बनाया और जो परम पावन पुस्तक में पवित्रता के आकाश से उतरा था उसका हमें आदेश दिया। वह कहता है, हे लोगो ! विवाह के बन्धन में बंधो ताकि तुम उसे जन्म दे सको जो मेरे सेवकों के बीच मेरा उल्लेख करेगा। यह तुम्हारे लिए मेरा आदेश है, अपनी सहायता के रूप में दृढ़ता से इसका पालन करो।

-बहाउल्लाह

महिमा हो तेरी, हे ईश्वर! सत्य ही, तेरा यह सेवक और तेरी यह सेविका तेरी दया की छत्रछाया में एकत्रित हुए हैं और तेरी कृपा और तेरी उदारता के प्रताप से एकता के सूत्र में बंधे हैं। हे ईश्वर! अपने इहलोक और परलोक के साम्राज्य में इनका सहायक बन और अपने अनुग्रह, अपनी असीम दया के द्वारा इनके लिये प्रत्येक शुभ वस्तु का विधान कर। हे ईश्वर, इन्हें अपने दासत्व में सुदृढ़ बना और इनकी सहायता कर कि ये तेरी सेवा कर सकें। इन पर अनुकम्पा कर कि तेरे लोक में ये तेरे नाम के प्रतीक चिन्ह बन सकें और अपने उन वरदानों के द्वारा इनकी रक्षा कर जो इहलोक और परलोक में भी अगम्य हैं। हे ईश्वर, ये तेरी दयालुता के साम्राज्य से याचना कर रहे हैं और तेरी एकमेवता के साम्राज्य का आह्वान कर रहे हैं। सत्य ही, ये तेरे आदेश का पालन करने के लिये ही विवाह सूत्र में बंधे हैं। जब तक समय का अस्तित्व रहे, हे ईश्वर! तब तक इन्हें एकता और परस्पर प्रेम का प्रतीक चिन्ह बना रहने दे। सत्य ही, तू सर्वशक्तिशाली, सर्वव्यापी और सर्वसामर्थ्यशाली है।

-अब्दुल-बहा

(70)

महिमा हो तेरी, हे ईश्वर! सत्य ही, तेरा यह सेवक और तेरी यह सेविका तेरी दया की छत्रछाया में एकत्रित हुए हैं और तेरी कृपा और तेरी उदारता के प्रताप से एकता के सूत्र में बंधे हैं। हे ईश्वर! अपने इहलोक और परलोक के साम्राज्य में इनका सहायक बन और अपने अनुग्रह, अपनी असीम दया के द्वारा इनके लिये प्रत्येक शुभ वस्तु का विधान कर। हे ईश्वर, इन्हें अपने दासत्व में सुदृढ़ बना और इनकी सहायता कर कि ये तेरी सेवा कर सकें। इन पर अनुकम्पा कर कि तेरे लोक में ये तेरे नाम के प्रतीक चिन्ह बन सकें और अपने

उन वरदानों के द्वारा इनकी रक्षा कर जो इहलोक और परलोक में भी अगम्य हैं। हे ईश्वर, ये तेरी दयालुता के साम्राज्य से याचना कर रहे हैं और तेरी एकमेवता के साम्राज्य का आह्वान कर रहे हैं। सत्य ही, ये तेरे आदेश का पालन करने के लिये ही विवाह सूत्र में बंधे हैं। जब तक समय का अस्तित्व रहे, हे ईश्वर! तब तक इन्हें एकता और परस्पर प्रेम का प्रतीक चिन्ह बना रहने दे। सत्य ही, तू सर्वशक्तिशाली, सर्वव्यापी और सर्वसामर्थ्यशाली है।

-अब्दुल-बहा

(71)

वह ईश्वर है! अद्वितीय स्वामी है!

अपने शक्तिसम्पन्न विवेक से तूने मानवजाति के लिये विवाह का विधान किया है कि इस लोक में एक के बाद एक मानव पीढ़ियाँ बनी रहें और जब तक इस लोक का अस्तित्व है तब तक तेरी एकमेवता की पावन देहरी पर तेरी सेवा और उपासना, तेरी स्तुति और महिमागान में वे स्वयं को व्यस्त रखें। ”मैंने आत्माओं और मनुष्यों की सृष्टि नहीं की है बल्कि अपने उपासक सृजित किये हैं“। अतः हे ईश्वर! तू अपने प्रेम के घौसले में इन दो पक्षियों का विवाह अपनी दया के स्वर्ग में सम्पन्न कर और इन्हें अनन्त कृपा को आकर्षित करने का साधन बना जिससे प्रेम के इन दो ”सागरों“ के मिलन से कोमलता की एक लहर उमड़ सके और जीवन के तट पर ये पावनता और श्रेष्ठता के मोती बिखेर सकें। ”उसने दो सागरों को उन्मुक्त कर दिया है ताकि वे एक दूसरे से मिल सकें: उनके बीच एक मर्यादा है जिसका वे उल्लंघन न करें। अब अपने स्वामी की कृपा के सागरों में से तू किसको अस्वीकार करेगा? प्रत्येक से वह महानतर और लघुतर मोती उत्पन्न करता है।“

हे तू कृपालु स्वामी! इस विवाह को तू मूंगे और मोती उत्पन्न करने का साधन बना। तू सत्य ही सर्वशक्तिशाली, सर्वमहान और सदा क्षमाशील है।

-अब्दुल-बहा

(72)

हे मेरे ईश्वर! हे मेरे ईश्वर! ये दो उज्ज्वल नक्षत्र तेरे प्रेम के कारण परिणय सूत्र में बंधे हैं, तेरी पावन देहरी की सेवा के लिये एक हुए हैं, तेरे धर्म के कार्यों के निमित्त एकाकार बने हैं। हे मेरे स्वामी, सर्वकृपालु ईश्वर! तू इस विवाह को अपनी असीम अनुकम्पा का प्रकाश-

सूत्र बना दे, हे कल्याणकर्ता, हे दाता! इन्हें अपने वरदानों की ऐसी जगमगाती किरण बना दे कि इस महान वृक्ष से ऐसी शाखाएँ फूटें जो तेरे उपहारों की वर्षा में विकास करें।

सत्य ही तू उदार, सर्वशक्तिशाली, दयालु, सर्वकृपालु है!

-अब्दुल-बहा

शयनकाल

हे मेरे ईश्वर, मेरे मालिक, मेरी आकांक्षा के लक्ष्य! तेरा सेवक, तेरी दया के आश्रय और तेरी सुरक्षा तथा तेरे संरक्षण की चाह में सोना चाहता है, तेरी कृपा की छत्रछाया तले विश्राम करना चाहता हैं।

मैं तुझसे याचना करता हूँ, हे मेरे स्वामी, तेरा नेत्र, जो कभी सोता नहीं है, मेरे नेत्रों को अपने अतिरिक्त अन्य कुछ भी देखने से बचा। मेरी दृष्टि को इतना सशक्त बना कि ये तेरे चिन्हों को पहचान सकें और तेरे प्रकटीकरण के क्षितिज का अवलोकन करें। तू वह है जिसके प्रकटीकरण के समक्ष शक्ति का सार भी प्रकम्पित हो उठता है।

तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है, तू ही है सर्वशक्तिमान, सर्वदमनकारी और अप्रतिबंधित।

- बहाउल्लाह

(73)

हे मेरे ईश्वर! मेरे स्वामी! मेरी आकांक्षा के लक्ष्य! तेरा यह सेवक तेरी दया के आश्रय और तेरी सुरक्षा तथा तेरे संरक्षण की याचना करता हुआ सोना चाहता है, तेरी कृपा की छत्रछाया में विश्राम लेना चाहता हैं। मैं तुझसे याचना करता हूँ, हे मेरे स्वामी! कि अपने उस नेत्र द्वारा, जो कभी सोता नहीं है, मेरी आँखों को अपने अतिरिक्त अन्य कुछ भी देखने से बचा। मेरी दृष्टि को इतना सशक्त बना दे कि ये तेरे चिन्हों को पहचान सकें और तेरे प्रकटीकरण के क्षितिज के दर्शन कर सकें। तू वह है जिसके प्रकटीकरण के समक्ष शक्ति का सार भी प्रकम्पित हो उठता है। तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है, तू ही है सर्वशक्तिमान, सर्वदमनकारी और अप्रतिबंधित।

- बहाउल्लाह

(74)

हे ईश्वर, मेरे ईश्वर, मैं कैसे निद्रा का वरण कर सकता हूँ, जबकि तेरे लिये व्यग्र नेत्र तुझसे वियोग के कारण निद्राविहीन हैं और कैसे मैं विश्राम के लिये लेट सकता हूँ जबकि तेरे प्रेमियों की आत्माएँ तेरे सान्निध्य से दूरी के कारण अति व्याकुल हैं? मैंने, हे मेरे स्वामी, अपनी चेतना और अपने सम्पूर्ण अस्तित्व को तेरी सामर्थ्य और तेरी सुरक्षा के दाहिने हाथ में सौंप दिया है और मैं तेरी शक्ति के प्रताप से ही अपना सिर तकिये पर रखता हूँ और

तेरी इच्छा और तेरी सुप्रसन्नता के अनुसार ही इसे ऊपर उठाता हूँ। तू सत्य ही, सुरक्षा प्रदान करने वाला, सर्वशक्तिमंत, परम बलशाली है।

तेरी सामर्थ्य की सौगन्ध! मैं चाहे निद्रा में रहूँ अथवा जाग्रत अवस्था में, जो कुछ तू चाहता है उसके अतिरिक्त कुछ भी नहीं चाहता हूँ। मैं तेरा सेवक हूँ और तेरे हाथों में हूँ। जिससे तेरी सुप्रसन्नता की सुरभि का प्रसार हो वैसा ही करने में कृपापूर्वक मेरी सहायता कर। तू सत्य ही, मेरी आशा और उन सबकी आशा है जो तेरे निकट पहुँचने का सुख पाते हैं। स्तुति हो तेरी; हे अखिल लोकों के स्वामी।

- बहाउल्लाह

शिक्षण

(75)

महिमावंत हो तेरा नाम, हे मेरे ईश्वर ! तूने उस दिवस को प्रकट किया है जो दिवसों का अधिपति है, वह दिवस जिसे तूने अपने प्रियजनों तथा दिव्य अवतरणों के समक्ष अपनी श्रेष्ठतम पातियों में घोषित किया था, वह दिवस जब तूने समस्त सृजित वस्तुओं पर अपने नामों की प्रभा बिखराई है। उसे प्राप्त तेरा आशीष महान है जिसने स्वयं को तेरी ओर उन्मुख किया है और तेरा सान्निध्य प्राप्त किया है और तेरी वाणी की प्रखरता को ग्रहण किया है।

मैं तुझसे याचना करता हूँ, हे मेरे स्वामी, तेरे उस नाम से, जिसके चहुँओर नामों का साम्राज्य आराध्य भाव से परिक्रमा करता है, कि तू अपने उन प्रियजनों की सहायता कर जो तेरे सेवकों के मध्य तेरी वाणी की महिमा का बखान करते हैं और दूर-दूर तक तेरे प्राणियों के मध्य तेरा यशोगान करते हैं, जिससे तेरी धरा के निवासियों की आत्माएँ तेरे प्राकट्य के आह्लाद से भर उठीं हैं।

हे मेरे स्वामी! तूने अपने अनुग्रह की जीवंत जलधाराओं तक पहुँचने में उनका मार्गदर्शन किया है, उन्हें उदारता से यह वर दे कि वे तुझसे विमुख न हों। तूने उन्हें अपनी सिंहासन-स्थली तक बुलाया है, अपनी स्नेहयुक्त दयालुता के द्वारा तू उन्हें अपनी समीपता से दूर न कर। उनके पास वह भेज जो उन्हें तेरे अतिरिक्त अन्य सबसे पूरी तरह अनासक्त कर दे। तू अपनी समीपता के आकाश में उन्हें उड़ान भरने में इतना समर्थ बना कि न तो दमनकर्ता के तीव्र प्रहार और न ही तेरी परम पावनता और परम शक्तिमानता में अविश्वास करने वालों के भ्रामक परामर्श उन्हें तुझसे दूर कर सकें।

- बहाउल्लाह

(76)

स्तुति हो तेरी, हे स्वामी, मेरे ईश्वर! मैं तुझसे याचना करता हूँ तेरे उस नाम से, जिसे किसी ने भी उचित रूप से नहीं पहचाना है और जिसके आशय की थाह कोई नहीं पा सकता है। मैं प्रार्थना करता हूँ तेरे उस नाम से, जो तेरे प्राकट्य का निर्झर-स्रोत और तेरे चिन्हों का अरुणोदय है कि मेरे हृदय को अपने स्मरण तथा अपने प्रेम का पात्र बना। तब उसे अपने विशाल महासागर में इस प्रकार निमग्न कर दे कि उससे तेरी प्रज्ञा, तेरी महिमा तथा तेरी स्तुति की जीवंत धारायें प्रवाहित हो उठें।

मेरी देह के अंग-प्रत्यंग तेरी एकता को प्रमाणित करते हैं और मेरे सिर के बाल तेरी प्रभुसत्ता तथा सामर्थ्य की घोषणा करते हैं। मैं, अंकिचन, अपने अस्तित्व को नकार कर तेरी महिमा के द्वार पर खड़ा हुआ हूँ और मैंने तेरे आंचल के छोर को दृढ़ता से थाम लिया है और तेरे उपहार के क्षितिज पर अपनी आँखें टिका ली हैं।

मेरे लिये, हे मेरे ईश्वर! वह नियत कर जो तेरी भव्यता की महानता के अनुरूप हो। अपनी शक्तिदायिनी अनुकम्पा द्वारा मेरी सहायता कर कि मैं तेरे धर्म का ऐसे संदेश दूँ कि जिससे मृतप्राय जन भी तत्क्षण उठ खड़े हों और तुझमें विश्वास प्रकट करके तेरे प्राकट्य के उदयस्थल तथा तेरे धर्म की ओर अपनी दृष्टि स्थिर कर, दौड़ पड़ें।

तू वस्तुतः सर्वशक्तिमान्, सर्वोच्च, सर्वज्ञाता तथा सर्वप्रज्ञ है।

- बहाउल्लाह

(77)

ईश्वर, जो सभी अवतारों का प्रकटकर्ता है, सभी उद्गमों का मूल है, समस्त धर्मों का जनक है, समस्त प्रकाशपुंजों का स्रोत है, मैं साक्षी देता हूँ कि तेरे नाम से बोध का आकाश विभूषित हुआ है, वाणी का महासिंधु उमड़ा है और समस्त धर्मों के मानने वालों के मध्य तेरे मंगलविधान का शासन लागू हुआ है।

मैं याचना करता हूँ तुझसे कि मुझे इतना समृद्ध बना कि मैं तेरे सिवा अन्य सब कुछ से मुक्त हो जाऊँ और तेरे अतिरिक्त अन्य किसी पर आश्रित न रहूँ। तब मुझ पर अपनी कृपा के मेघों की वह बरखा बरसा जो तेरे लोकों के प्रत्येक लोक में लाभकारी हो। तब अपनी शक्तिदायिनी अनुकम्पा द्वारा मेरी सहायता कर कि मैं तेरे सेवकों के मध्य तेरे धर्म की सेवा कर सकूँ और कुछ ऐसा कर दिखाऊँ कि जब तक तेरा साम्राज्य और तेरी सम्प्रभुता है तब तक मैं याद किया जाऊँ।

यह तेरा सेवक है, हे मेरे स्वामी ! जो तेरी कृपा के क्षितिज और तेरे उपहारों के आकाश की ओर पूर्ण समर्पण के साथ उन्मुख हुआ है।

तू सत्य ही, शक्ति और सम्पन्नता का स्वामी है। तू उन सबकी सुनता है जो तेरा गुणगान करते हैं। तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं, तू सर्वज्ञ सर्वप्रज्ञ है।

- बहाउल्लाह

(78)

हे मेरे ईश्वर! तू देखता है मुझे दीनता में नत्, तेरे आदेशों के प्रति स्वयं को विनत होते हुए, तेरी सम्प्रभुता के प्रति समर्पित होते हुए, तेरे अधिराज्य की सामर्थ्य से प्रकम्पित होते हुए, तेरे कोप से बचते हुए, तेरी कृपा की याचना करते हुए, तेरी क्षमाशीलता पर भरोसा किये हुए, तेरे क्रोध के भय से कम्पायमान होते हुए; मैं धड़कते हृदय, अश्रुपूरित नेत्र और याचना भरी अंतश्चेतना से और सभी वस्तुओं से पूर्ण अनासक्ति के साथ तुझसे याचना करता हूँ कि तू अपने प्रेमियों को अपने साम्राज्य के आर-पार भेदती किरणों के समान बना और अपने सेवकों को अपने पावन शब्दों का गुणगान करने में सहायता दे ताकि उनके मुखड़े प्रकाश से प्रभासित और दीप्तिमान हो सकें, उनके हृदय रहस्यों से परिपूरित हो जायें और प्रत्येक आत्मा अपने पापों से मुक्त हो सके। निर्लज्ज बन गये लोगों और अधर्मियों तथा अन्याय करने वालों से उनकी रक्षा कर। सत्य ही, तेरे चाहने वाले प्यासे हैं। हे स्वामी! उन्हें अपनी दया और कृपा के निर्झर स्रोत तक ले चल। सत्य ही, वे भूखे हैं, उन तक अपना दिव्य भोज भेज। सत्य ही, वे वस्त्रविहीन हैं, उन्हें विद्वता और ज्ञान के परिधान से विभूषित कर। वे शूरवीर हैं, हे मेरे ईश्वर! उन्हें युद्ध क्षेत्र तक ले चल। वे मार्गदर्शक हैं, उन्हें तर्कों एवं प्रमाणों से युक्त बना। वे तेरे सक्रिय सेवक हैं उन्हें सेवा में दृढ़ता की मदिरा के प्याले को सबमें बांटने वाला बना। हे ईश्वर उन्हें ऐसे गायक बना जो सुदूर उपवनों में तेरा यशोगान करते हैं। उन्हें ऐसे सिंह बना, जो जंगलों में विचरण करते हैं, उन्हें ऐसे मत्स्य बना, जो अतल गहराइयों में गोते लगाते हों। सत्य ही, तू असीम अनुकम्पाओं से परिपूर्ण है। तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं, सामर्थ्यवान, शक्तिसम्पन्न, दाता।

-अब्दुल-बहा

(79)

हे मेरे ईश्वर, तू अपने सेवकों को शब्दों के प्रसार में, और जो व्यर्थ और मिथ्या है उसका खण्डन करने में, सत्य को स्थापित करने में, पवित्र छंदों के सर्वत्र फलाने में, गौरवगान करने में, और सदाचारियों के हृदयों में भोर के प्रभात के प्रकाश स जगाने में सहायता दें। तू, सत्य ही, उदार, क्षमाशील है।

-अब्दुल-बहा

(80)

दिव्य योजना की पाती से

हे तू अतुलनीय ईश्वर! हे तू साम्राज्य के स्वामी! ये आत्माएँ तेरी स्वर्गिक सेना हैं। इनकी सहायता कर और सर्वोच्च देवदूतों द्वारा उन्हें विजयी बना, जिससे उनमें से प्रत्येक सैन्य दल जैसा बन सकें और इन देशों को ईश्वर के प्रेम और दिव्य शिक्षाओं के प्रकाश से आलोकित कर सके।

हे ईश्वर! तू उनका सम्बल और सहायक बन, और बियाबान में, पर्वत में, घाटी में, वनों में मैदानों और समुद्रों में तू उनका अंतरंग मित्र बन-जिससे वे दिव्य साम्राज्य और पावन चेतना के उच्छ्वास की शक्ति के द्वारा ऊँची पुकार लगा सकें।

सत्य ही, तू शक्तिशाली, सामर्थ्यश्वान और सर्वशक्तिमान है, और तू ही है सर्वप्रज्ञ, सब की सुनने वाला और दृष्टा है।

-अब्दुल-बहा

(पर्वत, मरुभूमि, समतल, अथवा समुद्र की राह जो कोई भी शिक्षण के उद्देश्य से भ्रमण कर रहा हो, उसे यह प्रार्थना करनी चाहिये।)

(81)

हे ईश्वर! हे मेरे ईश्वर! तू मेरी दुर्बलता, दीनता और विनम्रता को देखता है, फिर भी तेरी शक्ति और सामर्थ्य में भरोसा रखते हुए, मैंने तुझमें विश्वास किया है और तेरे सेवकों के मध्य तेरी शिक्षाओं के प्रसार के लिये मैं उठ खड़ा हुआ हूँ।

हे स्वामी, मैं एक पंख टूटा पक्षी हूँ और तेरे असीम अंतरिक्ष में उड़ान भरना चाहता हूँ। तेरी अनुकम्पा और कृपा, तेरी सम्पुष्टि और सहायता के बिना मेरे लिये ऐसा करना भला कैसे सम्भव होगा?

हे ईश्वर! मेरी दुर्बलता पर दया कर और अपनी सामर्थ्य की शक्ति मुझे दान दे। हे स्वामिन्! यदि पावन चेतना के उच्छ्वास सर्वाधिक निर्बल प्राणियों को भी सम्पुष्टि प्रदान कर दें तो वह जो भी चाहेगा प्राप्त कर लेगा, जो भी कामना करेगा उसे पा लेगा। निश्चय ही तूने पहले भी अपने सेवकों की सहायता की है। वे दुर्बलतम प्राणी थे, तेरे अकिंचन सेवक और धरती पर निवास करने वालों में निरीहतम थे, लेकिन तेरी कृपा और शक्ति के द्वारा उन्होंने

उनसे भी ऊँचा स्थान पा लिया, जो मानवजाति के बीच अत्यन्त प्रतापशाली और प्रतिष्ठित माने जाते थे। वे पहले पतंगे समान थे, शाही बाज बन गये, वे पतली जलधारा के समान थे, बन गये समुद्र से विशाल, क्योंकि तेरी कृपा के सहारे ही वे मार्गदर्शन के क्षितिज के जगमगाते सितारे बन गये, अमरता की गुलाब वाटिका के चहकते पंछी बन गये, ज्ञान और विवेक के जंगलों के दहाड़ते सिंह बन गये और महासागरों में तैरते महामत्स्य बन गये।

निश्चय ही तू करुणामय, शक्तिसम्पन्न, सार्मथ्यशाली और दयालुओं में सर्वाधिक दयालु है।

-अब्दुल-बहा

(82)

हे ईश्वर, मेरे ईश्वर! गुणगान हो तेरा, शत-शत नमन तुझे। तूने ही दिखलाई है राह मुझे उस राजमार्ग की जो सीधा है, किन्तु है बहुत लम्बा पथ; तूने ही इस पथ पर चलने के योग्य बनाया है, मेरी आँखों को नवीन प्रकाश दिया है अपनी आभा का, तूने ही रहस्यों के साम्राज्य से आने वाले पावन पक्षियों के कलरव को सुनने वाले कान दिये हैं और तूने ही न्यायनिष्ठों के मध्य अपने प्रेम से विभोर किया है। हे ईश्वर! अपनी चेतना के उच्छवासों से मेरा रोम-रोम को भर दे कि मैं देश-देशान्तर में सम्पूर्ण मानवजाति को तेरे आगमन का शुभ संदेश दे सकूँ, पृथ्वी पर तेरे साम्राज्य की स्थापना की बात बता सकूँ। हे ईश्वर, मैं निर्बल हूँ, अपनी शक्ति और सामर्थ्य से मुझे सबल बना। मैं अक्षम हूँ, अपनी स्तुति और गुणगान करने में मुझे सक्षम बना। मैं अधम हूँ, अपने साम्राज्य में प्रवेश देकर मुझे सम्मानित कर; मैं तुझसे अलग-थलग पड़ गया हूँ, अपनी दयालुता की पावन देहरी तक पहुँचने में मेरी सहायता कर। हे ईश्वर! मुझे एक देदीप्यमान दीपक बना दे, एक जगमगाता हुआ सितारा बना दे, फलों से भरा एक ऐसा वृक्ष बना दे जिसकी शाखाएँ फैलें। सत्य ही, तू शक्तिशाली, बलशाली, और अबाधित है।

-अब्दुल-बहा

(83)

हे ईश्वर! मेरे ईश्वर! यह एक पंख टूटा पंछी है और इसकी उड़ान बहुत धीमी है....इसकी सहायता कर कि यह समृद्धि और मुक्ति के सर्वोच्च शिखर पर उड़ान भर सके, इस असीम

अंतरिक्ष में परम आनन्द और सुख सहित सर्वत्र विचरण कर सके, सभी देशों-प्रदेशों में तेरे सर्वोपरि नाम का मधुरगान गुंजरित कर सके, तेरी पुकार सुन सके और तेरे मार्गदर्शन के संकेतों को समझ सके। हे ईश्वर, मैं अकेला, एकाकी और दीन हूँ। तेरे अतिरिक्त मेरा कोई पालनहार नहीं, अवलम्बन नहीं; तेरे अतिरिक्त कोई और सहारा नहीं है। देवदूतों के समूहों द्वारा मेरी सहायता कर; अपने शब्दों के प्रसार में मुझे विजयी बना और अपने लोगों के बीच तेरे ज्ञान का प्रसार कर सकूँ, मुझे इस योग्य बना। सत्य ही, तू निर्बल का बल; और असहायों का सदा सहाय है। सत्य ही तू शक्तिशाली, बलशाली और अबाधित है।

-अब्दुल-बहा

(ईश्वर की सुरभि का प्रसार करने वालों को प्रत्येक सुबह इस प्रार्थना का पाठ करना चाहिये।)

(84)

हे ईश्वर! मेरे ईश्वर! तू देखता है इस निर्बल को, तेरी दिव्य शक्ति की याचना करते हुए, इस निर्धन को, तेरी दैवी निधियों की कामना करते हुए इस प्यासे को, अनन्त जीवन-निर्झरनी की इच्छा लिये हुए इस पीड़ित को, उस आरोग्य की अभ्यर्थना करते हुए, जो तूने अपनी असीम कृपा के द्वारा अपने उच्च साम्राज्य में अपने चुने हुए जनों के लिये नियत की है। हे ईश्वर, तेरे अतिरिक्त मेरा कोई सहायक नहीं, तेरे अतिरिक्त मेरा कोई आश्रय नहीं, तेरे अतिरिक्त मेरा कोई पालनहार नहीं। अपने देवदूतों द्वारा मेरी सहायता कर कि मैं तेरी पावन सुरभि को सर्वत्र फैला सकूँ और देश-देशांतर में तेरे चुने हुए जनों के बीच तेरी शिक्षाओं का प्रसार कर सकूँ। हे मेरे ईश्वर! मुझे अपने सिवा अन्य सबसे अनासक्त होने की शक्ति दे, तेरी कृपा की डोर दृढ़ता से थामे रहूँ, ऐसी भक्ति दे, तेरे धर्म के प्रति पूरी तरह समर्पित रहूँ, ऐसी निष्ठा दे, तेरे प्रेम में समृद्ध और तूने अपने पावन ग्रंथ में जो भी निर्धारित किया है उसका पालन कर सकूँ, ऐसी दृढ़ता दे। सत्य ही, तू शक्तिशाली, सामर्थ्यवान और सर्वसम्पन्न है।

-अब्दुल-बहा

मध्यरात्रि की प्रार्थना

हे सत्य के खोजी! यदि तू चाहता है कि ईश्वर तेरे नेत्र खोल दें, तो तुझे अवश्य ही मध्यरात्रि में ईश्वर की स्तुति, उससे यह कहते हुए संलाप करना चाहिये:

हे स्वामी! मैंने अपना मुखड़ा तेरी एकता के साम्राज्य की ओर उन्मुख किया है और तेरी दया के सागर में निमग्न हूँ। हे स्वामी, इस अंधेरी रात में मेरी दृष्टि को अपनी परम ज्योति के अवलोकनार्थ, और मुझे इस अद्‌भुत युग में अपने प्रेम की मदिरा से आनन्दित कर दे। हे स्वामी, मुझे अपना आह्वान सुना, और मेरे समक्ष अपने स्वर्ग के द्वार खोल दे, ताकि मैं तेरी महिमा की ज्योति को देख सकूँ और तेरे सौन्दर्य के प्रति आकर्षित हो जाऊँ।

वास्तव में, तू दाता, उदार, दयावान, और क्षमाशील है।

-अब्दुल-बहा

स्तुति और कृतज्ञता

(85)

परमोच्च ईश्वर के नाम से! तू महिमावंत और प्रशंसित, सर्वशक्तिमंत है। तू वह है जिसके ज्ञान के समक्ष ज्ञानीजन भी नगण्य दिखते हैं, पराजित हो जाते हैं, जिसके ज्ञान के समक्ष विद्वान भी अपनी अज्ञानता स्वीकारते हैं, जिसकी सामर्थ्य के समक्ष धनवान भी अपनी निर्धनता की साक्षी देते हैं, जिसके प्रकाश के समक्ष प्रज्ञावान भी अंधकार में खो जाते हैं, जिसके ज्ञान के मंदिर की ओर समस्त ज्ञान और समस्त बोध का सार उन्मुख होता है और जिसकी उपस्थिति के अभयस्थल के चतुर्दिक समस्त मानवजाति की आत्माएँ परिक्रमा करती हैं।

तब मैं भला कैसे तेरे उस सारतत्व का उल्लेख और महिमा गान कर सकता हूँ जिसको समझने में विद्वान और ज्ञानीजन भी असफल रहे हैं, क्योंकि बिना समझे कोई भी मनुष्य उसकी महिमा गान नहीं कर सकता, न ही वह उसका वर्णन कर सकता है जहाँ तक वह पहुँच नहीं पाया है, जबकि तू तो शाश्वतकाल से अगम्य और अगोचर रहा है। भले ही मैं तेरी महिमा के आकाश और तेरे ज्ञान के साम्राज्य की ऊँचाई तक उड़ान भरने में अशक्त हूँ, लेकिन मैं तेरी उन कृतियों का वर्णन कर सकता हूँ, जो तेरे शिल्प की कथा कहते हैं। तेरी महिमा की सौगंध! हे समस्त हृदयों के परम प्रियतम! मात्र तू ही मेरे आकुल प्राणों की वेदना शांत कर सकता है। यदि आकाश और धरती के सभी निवासी मिलकर भी तेरे चिन्हों के उस सूक्ष्मतम अंश की महिमा का गान करने का प्रयास करें जिसके द्वारा तूने स्वयं को प्रकट किया है, तब भी वे असफल रहेंगे, फिर तेरे पावन शब्दों का कितना अधिक गुणगान होगा जो तेरे समस्त चिन्हों के जनक हैं।

समस्त स्तुति और महिमा तेरी हो ! तू, जिसकी सभी वस्तुओं ने साक्षी दी है कि तू ही है एक सत्य और तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है, तू सदासर्वदा से सभी तुलनाओं और उपमाओं से परे है। सभी सम्राट तेरे सेवक हैं और सभी गोचर और अगोचर वस्तुएँ तेरे समक्ष अकिंचन मात्र हैं। तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है, कृपालु, शक्तिशाली, परमोच्च !

- बहाउल्लाह

(86)

सर्व स्तुति हो तेरी, हे मेरे ईश्वर! तू, जो समस्त महिमा और भव्यता, महानता और गौरव, सम्प्रभुता और साम्राज्य, उच्चता और कृपालुता, विस्मय और शक्ति का स्रोत है। जिसे तू चाहता है उसे अपने परम महान सिंधु को स्वीकारने का सौभाग्य प्रदान करता है। और जिसे तू चाहता है उसे अपने परम महान नाम को स्वीकारने का सौभाग्य प्रदान करता है। आकाश और धरती के समस्त वासियों में से कोई भी तेरे तेरी सम्प्रभु इच्छा को पूरा होने से रोक नहीं सकता। अनादि काल से तूने सम्पूर्ण सृष्टि पर शासन किया है और करता रहेगा तेरा ही अधिपत्य सदा समस्त सृजित वस्तुओं पर है। सर्वसामर्थ्यवान, परम उदात्त सर्वशक्तिशाली सर्वप्रज्ञ के अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है।

हे स्वामी! अपने सेवकों के मुखड़ों को दीप्त कर दे और उनके हृदय को निर्मल कर दे कि वे तेरे दिव्य अनुग्रहों की ओर उन्मुख हो सकें और पहचान सकें उसे जो तेरा और तेरे दिव्य सारतत्व का उद्गमस्थल है। वस्तुतः, तू ही समस्त लोकों का स्वामी है! तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं, अबाधित, सर्ववशकारी।

-बहाउल्लाह

(87)

स्तुति हो तेरे नाम की, हे स्वामी, मेरे ईश्वर! तू वह है जिसकी सभी वस्तुएँ आराधना करती हैं, जो किसी की भी आराधना नहीं करता, जो सबका स्वामी है, जो किसी के अधीन नहीं है, जो सबका ज्ञाता है और जो किसी को भी ज्ञात नहीं है। तूने मनुष्यों के मध्य अपनी पहचान करानी चाही थी इसलिये अपने मुख से निकले एक शब्द से तूने सृष्टि को अस्तित्व दिया था, ब्रह्माण्ड को स्वरूप दिया था। तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है, स्वरूपदाता, स्रष्टा, सामर्थ्यवान्, सर्वशक्तिवान्। तेरी इच्छा के क्षितिज पर प्रकाशमान इस एक शब्द के माध्यम से मैं तुझसे याचना करता हूँ कि मुझे उस जीवन-जल को ग्रहण करने के योग्य बना जिसके द्वारा तूने अपने प्रियजनों के हृदयों को अनुप्रणित और आत्माओं को चैतन्य किया है; ताकि मैं हर समय प्रत्येक परिस्थिति में पूर्णतया तेरी ही ओर उन्मुख रहूँ। तू शक्ति, महिमा और कृपा का ईश्वर है। तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है, तू सर्वोच्च शासक, महिमावंत, सर्वदर्शी है।

- बहाउल्लाह

(88)

महिमावंत है तू, हे स्वामी, मेरे ईश्वर! मैं तेरा आभार प्रकट करता हूँ कि तूने मुझे अपने प्रकटरूप को पहचानने और अपने शत्रुओं से विरत होने योग्य बनाया है; और तेरे दिनों में उनके, द्वारा किये गये दुष्कर्मों को मेरे सम्मुख खोलकर रख दिया है और उनके प्रति मुझे आसक्तियों से मुक्त किया है और पूर्णतया तेरी दया और कृपामय अनुग्रहों की ओर उन्मुख होने में समर्थ बनाया है। मैं इसके लिये भी तेरा आभार प्रकट करता हूँ कि तूने अपनी इच्छा के मेघों द्वारा मुझ तक वह भेजा है जिसने मुझे अधर्मियों के संकेतों और अविश्वासियों के भ्रांत विचारों से इतना मुक्त कर दिया है कि मैंने अपना हृदय दृढ़ता से तुझमें लगा लिया है और ऐसे लोगों से दूर भाग आया हूँ जिन्होंने तेरे मुखारबिन्द के प्रकाश को नकार दिया है। तब मैं पुनः तेरा आभार प्रकट करता हूँ कि तूने मुझे अपने प्रेम में दृढ़ रहने का, तेरी स्तुति करने का, तेरा गुणगान करने का, और तेरे उस कृपा-पात्र से पान करने का अवसर दिया है जो सभी दृश्य और अदृश्य वस्तुओं के परे है। तू सर्वशक्तिशाली, परम उदात्त, सर्वमहिमाशाली, सभी को प्रेम करने वाला है।

- बहाउल्लाह

सभाएँ

(89)

महिमावंत है तू हे मेरे स्वामी, मेरे ईश्वर! तेरी कृपा के पवन झकोरों के नाम से और उनके नाम से जो तेरे उद्देश्य के दिवानक्षत्र और तेरी प्रेरणा के उद्गम हैं, मैं याचना करता हूँ कि मुझ पर और उन सब पर, जो तेरी ओर उन्मुख हुए हैं, वह भेज जो तेरी उदारता और आशीषयुक्त कृपा के समीचीन हो और तेरे वरदानों और अनुग्रह के अनुकूल हो। मैं एकाकी और दीन हूँ, हे मेरे स्वामी! अपनी सम्पदा के सागर में मुझे निमग्न कर ले, प्यासा हूँ, अपनी स्नेहिल कृपा के जीवन-जल का पान करने दे।

तेरे ही नाम से और उसके नाम से जिसे तूने अपने अस्तित्व का प्रकटरूप बनाया है और आकाश तथा धरती पर जो भी हैं उन्हें अपने दिव्य शब्द का बोध कराया है, मैं याचना करता हूँ कि अपने विधान के वृक्ष की छाया तले अपने सेवकों को एकत्र कर और तब इसके मधुर फल का स्वाद लेने दे, इसके पत्तों के स्पंदन से उत्पन्न होने वाले सुमधुर स्वर को समझने और इसकी शाखाओं पर चहकने वाले दिव्य पक्षी के कलरव को सुनने के योग्य बना। तू सत्य ही, संकट में सहायक, पहुँच से परे, सर्वशक्तिशाली और परम कृपालु है।

- बहाउल्लाह

(90)

हे तू दयालु ईश्वर! ये तेरे सेवक हैं जो इस सभा में एकत्रित हुए हैं, तेरे साम्राज्य की ओर उन्मुख हैं और तेरे उपहार तथा आशीर्वाद की कामना करते हैं। हे ईश्वर जीवन के यथार्थ में निहित एकता के अपने चिन्हों को प्रमाणित और प्रकट कर। उन गुणों को प्रकट और प्रत्यक्ष कर जो मानवीय यथार्थों में अप्रकट तथा गुप्त रखे गये हैं।

हे ईश्वर, हम पौधों की भाँति हैं और तेरी कृपा वर्षा के समान है। इन पौधों को नवस्फूर्ति प्रदान कर, इन्हें अपने आशीष से विकसित कर। हम तेरे सेवक हैं, हमें भौतिक अस्तित्व की बेड़ियों से मुक्त कर। हम अज्ञानी है, हमें ज्ञानी बना। हम मृत हैं, हमें जीवन दे। हम जड़ हैं, हमें चैतन्य बना। हम वंचित हैं, हमें अपने रहस्यों का बोध करा। हम दीन हैं, हमें अपने असीम कोष से समृद्धि और आशीष प्रदान कर।

हे ईश्वर, हमें पुनर्जीवित कर, दृष्टि तथा श्रवण शक्ति प्रदान कर, जीवन के रहस्यों से परिचित करा, ताकि अस्तित्व के प्रत्येक लोक में तेरे साम्राज्य के रहस्य हम पर प्रकट हों और हम तेरी एकमेवता के साक्षी बन सकें। तू ही प्रत्येक कृपा का स्रोत है। तू समर्थ, शक्तिसम्पन्न, दाता, सदा कृपालु है।

-अब्दुल-बहा

(91)

हे तू कृपालु ईश्वर! हे तू, जो समर्थ और शक्तिशाली है। हे तू परम दयालु पिता! ये सेवक तेरी ओर उन्मुख होकर, तेरी पावन देहरी का स्मरण करते हुए और तेरे महान आश्वासन की अनन्त कृपा की कामना करते हुए एकत्रित हुए हैं। तुम्हारी सुप्रसन्नता के अतिरिक्त इनका और कोई उद्देश्य नहीं है। मानव-सेवा के अतिरिक्त इनका और कोई उद्देश्य नहीं है।

हे ईश्वर! इस सभा को दीप्त कर। इनके हृदयों को दयावान बना। पावन चेतना के आशीष इन्हें प्रदान कर। दिव्य शक्ति से इन्हें विभूषित कर। इन्हें दिव्य विवेक का आशीष दे। इनकी निष्ठा बढ़ा ताकि पूर्ण विनम्रता और सम्पूर्ण समर्पण की भावना के साथ ये तेरे साम्राज्य की ओर उन्मुख हो सकें और मानव-सेवा में लगे रहें। इनमें से प्रत्येक प्रकाशित दीप बने। इनमें से प्रत्येक जगमगाता सितारा बने। इनमें से प्रत्येक ईश्वर के साम्राज्य के सुन्दर रंग और सुरभि के संवाहक बनें।

हे दयालु पिता! अपने आशीष भेज। हमारे दोषों को न देख। अपनी सुरक्षा में हमें आश्रय दे। हमारे पापों को क्षमा कर। अपनी कृपा से हमें आरोग्य प्रदान कर। हम शक्तिविहीन हैं, तू शक्तिशाली है। हम दरिद्र हैं, तू सम्पन्न है ! हम रोगग्रस्त हैं, तू दिव्य चिकित्सक है! हम आवश्कताग्रस्त हैं, तू परम उदार है!

हे ईश्वर ! अपने मंगलविधान से हमें विभूषित कर। तू शक्तिशाली है ! तू कल्याणकारी है ! तू दाता है!

-अब्दुल-बहा

(92)

हे मेरे ईश्वर! हे मेरे ईश्वर! सत्य ही, ये सेवक तेरी ओर उन्मुख हो रहे हैं, तेरी दया के साम्राज्य की याचना कर रहे हैं। सत्य ही ये तेरी पावनता के प्रति आकर्षित हुए हैं और तेरे प्रेम की ज्वाला से दीप्त हो उठे हैं, तेरे महिमामय लोक की दया की कामना कर रहे हैं और

तेरे दिव्य साम्राज्य में प्रवेश पाने की आशा रखते हैं। सत्य ही, ये तेरे आशीषों की वर्षा की कामना करते हैं और सत्य सूर्य से प्रकाशित होने की इच्छा रखते हैं। हे ईश्वर, इन्हें देदीप्यमान दीपक बना दे। ऐसा वर दे कि ये तेरे योग्य बन सकें, तेरे प्रेम की डोर से बंध सकें और तेरी अनुकम्पा का प्रकाश पा सकें। हे स्वामी ! इन्हें मार्गदर्शन के चिन्ह बना, अपने शाश्वत साम्राज्य का आदर्श प्रतिरूप बना, अपने कृपासागर की उत्ताल तरंगें बना, अपनी भव्यता के प्रकाश को प्रतिबिम्बित करने वाला दर्पण बना।

सत्य ही, तू उदार, दयामय, अनमोल, परम प्रियतम है।

-अब्दुल-बहा

(93)

हे तू क्षमाशील स्वामी ! तेरे ये सेवक, तेरे साम्राज्य की ओर उन्मुख हो रहे हैं और तेरी अनुकम्पा और दया की कामना कर रहे हैं। हे ईश्वर, इनके हृदयों को निर्मल और पावन कर दे ताकि ये तेरे प्रेम के योग्य बन सकें। इनकी चेतना को शुद्ध एवं पवित्र कर दे ताकि सत्य सूर्य का प्रकाश इनमें चमक सके। इनके नेत्र इस योग्य बना दे कि ये तेरे प्रकाश का अवलोकन कर सकें, इन्हें अपने साम्राज्य की पुकार सुनने के योग्य बना दे।

हे स्वामी, यह सत्य है कि हम दीन-हीन हैं, लेकिन तू तो सर्वसम्पन्न है। हम याचक हैं, तू वह है जिसकी याचना सभी करते हैं। हे स्वामी! हम पर दया कर, हमें क्षमा कर दे, हमें ऐसी शक्ति और सामर्थ्य दे कि हम तेरी अनुकम्पाओं के योग्य बन सकें और तेरे साम्राज्य की ओर आकर्षित हो सकें, ताकि हम जी भरकर कर जीवन-जल का पान सकें, तेरे प्रेम की ज्वाला से प्रदीप्त हो उठें और इस प्रकाश से भरे दिवस में पावन चेतना की सांसों के सहारे पुनर्जीवित हो उठें।

हे ईश्वर, मेरे ईश्वर! इस सभा पर अपनी प्रेम भरी कृपालुता की दृष्टि डाल। इनमें से प्रत्येक को अपना संरक्षण प्रदान कर, अपने अधीन रख। अपने दिव्य आशीष इन्हें प्रदान कर। इन्हें अपने कृपासागर में निमग्न कर दे और अपनी पावन चेतना की सांसों द्वारा इन्हें नवजीवन प्रदान कर।

हे स्वामी! इस न्यायसंगत सभा को अपनी अनुकम्पायुक्त सहायता प्रदान कर, अपने आशीषों से सम्पुष्ट कर। ये राष्ट्र तेरे संरक्षण की आश्रय दायिनी छाया तले हैं और ये लोग तेरी ही सेवा में संलग्न हैं। हे स्वामी! इन्हें अपने दिव्य आशीष प्रदान कर और अपनी भरपूर

अनुकम्पा से इन्हें भर दे। अपने साम्राज्य में इन्हें स्वीकारे जाने योग्य बना। तू शक्तिशाली, सर्वसमर्थ, दयालु और भरपूर अनुकम्पा का स्वामी है।

-अब्दुल-बहा

(94)

हे दिव्य विधाता! यह सभा तेरे उन सहचरों की है, जो तेरे सौन्दर्य के प्रति आकर्षित हुए हैं और जिनके अंततर्म में तेरे प्रेम की ज्वाला धधक रही है। इन आत्माओं को स्वर्गिक देवदूत जैसा बना दे, नवजीवन दे कर इन्हें अपनी पावन चेतना से प्रखर कर, इनकी वाणी को ओज प्रदान कर, इन्हें संकल्प भरे हृदय दे, इन्हें दिव्य शक्ति से इस योग्य बना कि ये तेरी कृपा का भाग ग्रहण कर सकें, इन्हें मानवजाति की एकता का प्रवर्तक बना और मानव-संसार में प्रेम और मैत्री का संवाहक बना, ताकि सत्य के सूर्य के प्रकाश से ज्ञानविहीन पूर्वाग्रह का घातक अंधकार दूर हो सके, शोक-संतापों से भरा यह संसार ज्ञान के प्रकाश से दीप्त हो उठे और यह भौतिक जगत अपने में आध्यात्मिक लोक की किरणें समाहित कर ले, विविध रंग मिलकर एक रंग हो जायें और इनके द्वारा की गई प्रार्थना का स्वर माधुर्य तेरी पावनता के साम्राज्य तक पहुँच सके। सत्य ही, तू सर्वसमर्थ और सर्वशक्तिशाली है।

-अब्दुल-बहा

सहायता

(95)

हे तू, जिसका मुखड़ा मेरी आराधना का लक्ष्य है, जिसका सौन्दर्य मेरा अभयस्थल है, जिसका आवास मेरा ध्येय है, जिसकी स्तुति मेरी आशा है, जिसका मंगल विधान मेरा सहचर है, जिसका प्रेम मेरे अस्तित्व का कारण है, जिसका स्मरण मेरी आशा है, जिसकी निकटता मेरी इच्छा है, जिसकी समीपता मेरी सर्वाधिक प्रिय इच्छा और सर्वोच्च आकांक्षा है। मैं तुझसे प्रार्थना करता हूँ कि मुझे उन वस्तुओं से वंचित न कर, जिसका विधान तूने अपने चुने हुए सेवकों के लिये किया है। अतः, मुझे इहलोक और परलोक का शुभ प्रदान कर।

सत्यतः, तू ही, समस्त मानवजाति का सम्राट है। तू सदा क्षमाशील, परम उदार है, तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है !

- बहाउल्लाह

(96)

मेरे ईश्वर, मेरे आराध्य, मेरे राजाधिराज, मेरी कामना! कौन सी जिह्वा तेरा धन्यवाद कर सकती है। मैं असावधान था, तूने मुझे जगाया। मैं तुझसे विमुख हो गया था, तूने मुझे अपनी ओर उन्मुख होने में सहायता दी, मैं तो मृतप्राय था, तूने मुझे जीवन के जल से चैतन्य किया। मैं मुरझा गया था, तूने उस सर्वदयामय की लेखनी से प्रवाहित अपनी वाणी की दिव्य धार से फिर से जीवन का दान दिया।

हे दिव्य मंगल विधान! समस्त अस्तित्व तेरे दातारपन से उत्पन्न हुए हैं, उसे अपनी उदारता के जल से वंचित मत कर और न ही तू उसे अपनी दया के महासिंधु तक आने से रोक। मैं तुझसे याचना करता हूँ कि सभी कालों और सभी परिस्थितियों में मुझे सहारा दे, मेरी सहायता कर। मैं तेरी कृपा के आकाश से तेरी उस पुरातन कृपा की कामना करता हूँ। तू सत्य ही, अक्षय सम्पदाओं का ईश्वर है और चिरंतनता के साम्राज्य का सम्प्रभु स्वामी है।

- बहाउल्लाह

(97)

हे ईश्वर! हम दयनीय हैं, हमें अपनी दया का दान दे। हम दरिद्र हैं, अपनी सम्पदा के महासागर से हमें एक अंश प्रदान कर; हम अभावग्रस्त हैं, हमारी आवश्यकता पूरी कर; हम पतित हैं, अपनी महिमा प्रदान कर। नभचर के पक्षी और धरती के पशु प्रतिदिन अपना आहार तुझसे ही प्राप्त करते हैं, और सभी प्राणी तेरी सार-सम्भाल और प्रेमपूर्ण कृपालुता का भाग पाते हैं।

इस निर्बल को अपनी अलौकिक कृपा से वंचित न कर और इस असहाय आत्मा को अपनी शक्ति के द्वारा अपनी अक्षय सम्पदाओं का दान दे।

हमें हमारा नित्य-प्रति का आहार प्रदान कर और हमारे जीवन की आवश्यकताओं को अपनी ऋद्धि-सिद्धि का दान दे, जिससे हम तेरे सिवा अन्य किसी पर निर्भर न रहें, पूर्णतया तेरे ही स्मरण में लीन रहें, तेरे पथ पर चलें, और तेरे रहस्यों को उजागर करें। तू सर्वशक्तिमान, सबको प्रेम करने वाला और मानवजाति का पालनहार है।

-अब्दुल-बहा

(98)

हे मेरे ईश्वर, मेरे स्वामी और मेरे मालिक! मैंने अपने बंधु-बाँधवों से स्वयं को अनासक्त कर लिया है और तेरे माध्यम से धरती पर निवास करने वालों से स्वतंत्र होने की इच्छा की है; सदा वह प्राप्त करने के लिये तत्पर रहा हूँ जो तेरी दृष्टि में प्रशंसनीय है। मुझे वह शुभ प्रदान कर जो मुझे तेरे अतिरिक्त अन्य सभी से स्वतंत्र कर दे तथा मुझे अपने अपार अनुग्रहों का प्रचुर हिस्सा प्रदान कर। वस्तुतः तू अपार कृपा का स्वामी है।

- बाब

(99)

हे तू दयालु ईश्वर! हम तेरी पावन देहरी के सेवक हैं, तेरे पावन द्वार का आश्रय लिये हुए हैं। हम इस सुदृढ़ स्तम्भ के अतिरिक्त अन्य किसी की आश्रय की चाह नहीं रखते, तेरी सुरक्षा भरी देखभाल के अतिरिक्त किसी अन्य आश्रय की ओर नहीं मुड़ते। अतः हमारी रक्षा कर, हमें आशीष दे, हमें सहारा दे। हमें ऐसा बना दे कि जो तुझे प्रिय है उसके अतिरिक्त किसी अन्य से प्रेम न करें, केवल तेरी ही स्तुति करें, सदा सत्य के मार्ग पर चलें,

हम इतने समृद्ध हो जायें कि तेरे अतिरिक्त अन्य सभी को त्याग सकें, हम तेरी कृपा के सागर से अपना भाग पायें, हम तेरे धर्म को उच्चता प्रदान करने और तेरी सुमधुर सुरभि को दूर-दूर तक फैलाने के प्रयासों में जुट जायें, हम अपने अहम् को भूल जायें और केवल तुझमें ही रम जायें और तेरे अतिरिक्त अन्य सब का त्याग कर तुझमें ही तल्लीन रहें।

तू दाता, क्षमाशील है! हमें अपनी अनुकम्पा और स्नेहिल कृपा प्रदान कर, अपने उपहार दे, हमारा पोषण कर, ताकि हम अपने लक्ष्य को पा सकें। तू शक्तिसम्पन्न, सुयोग्य, ज्ञाता और दिव्य द्रष्टा है। सत्य ही तू उदार है, सत्य ही तू सर्वकृपालु है और सत्य ही तू सदा क्षमाशील है। तू वह है जिसके समक्ष पश्चाताप करने वाले के समस्त पापों को भी तू क्षमा का दान दे देता है।

-अब्दुल-बहा

(100)

हे स्वामी! तेरे नाम पर बिछाये गये इस आनन्दमय पटल को हटा मत और उस प्रज्वलित शिखा को, जो तेरी कभी न बुझने वाली अग्नि द्वारा प्रज्वलित की गई है, बुझा मत। उस प्रवाहमान जीवंत जल को, जो तेरी महिमा और तेरे स्मरण की सुमधुर ध्वनि को गुंजरित करते हैं, प्रवाहित होने से मत रोक और अपने सेवकों को अपने प्रेम से सुवासित तेरी मधुर सुगंध की सुरभि से वंचित मत कर।

हे स्वामी! अपने विशुद्धजनों की कष्टदायक चिन्ताओं को दूर कर, उनकी कठिनाइयों को सुख में, उनके अपमान को महिमा में, उनके शोक को आनन्द में बदल दे। हे तू, जो अपनी मुट्ठी में सम्पूर्ण मानवता की नियति की ड़ोर थामे हुए है। तू सत्य ही एकमेव, सामर्थ्यशाली, सर्वज्ञाता, सर्वप्रज्ञ है।

-अब्दुल-बहा

(101)

हे मेरे ईश्वर, मेरे प्रियतम, मेरी आकांक्षा! मेरे एकाकीपन में मेरा सखा और मेरी इस निष्कासित अवस्था में मेरा संगी बन, मेरे शोक का निवारण कर, ऐसी कृपा कर कि मैं तेरी कीर्ति को समर्पित हो जाऊँ। अपने अतिरिक्त अन्य सब कुछ से मुझे विरक्त कर दे। अपनी पावनता की सुरभि द्वारा मुझे आकर्षित कर ले। ऐसी कृपा कर कि मैं तेरे लोक में

उनका संगी बनूं, जो तुझे छोड़ अन्य सभी से अनासक्त हैं, जो तेरी पावन देहरी की सेवा की कामना रखते हैं, और जो तेरे धर्म का कार्य करने के लिये कटिबद्ध खड़े हैं। मुझे सामर्थ्य दे कि मैं तेरी उन सेविकाओं में एक बन जाऊँ, जिन्होंने तेरी मंगलमय प्रसन्नता प्राप्त की है। सत्य ही, तू कृपालु, उदार है।

-अब्दुल-बहा

(102)

हे दिव्य विधानकर्ता! हम दया के पात्र हैं, हमें अपनी सहायता दे, घर विहीन बटोही हैं हम, अपनी शरण का दान दे, बिखरे हुए हैं हम, तू हमें एक कर दे, हम भटके हुए राही हैं, अपनी शरण में ले ले हमें, हम वंचित हैं, हमें अपना अंश मात्र दे दे, हम प्यासे हैं, हमें जीवन-सरिता की राह दिखा दे, हम दुर्बल हैं, हमें सबल बना दे, ताकि हम तेरे धर्म की सहायता हेतु उठ खड़े हों और तेरे मार्गदर्शन की राह पर चलकर अपना जीवन न्योछावर कर सकें।

-अब्दुल-बहा

(103)

हे ईश्वर! हम निर्बल हैं, हमें सबल बना। हम अज्ञानी हैं, हमें ज्ञानवान बना। हे स्वामी ! हम दरिद्र हैं, हमें सम्पन्न बना। हे ईश्वर! हम प्राणहीन हैं, हमें चैतन्य से अनुप्राणित कर। हे स्वामिन्! हम मूर्तिमान दीनता हैं, अपने साम्राज्य में हमें महिमावन्त बना! हे ईश्वर! यदि तू हमें सहायता नहीं देगा तो हम मिट्टी से भी अधम बन जायेंगे। हे स्वामी! हमें शक्तिमय बना, हे ईश्वर! हमें विजय प्रदान कर। हे ईश्वर, हमें अहम् को जीतने और वासनाओं को वश में करने में समर्थ बना। हे स्वामी! इस भौतिक जगत के बंधनों से हमें मुक्त कर। हे स्वामी! अपनी पावन चेतना के उच्छवास से हममें जीवन का चैतन्य भर, जिससे हम तेरी सेवा करने को उठ खड़े हों, तेरी उपासना में संलग्न हो जायें, और अत्यधिक सत्यनिष्ठा सहित, तेरे राज्य की सेवा के प्रयासों में जुट जायें। हे ईश्वर! तू शक्तिशाली, क्षमाशील, करूणामय है!

-अब्दुल-बहा

(104)

कहो, हे ईश्वर! मेरे ईश्वर! मेरे मस्तक को न्याय के मुकुट से और मेरे ललाट को समता के आभूषण से विभूषित कर दे। तू सत्य ही, वरदानों और अक्षय सम्पदाओं का अधीश्वर है।

- बहाउल्लाह

(105)

हे ईश्वर! तेरे परम महिमाशाली नाम पर मैं तुझसे याचना करता हूँ कि तू उस कार्य में मेरी सहायता कर जो तेरे सेवकों के कार्यकलापों को ऋद्धि-सिद्धि दे और तेरे नगरों को समृद्धि दे। सत्य ही, तेरी शक्ति का आधिपत्य सभी वस्तुओं पर है।

- बहाउल्लाह

(106)

हे तुम, जो ईश्वर की ओर उन्मुख हो रहे हो! अपने नेत्र अन्य सभी वस्तुओं के प्रति मूंद लो और उस सर्वमहिमामय के साम्राज्य के प्रति उन्हें खोल लो। तुम्हारी जो कुछ भी कामना हो, केवल एक उसी से मांगो, जो कुछ भी तुम पाना चाहो, केवल उसी से याचना करो। एक दृष्टि में ही वह लाखों आशाओं की पूर्ति करता है, एक नज़र से ही वह हर घाव पर शीतल मरहम लगा देता है, एक संकेत मात्र से ही वह शोक की बेड़ियों से हृदयों को सदा के लिए मुक्त कर देता है। वह जो करता है, करता ही है और हमारे पास कौन सा उपाय है? जो उसकी इच्छा होती है वह उसे पूरा करता है, जो उसे प्रिय होता है वह वैसा ही विधान प्रकट करता है। तब तुम्हारे लिये यही उचित है कि तुम अधीनता में अपना सर झुका लो और सर्वदयामय ईश्वर में सम्पूर्ण भरोसा रखो।

-अब्दुल-बहा

संविदा में अडिगता

(107)

महिमा हो तेरी, हे ईश्वर, मेरे ईश्वर! तेरे नाम से मैं तुझसे याचना करता हूँ जिसके द्वारा तूने अपने मार्गदर्शन की ध्वजाओं को उच्च किया है और अपनी स्नेहमयी कृपालुता की कीर्ति-प्रभा बिखेरी है और अपने स्वामित्व की सत्ता को प्रकट किया है, जिसके द्वारा अपने नामों का दीपक अपने गुणों के निवास में तूने आलोकित किया है; और जिसके द्वारा वह, जो तेरी एकता का मण्डप-वितान और अनासक्ति का मूर्तरूप है, प्रकट हुआ है; जिसके माध्यम से तेरे मार्गदर्शन के पथों का ज्ञान हुआ है, तेरी प्रसन्नता के मार्ग रेखांकित किये गये हैं, जिसके द्वारा पाप करने वालों की नींव हिला दी गई है और दुष्टता के चिन्ह मिटा दिये गये हैं, जिसके द्वारा प्रज्ञा के निर्झर स्रोत प्रगट हुए हैं और दिव्य भोज की पाती भेजी गई है, जिसके द्वारा तूने अपने सेवकों को सुरक्षित किया है और अपनी सुकोमल दया उनके प्रति प्रकट की है और अपने प्राणियों के मध्य अपनी क्षमाशीलता दिखाई है, उसके नाम से मैं तुझसे याचना करता हूँ कि जो दृढ़ बना रहा है और जो तुझ तक वापस लौट आया है और तेरी दया की डोर थामे हुए है और तेरे प्रेमपूर्ण मंगल-विधान के परिधान की छोर से जुड़ा रहा है, उसे सुरक्षित रख और उसे तेरे द्वारा प्रदान की गई निरन्तरता से, और तेरी इस उदात्त सत्ता से प्रदत्त प्रशांतता से मंडित कर। तू निश्चय ही आरोग्यदाता, संरक्षणदाता, सहायक, सर्वशक्तिमान, बलशाली, सर्वमहिमामय, सर्वज्ञाता है।

- बहाउल्लाह

(108)

महिमा हो तेरी, हे अनन्तता के सम्राट, राष्ट्रों के निर्माता और प्रत्येक जर्जर होती अस्थि के स्वरूपदाता! मैं तेरे उस नाम से प्रार्थना करता हूँ, जिसके द्वारा तूने समस्त मानवता का अपनी भव्यता और महिमा के क्षितिज की ओर आह्वान किया है, और अपने सेवकों को अपनी गरिमा और अनुकम्पा के प्रांगण की राह दिखलाई है, कि तू मेरी गिनती उनमें कर जिन्होंने स्वयं को तेरे सिवा अन्य सभी कुछ से अनासक्त कर लिया है; और तेरी ओर बढ़ चला है और जिन्हें तेरे द्वारा भेजी गई परीक्षायें भी तेरे उपहारों की दिशा में मुड़ने से रोक नहीं पायी हैं। हे मेरे ईश्वर! तेरी कृपा की डोर को दृढ़ता से थामे हुए मैं तेरे अनुग्रह के परिधान के आंचल के लिपटा हुआ हूँ। अतः, मेरे ऊपर अपनी उदारता के मेघों से वर्षा कर

जो मुझे तेरे अतिरिक्त अन्य सभी के स्मरण से मुक्त कर दे और मुझे उसकी ओर उन्मुख होने के योग्य बना दे जो समस्त मानवजाति की आराधना का लक्ष्य है; जिसके विरूद्ध द्रोह भड़काने वालों, संविदा तोड़ने वालों और तुझ पर और तेरे चिन्हों पर अविश्वास करने वालों ने व्यूह रचना की है।

हे मेरे स्वामी, अपने दिवसों में मुझे अपने परिधान की सुरभि से वंचित न कर और अपने मुखड़े के प्रभापुंजों के प्रकटीकरण की घड़ी में अपने धर्म प्रकाशन के उच्छवासों से मुझे अलग न रख। तू जैसा चाहे वैसा करने में समर्थ है। तेरी इच्छा का उल्लंघन कोई भी नहीं कर सकता और न ही जिसे तूने अपनी शक्ति से निर्मित किया है, उसे कोई विफल कर सकता है।

तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है, सर्वसमर्थ, सर्वप्रज्ञ।

- बहाउल्लाह

(109)

वह सर्वशक्तिशाली, क्षमाशील, करुणामय है! हे ईश्वर मेरे ईश्वर! तू देखता है अपने इन सेवकों को जो द्रोह और भूलों की गर्त में पड़े हैं, तेरे दिव्य मार्गदर्शन की वह ज्योति कहाँ है? हे तू, विश्व की कामना! तू उनकी निस्सहायता और निर्बलता को जानता है। तेरी शक्ति कहाँ है, जिसके अधीन धरती और आकाश की समस्त शक्ति है?

तेरी स्नेहिल दया के प्रकाश के तेज के नाम से, तेरी प्रज्ञा के महासागर की तरंगों के नाम से, तेरी उस वाणी के नाम से, जिसने अपने साम्राज्य के जनों पर अपना आधिपत्य स्थापित किया है, मैं याचना करता हूँ, हे मेरे स्वामी! कि तू मुझको वर दे कि मैं उनमें से एक बनूं जिन्होंने तेरे ग्रंथ में विहित आदेशों का पालन किया है। मेरे लिये उसका विधान कर, जिसका विधान तूने अपने विश्वासपात्र सेवकों के लिये किया है, जिन्होंने तेरे कृपा-पात्र से दिव्य प्रेरणा की मदिरा का पान किया है और जो तेरी प्रसन्नता के लिये, तेरी संविदा में अडिग रहे हैं और तेरे विधानों के पालन की ओर अग्रसर हुए हैं। तू जैसा चाहे वैसा करने में समर्थ है। तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं, तू सर्वज्ञ, सर्वप्रज्ञ है।

हे स्वामी अपनी कृपा से मेरे लिये उसका आदेश दे जो इहलोक और परलोक में मुझे समृद्ध बनाये और तेरे निकट ले आये। हे तू, जो सभी मनुष्यों का स्वामी है ! तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है, एकमेव, शक्तिमान, महिमावंत।

- बहाउल्लाह

(110)

हे मेरे ईश्वर! अपनी राह में हमारे पगों को अडिग बना, हमारे हृदयों को अपने आदेश के पालन में समर्थ बना। अपनी एकता के सौन्दर्य की ओर हमें उन्मुख कर और हमारे अन्तर्मन को अपनी दिव्य एकता के चिन्हों से आह्लादित कर दे। अपनी कृपा के परिधान से हमारी काया को सजा दे। हमारी आँखों के सामने से पाप कर्मों के पर्दे हटा दे और हमें अपनी कृपा का वह पात्र दे जिससे तेरी भव्यता की अनुभूति कर सभी तेरी स्तुति करने लगें। अपनी कृपालु जिह्वा और अपने रहस्यमय अस्तित्व से तब वह प्रकट कर, हे मेरे ईश्वर, कि हमारी आत्माएँ प्रार्थना के अतिरेक से भर उठें और सभी पदार्थ तेरे प्रकटीकरण के प्रभापुंज के समक्ष अस्तित्वहीन हो जायें; ऐसी प्रार्थना जो शब्दों, स्वरों और समस्त संकेतों से परे, हृदय से निकली हो। हे ईश्वर, ये वे सेवक हैं जो तेरी संविदा और तेरे विधानों के अनुपालन में अडिग और अटल रहे हैं, जो तेरे धर्म के प्रति निष्ठा की डोर थामे हुए हैं और तेरे प्रताप के परिधान की आँचल से लिपटे हुए हैं। इन्हें अपनी अनुकम्पा दे, इनकी सहायता कर। हे मेरे ईश्वर! अपनी आज्ञापालन में इन्हें अडिग बना और अपनी शक्ति से इन्हें सम्पुष्ट कर। तू क्षमाशील, करुणामय है।

-अब्दुल-बहा

(111)

हे करुणामय ईश्वर! धन्यवाद हो तेरा कि तूने मुझे जगाया, चेतना दी। देखने के लिये मुझे आँखे दीं और मुझे समर्थ कान दिये। तूने अपने साम्राज्य की राह दिखलाई, तूने मुझे सच्चा पथ दिखलाया और मुझे मुक्ति की नौका में प्रवेश दिया है। हे ईश्वर! मुझे अडिग बनाये रख और मुझे निष्ठा में अटल बना। प्रचंड परीक्षाओं से मेरी रक्षा कर अपनी संविदा के मंदिर और विधानों के दुर्ग में मुझे संरक्षण दे। तू सर्वदृष्टा है, तू सब की सुनने वाला है। हे तू करुणामय ईश्वर! मुझे एक ऐसा हृदय प्रदान कर जो दर्पण की भाँति तेरे प्रेम की ज्योति

से प्रकाशित हो और अपनी दिव्य कृपा की वर्षा से मुझे ऐसे विचारों का दान दे, जो इस संसार को एक गुलाब वाटिका में बदल दे। तू करुणामय, कृपालु, कल्याणकारी ईश्वर है।

-अब्दुल-बहा

(112)

हे मेरे स्वामी, मेरी आशा! तू अपने इन प्रियजनों को तेरी परम सामर्थ्यमय संविदा में अडिग रहने में, और तेरे इस प्रकटित धर्म के प्रति निष्ठावान रहने में, तेरे महिमाओं के ग्रंथ में विहित आदेशों का पालन करने में सहायता कर जिससे कि ये दिव्य लोक के सहचरों के मार्गदर्शन की ध्वजा और दीपक बन सकें, तेरी अनन्त प्रभा के निर्झर स्रोत और सच्चा पथ दिखाने वाले वे तारक बन सकें, जो उस दिव्य गगन से जगमगाते हैं।

निश्चय ही तू अजेय, सर्वसमर्थ, सर्वशक्तिमान् है।

-अब्दुल-बहा

संरक्षण

(113)

हे ईश्वर! मेरे ईश्वर! तेरे प्रेम की डोर थामे हुए मैं अपने घर से निकल पड़ा हूँ, मैंने पूरी तरह से तेरी देख-रेख और तेरे संरक्षण में स्वयं को सौंप दिया है। तेरी उस शक्ति के नाम से, जिससे तूने अपने प्रियजनों को राह भटकने और पतन से रोका है, दुराग्रही एवं अत्याचारियों से दूर रखा है और अपने से दूर भटके दुराचारियों से बचाया है, मैं याचना करता हूँ कि अपनी कृपा और अनुकम्पा से मुझे सुरक्षित रख। अपनी शक्ति और सामर्थ्य की शक्ति से मुझे अपने घर वापस लौटने में समर्थ बना। तू सत्य ही, सर्वशक्तिशाली, संकट में सहायक, स्वयंजीवी है।

- बहाउल्लाह

(114)

हे ईश्वर! मेरे ईश्वर! अहम् और वासना की आसुरी प्रवृत्तियों से अपने सत्यनिष्ठ सेवकों की रक्षा कर, अपनी स्नेहमयी दयालुता की सदा सावधान दृष्टि द्वारा प्रत्येक विद्वेष, घृणा और ईर्ष्या से इन्हें बचा, अपनी सार-सम्भाल के अभेद्य दुर्ग में इन्हें आश्रय दे और संदेहों के बाणों से इनकी रक्षा कर, इन्हें अपने महिमामय चिन्हों के मूर्तरूप बना। अपनी दिव्य एकता के सूर्य से निकलने वाली दीप्तिमान किरणों से इनके मुखड़ों को आलोकित कर, अपने दिव्य साम्राज्य से प्रकट किये गये छंदों द्वारा इनके हृदयों को आनन्दित कर दे, अपने परमलोक से आने वाली सर्वसमर्थ शक्ति द्वारा इन्हें समर्थ बना।

तू सर्वप्रदाता, सर्वरक्षक, सर्वसामर्थ्यशाली और सर्वकृपालु है।

-अब्दुल-बहा

(115)

स्तुति हो तेरी, हे स्वामी, मेरे ईश्वर! तू देखता है और जानता है कि मैंने तेरे सेवकों का अन्य किसी ओर नहीं, बल्कि बस तेरी कृपा की ओर उन्मुख होने का आह्वान किया है और इन्हें उन आदेशों का पालन करने को कहा है जो तेरे बोधगम्य निर्णय और अटल उद्देश्य के द्वारा भेजे गये हैं।

हे मेरे ईश्वर! जब तक तेरी आज्ञा न हो मैं एक शब्द भी नहीं बोल सकता और जब तक तेरी स्वीकृति न मिले न ही किसी भी ओर जा सकता हूँ। तू ही है मेरे ईश्वर जिसने अपनी सामर्थ्य की शक्ति से मुझे अस्तित्व दिया है और अपने धर्म का संदेश देने के लिये अपनी कृपा प्रदान की है। इसी कारण मुझ पर इतनी विपत्तियाँ ढ़ायी गईं हैं कि मेरी जिह्वा पर तेरा गौरवगान करने और तेरी महिमा का उद्घोष करने से रोक दी गई है।

सर्वज्ञ स्तुति हो तेरी, हे मेरे ईश्वर ! उन सब के लिये जिसका विधान अपने आदेश और अपनी सम्प्रभुता की शक्ति से तूने किया है, मैं तुझसे याचना करता हूँ कि तू मेरे और अपने प्रेमियों को अपने प्रेम को सुदृढ़ रख। तुझे तेरी सामर्थ्य की सौगंध, हे मेरे ईश्वर! मात्र एक पर्दे के कारण मैं तुझसे दूर होकर लज्जित हूँ। तुझे जानूं मेरा गौरव तो इसी में है। तेरे नाम की शक्ति का कवच धारण कर लेता हूँ तब कोई भी आघात चोट नहीं पहुँचा पाता और मेरे हृदय में जब तेरा प्रेम होता है तब संसार की विपदाएँ भी मुझे विचलित नहीं कर पातीं। अतः, हे मेरे ईश्वर! वर दे कि तेरे सत्य का खंडन करने वालों और तेरे चिन्हों में अविश्वास करने वालों से मेरी रक्षा हो सके। तू ही, वस्तुतः, सर्वमहिमाशाली, सर्वकृपालु है।

-बहाउल्लाह

(116)

महिमावंत हो तेरा नाम, हे मेरे ईश्वर! तेरे उस नाम के सहारे, जिसके द्वारा काल ठहर गया था, पुनर्जीवन सम्भव हुआ था, और धरती तथा आकाश के सभी वासी भयभीत हो उठे थे, मैं याचना करता हूँ कि उन सब से, जो तेरी ओर उन्मुख हुए हैं और तेरे धर्म के कार्यों में संलग्न हैं, अपनी कृपा के आकाश और अपनी स्नेहिल करूणा के बादलों से वह बरसा जो उन सेवकों के हृदयों को उल्लसित कर दे। हे स्वामी! अपने सेवक और सेविकाओं को असद् आसक्ति और व्यर्थ-कल्पनाओं की पीड़ा से बचा और अपने ज्ञान की निर्मल जलधार से एक घूंट पीने की अनुकम्पा प्रदान कर। तू, सत्य ही, सर्वशक्तिमान, परम उदात्त, सदा क्षमाशील और परम उदार है।

- बहाउल्लाह

(117)

हे मेरे स्वामी, मेरे लिये और उनके लिये जो तेरे भक्त हैं, उसका विधान कर, जिसे तूने अपने मातृग्रंथ के अनुरूप हमारे लिये सर्वोत्तम समझा हो, क्योंकि तेरी मुट्ठी में सभी वस्तुओं के परिणाम बंद हैं। तेरे मंगलमय उपहार अविरल बरसते हैं उन सब पर जिन्होंने तेरे प्रेम की कामना की है। तेरी दिव्य कृपा के अद्‌भुत चिन्हों का भरपूर दान मिलता है उनको, जो तेरी दिव्य एकता को समझ पाये हैं। तूने हमारे लिये जो कुछ भी विधान किया है उसे हम तेरी सार-सम्भाल में अर्पित करते हैं और तुझसे विनती करते हैं कि हमको वह सब शुभ मंगल प्रदान कर जो तेरे ज्ञान की परिधि में आता है। हे मेरे स्वामी, अपनी अन्तर्दृष्टि से प्रत्येक अशुभ से मेरी रक्षा कर, क्योंकि तेरे अतिरिक्त अन्य सभी शक्तिहीन हैं और तेरे सान्निध्य के अतिरिक्त कहीं से विजय का उद्भव नहीं होता। एकमात्र तेरा ही आदेश देने का अधिकार है जो भी ईश्वर ने चाहा है, वही हुआ है और जो नहीं चाहा है वह कदापि घटित नहीं होगा। परम उदात्त, परम सामर्थ्यवान ईश्वर के अतिरिक्त और किसी में शक्ति और सामर्थ्य नहीं है।

- बाब

(118)

महिमा हो तेरी, हे ईश्वर! तू वह ईश्वर है जो सभी वस्तुओं से पहले अस्तित्व में था, जो सभी वस्तुओं के पश्चात भी अस्तित्व में रहेगा तथा सभी वस्तुओं के परे कायम रहेगा। तू वह ईश्वर है जो सब कुछ जानता है तथा सभी वस्तुओं से उच्च है। तू वह ईश्वर है जो सभी वस्तुओं से दया का व्यवहार करता है, जो सभी वस्तुओं के बीच न्याय करता है और जिसकी दिव्य-दृष्टि सभी वस्तुओं को समाये हुए है। ईश्वर तू मेरा स्वामी है, तू ही मेरी स्थिति से अवगत है, तू ही मेरे आंतरिक एवं बाह्य अस्तित्व का साक्षी है।

मुझे एवं उन अनुयायियों को, जिन्होंने तेरे आह्वान का प्रत्युत्तर दिया है, क्षमा प्रदान कर। जो कोई भी मुझे दुःख देने की इच्छा रखे अथवा मेरा बुरा चाहे उसके अनिष्ट के विरुद्ध तू मेरा पर्याप्त सहायक बन। वस्तुतः, तू समस्त सृजित वस्तुओं का स्वामी है। तू सभी के लिये पर्याप्त है, जबकि तेरे सिवा कोई भी स्वःनिर्भर नहीं।

- बाब

(119)

ईश्वर के नाम से, जो सब को वश में करने वाली भव्यता का स्वामी है, सर्वसम्मोहक है!

परम पावन वह स्वामी है, जिसके हाथ में साम्राज्य का स्रोत है। वह जो चाहता है सृजन करता है, अपने उस शब्द के माध्यम से ”हो जा“ के आदेश से और वह हो जाता है। शासन की शक्ति पहले भी उसी की थी और आगे भी उसी की रहेगी। अपने आदेश की शक्ति से वह जिसे चाहे विजयी बनाता है। सत्य ही, वह सर्वसमर्थ, सर्वशक्तिमान है। प्रकटीकरण और सृष्टि के साम्राज्य में, जो भी है और जो भी इनके मध्य है, समस्त महिमा और भव्यता उसी की है। सत्य ही, वह सर्वसमर्थ, सर्वमहिमावंत है। सदासर्वदा से वह अदम्य शक्ति का स्रोत रहा है और अनन्तकाल तक रहेगा। धरती और आकाश के समस्त लोक ईश्वर के हैं; उसकी शक्ति सर्वव्यापी है। धरती के समस्त खज़ाने और जो भी इनके मध्य है, सब उसी के हैं और उसके संरक्षण की छत्रछाया तले समस्त वस्तुओं से परे है। धरती और आसमानों का वही स्रष्टा है, और जो भी इनके मध्य स्थित है, सत्य ही, वह सर्वोपरि साक्षी है। धरती और आकाश के समस्त वासियों और जो भी इनके मध्य स्थित हैं, उन सबका वही निर्णायक है। सत्य ही, वह ईश्वर तत्क्षण निर्णय लेता है। वही है धरती और आकाश के समस्त वासियों और जो भी इनके मध्य स्थित है, उन सबके लिये अंशों का निर्धारक वस्तुतः, वही है सर्वोच्च संरक्षक; उसकी मुट्ठी में कैद हैं धरती और आकाश और जो भी इनके मध्य स्थित हैं इनके मध्य की कुंजी है। वह अपने आदेश की शक्ति के माध्यम से स्वयं अपनी ही प्रसन्नता से, उपहारों का दान देता है। वस्तुतः वह सभी कुछ का जानने वाला है और उसकी कृपा सभी कुछ को अपनी परिध में लिये हुए है।

कहो, ईश्वर मेरा सर्वोपरि परिपूरक है, उसकी मुट्ठी में समस्त वस्तुओं का साम्राज्य कैद है। धरती और आकाश, और जो कुछ भी इनके मध्य है, उन सबकी वह रक्षा करता है। ईश्वर सत्य ही, समस्त वस्तुओं पर अपनी दृष्टि रखता है।

हे स्वामी, तू अपरिमेय रूप से उदात्त है! हमारे समक्ष और हमारे पीछे, हमारे सिर के ऊपर, हमारे दायें और बायें, हमारे पैरों तले, और प्रत्येक उस दिशा से जिससे भी हम असुरक्षित हैं, उन सबसे हमारी रक्षा कर। वस्तुतः समस्त पदार्थों पर तेरा संरक्षण अचूक है।

- बाब

क्षमा याचना

(120)

हे स्वामी, मेरे ईश्वर, तू महिमावंत है! मैं याचना करता हूँ तुझसे तेरे प्रियजनों के नाम से, और तेरे विश्वासपात्रों के नाम से और उसके नाम से जिन्हें तूने अपने आदेश से प्रकटकर्ता और अपने दिव्य संदेशवाहकों की मुहर नियत किया है, कि अपने स्मरण को मेरा सहचर, अपने प्रेम को मेरी आकांक्षा, अपने मुखारविन्द को मेरा लक्ष्य, अपने नाम को मेरा मार्गदर्शक दीपक, अपनी सर्वोपरि इच्छा को मेरी कामना और अपनी प्रसन्नता को मेरा आनन्द बना दे।

हे मेरे ईश्वर! मैं पतित हूँ, और तू सदा क्षमाशील है। जैसे ही मैंने तुझे पहचाना, मैं तेरी स्नेहमयी कृपा के परमोच्च प्रांगण तक पहुँचने के लिये शीघ्रता से बढ़ चला। मेरे स्वामी, मुझ क्षमा कर, मेरे पाप कर्म ने मुझे तेरी सुप्रसन्नता की राह पर चलने और तेरी एकमेवता के महासिंधु के तट तक पहुँचने से बाधा पहुँचायी है।

हे मेरे स्वामी! ऐसा कोई भी नहीं है जो मुझसे कृपापूर्ण व्यवहार करे, या जिसकी ओर मैं उन्मुख हो सकूँ। ऐसा कोई नहीं है जो मुझ पर ऐसी करुणा करे कि मैं उसकी दया के लिये आतुर होऊँ। मैं तेरी कृपा की निकटता की याचना करता हूँ, मुझे त्याग मत। अपनी उदारता और अपने आशीषों के प्रवाहों को मुझ तक आने से न रोक। हे मेरे स्वामी, मेरे लिये, उसका विधान कर जिसका विधान तूने अपने चुने हुये प्रियजनो के लिये किया है और मेरे लिये वह अंकित कर जो तूने अपने प्रियजनों के लिये अंकित किया है। मेरी दृष्टि समस्त कालों में, हर समय तेरे अनुग्रहमय मंगल विधान के क्षितिज पर टिकी रही है और मेरे नेत्र तेरी करुणामयी कृपा के प्रांगण की ओर निहारते रहे हैं। मुझसे वैसा ही व्यवहार कर, जो तेरे लिये शोभनीय हो। वह जिसकी सहायता की याचना समस्त मानव करते हैं, शक्ति का ईश्वर, महिमाशली ईश्वर, तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है।

- बहाउल्लाह

(121)

हे स्वामी, मेरे ईश्वर तू महिमावंत है! जितनी बार भी मैं तेरा नाम लेने का प्रयत्न करता हूँ, मैं अपने प्रबल पापों और तेरी इच्छा के विरूद्ध किये गये अपने कर्मो को याद करता हूँ

मैं अपने आपको तेरी स्तुति कर पाने में शक्तिहीन पाता हूँ। लेकिन तेरी अनुकम्पा में मेरा संपूर्ण भरोसा, तुझमें मेरी आशा को पुनर्जीवन देता है और मेरा यह भरोसा कि कुछ भी हो जाये तू कृपा ही देगा, मुझे तेरी ओर उन्मुख होने, तेरी स्तुति करने में और याचना भरे हाथ तेरी ओर फैलाने में समर्थ बनाता है। हे मेरे स्वामी! मैं तेरी उस दया की याचना करता हूँ जो समस्त सृजित वस्तुओं से श्रेष्ठतर है और जिसके साक्षी वे सभी लोग हैं जो तेरे नाम के महासिंधु की अतल गहराइयों में निमग्न हैं। हे मेरे स्वामी! मुझे मेरे ऊपर ही न छोड़, क्योंकि मेरा मन दुष्कर्मों में प्रवृत्त हो जाता है। अपनी सुरक्षा के दुर्ग में मुझे शरण दे, मेरी रक्षा कर! मैं वह हूँ, हे मेरे ईश्वर! जो तेरी इच्छा के अनुरूप चलने की कामना रखता है, मैंने उसका ही चयन किया है जो तेरे विधानों और तेरी इच्छा के अनुरूप है। मैने वही चाहा है जो तेरे आदेश और निर्णय के प्रतीक है। हे ईश्वर! मेरे ऊपर इतनी अनुकम्पा कर; हे तू जो उन हृदयों का प्रिय है, जो तेरी कामना करते हैं ! तेरे धर्म के प्रकटीकरण, तेरी प्रेरणा के दिवास्रोत, तेरी भव्यता के प्रवक्ता, तेरे ज्ञान के कोषागार के नाम से मैं तुझसे याचना करता हूँ कि अपने पावन निवास से मुझे वंचित दूर न कर, अपने मंदिर और मण्डप वितान से मुझे दूर न रख। वर दे, हे मेरे स्वामी! कि तुम्हारे गरिमामय प्रांगण तक पहुँच पाऊँ, उसकी परिक्रमा करूँ और तेरे द्वार पर विनम्र खड़ा रह सकूँ।

तू वह है, जिसकी शक्ति शाश्वत है। तेरे ज्ञान से परे कुछ भी नहीं हैं। तू सत्य ही शक्ति का ईश्वर, महिमा और प्रज्ञा का ईश्वर है। ईश्वर की स्तुति हो, जो समस्त लोकों का स्वामी है।

- बहाउल्लाह

(122)

तेरे नाम की स्तुति हो, हे मेरे ईश्वर! और समस्त वस्तुओं के ईश्वर! मेरे गौरव, और सभी वस्तुओं के गौरव! मेरी कामना और समस्त वस्तुओं की कामना! मेरी शक्ति और समस्त वस्तुओं की शक्ति! मेरे सम्राट, और समस्त वस्तुओं के सम्राट! मेरे स्वामी और समस्त वस्तुओं के स्वामी! मेरे लक्ष्य और समस्त वस्तुओं के लक्ष्य! मुझे गति देने वाले और समस्त वस्तुओं के गतिदाता!

मैं तुझसे याचना करता हूँ कि अपनी मृदुल कृपा के महासिंधु से मुझे वंचित नहीं रख, और न ही अपनी निकटता के तटों से अति दूर ही रख। तेरे अतिरिक्त मुझे कुछ भी लाभ नहीं देता है। तेरी समीपता से बढ़कर और किसी से अन्य कुछ प्राप्य नहीं है। मैं विनती करता

हूँ तुझसे तेरी विपुल समृद्धि के नाम से, जिसके द्वारा तू स्वयं को छोडकर सब कुछ दान कर देता है, कि मुझको उनमें गिन जिन्होंने अपना मुखड़ा तेरी ओर कर लिया है और तेरी सेवा में उठ खड़े हुए हैं। हे मेरे स्वामी, अपने सेवकों और अपनी सेविकाओं को क्षमा का दान दे। तू सदा क्षमाशील, और परम कृपालु है !

- बहाउल्लाह

(123)

हे ईश्वर, मेरे स्वामी! अपनी कृपा के माध्यम से उन सबसे हमारी रक्षा कर जो तेरे लिये घृणित है और हमें कृपापूर्वक वह प्रदान कर जो तेरे लिये शोभनीय हो। हमें अपनी उदारता का और अधिक अंश प्रदान कर और हमें आशीर्वाद प्रदान कर। हमसे जो कुछ भी हुआ है उसके लिये हमें क्षमा कर और हमारे पापों को धो डाल तथा अपनी कृपापूर्ण क्षमाशीलता के माध्यम से हमें क्षमा कर। वस्तुतः तू सर्वोदात्त, स्वयंजीवी है।

तेरा प्रेममय विधान धरती और आकाश में समस्त सृजित वस्तुओं को घेरे हुए है और तेरी क्षमा समस्त सृष्टि को पार कर गई है। प्रभुसत्ता तेरी है; तेरे ही हाथ में सृजन एवं प्रकटीकरण के साम्राज्य हैं; अपने हाथ में तू समस्त सृजित वस्तुओं को धारण किये हुए है तथा तेरी ही मुट्ठी में क्षमाशीलता के नियत परिमाण कैद हैं। अपने सेवकों में से तू जिसे चाहे उसे क्षमा कर देता है। वस्तुतः तू सदा क्षमाशील, सर्वप्रेममय है। तेरे ज्ञान से बाहर कुछ भी नहीं रह सकता और ऐसा कुछ भी नहीं है जो तुझसे छिपा हो।

हे ईश्वर, मेरे स्वामी! अपनी शक्ति के सामर्थ्य से हमारी रक्षा कर, हमें अपने उमड़ते हुए अद्भुत महासागर में प्रवेश करा और हमें वह प्रदान कर जो तेरे लिये अति प्रिय हो।

तू परम शासक, बलशाली, कर्ता, उदात्त, सर्वप्रेममय है!

- बाब

(124)

हे स्वामी, तेरी स्तुति हो। हमारे अपने पापों को क्षमा कर दे, हम पर दया कर और अपने पास वापस लौटने में हमारी सहायता कर। हमें, अपने अतिरिक्त किसी अन्य पर भरोसा न करने दे और अपनी उदारता के माध्यम से, कृपापूर्वक हमें वह प्रदान कर जो तुझे प्रिय

है, जो तेरी इच्छा हो और जो तेरे योग्य हो। उसके पद को उदात्त कर जिसने तुझमें सच्चा विश्वास किया है, तथा अपनी कृपापूर्ण क्षमाशीलता माध्यम से उन्हें क्षमा कर। वस्तुतः तू संकट में सहायक, स्वः-निर्भर है।

- बाब

(125)

मैं तुझसे क्षमा की याचना करता हूँ, हे मेरे ईश्वर, तेरे उल्लेख के अतिरिक्त किसी अन्य उल्लेख के लिये और तेरी प्रशंसा के अतिरिक्त किसी अन्य प्रशंसा के लिये और तेरी निकटता के आनन्द के अतिरिक्त किसी अन्य आनन्द के लिये और तुझसे संलाप के सुख के अतिरिक्त किसी अन्य सुख के लिये और तेरे प्रेम एवं तेरी सुप्रसन्नता के आनन्द के अतिरिक्त किसी अन्य आनन्द के लिये और उन समस्त वस्तुओं के लिये जो मुझसे सम्बद्ध हैं, जिनका तुझसे कोई सम्बन्ध नहीं है, हे तू जो स्वामियों का स्वामी है, वह जो द्वारों के द्वार खोलता है साधन प्रदान करता है।

- बाब

(126)

स्तुति हो तेरी, हे ईश्वर! मैं कैसे तेरा उल्लेख कर सकता हूँ जबकि तू समस्त मानवजाति की प्रशंसा से परे, परम पावन है। महिमामण्डित हो तेरा नाम, हे ईश्वर, तू सम्राट है, अनन्त सत्य है; तू वह जानता है जो धरती और आकाश में है और सभी कुछ तेरी ही ओर वापस लौट जाना है। तूने एक स्पष्ट परिमाण के अनुरूप ईश्वर द्वारा आदेशित प्रकटीकरण को भेजा है। प्रशंसित है तू, हे स्वामी! धरती और आकाश, तथा जो कुछ भी इनके मध्य है, के देवदूतों के माध्यम से तू जिसे चाहे अपने आदेश से विजयी बनाता है। तू प्रभुसत्तासम्पन्न, अनन्त सत्य, अपराजेय शक्ति का स्वामी है।

महिमावंत है तू, हे स्वामी! जो तेरी क्षमा की याचना करते हैं तू अपने ऐसे सेवकों के पापों को सर्वदा क्षमा कर देता है। मेरे पापों को तथा उनके पापों को धो डाल जो भोर के समय में तुझसे क्षमा याचना करते हैं, जो दिन के समय और रात्रि बेला में तुझसे प्रार्थना करते हैं, जिन्हें ईश्वर के अतिरिक्त अन्य किसी की लालसा नहीं है, जो वह सब कुछ अर्पित कर देते हैं जो ईश्वर ने उन्हें कृपापूर्वक प्रदान किया है, जो प्रातः काल में तथा संध्या बेला में

तेरी स्तुति करते हैं और जो अपने कर्त्तव्यों के प्रति लापरवाह नहीं हैं। हे ईश्वर, तेरे नाम की स्तुति हो।

- बाब

(127)

हे तू क्षमाशील स्वामी ! तू ही अपने इन सभी सेवकों की शरण है। तू ही रहस्यों का ज्ञाता है, सर्वज्ञानी ! हम बेसहारे हैं, तू ही शक्तिमान है, सर्वसमर्थ ! हम पतित हैं, तू पतितपावन है, हे कृपालु, हे दयालु स्वामी ! हमारे दोषों की ओर न देख, हमें अपनी दया और कृपा दे। हमारे दोष अनेक हैं, तू असीम दया का सागर है; हम दुर्बल हैं, दुःख से भरे हैं, तू सदासहाय है! हमें शक्ति दे, समर्थ बना। हमें इस योग्य बना कि हम तेरी पावन देहरी तक पहुँच सकें। हमारे हृदय प्रकाशित कर दे, हमें देखने योग्य दृष्टि प्रदान कर, सुनने योग्य कान दे, मृतप्राय जनों को पुनर्जीवित कर, रोगियों को रोग मुक्त कर। निर्धन को धन, भयाक्रान्तों को शांति और सुरक्षा दे। अपने साम्राज्य में हमें स्वीकार कर, अपने मार्गदर्शन से हमारे अन्तर्मन को आलोकित कर दे। तू बलशाली और सर्वसमर्थ है। तू ही उदार और दयालु है।

-अब्दुल-बहा

अनिवार्य प्रार्थनाएँ

बहाउल्लाह द्वारा प्रकट की गई दैनिक अनिवार्य प्रार्थनाएँ संख्या में तीन हैं। प्रत्येक बहाई को चाहिये कि इनमें से कोई एक प्रार्थना को वह चुन ले और अनिवार्य रूप से उसका पाठ प्रतिदिन करे। अनिवार्य प्रार्थना का पाठ उनके साथ दिये गये विशेष निर्देशों के अनुसार ही किया जाना चाहिये।

”अनिवार्य प्रार्थनाओं के संदर्भ में ’सुबह‘ ’दोपहर‘ और ’संध्या‘ का अर्थ है सूर्योदय से दोपहर तक, दोपहर से सूर्यास्त तक और सूर्यास्त से लेकर सूर्यास्त के दो घंटे पश्चात तक का समय।“

लघु अनिवार्य प्रार्थना

चौबीस घंटे में एक बार, दोपहर से संध्या के बीच इस प्रार्थना का पाठ करना चाहिये।

मैं साक्षी हूँ, हे मेरे ईश्वर! कि तुझे जानने तथा तेरी आराधना करने हेतु तूने मुझे उत्पन्न किया है। मैं इस क्षण अपनी शक्तिहीनता और तेरी शक्तिमानता, अपनी दरिद्रता तथा तेरी सम्पन्नता का साक्षी हूँ।

तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं, तू ही है संकट में सहायक, स्वःनिर्भर।

-बहाउल्लाह

मध्यम अनिवार्य प्रार्थना

इस अनिवार्य प्रार्थना का पाठ प्रतिदिन सुबह, दोपहर और शाम के समय किया जाना चाहिये

जो भी इस प्रार्थना को करना चाहे वह अपने हाथों को धो ले, और धोते समय, वह कहे:

हे मेरे ईश्वर, मेरे हाथ को शक्ति दे कि वह तेरे ग्रंथ को ऐसी दृढता से थामे कि संसार के जन समूहों का उस पर कोई अधिकार न रहे। तब, किसी भी वस्तु में हस्तक्षेप करने से इसे बचा जो इसका नहीं है। तू, सत्य ही, परम बलशाली, सर्वशक्तिशाली है।

और अपना चेहरा धोते समय वह कहे:

हे मेरे स्वामी! मैंने अपने चेहरे को तेरी ओर कर लिया है, अपने मुखमण्डल की ज्योति से इसे आलोकित कर दे। तब अपने अतिरिक्त किसी अन्य की ओर प्रवृत्त होने से इसे सुरक्षित रख।

तब उसे खड़ा हो जाना चाहिये, और क़िब्ले (आराधना का केन्द्र,, बहजी, अक्का) की ओर मुँह करके कहे:

ईश्वर साक्षी है कि उसके अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं। सृष्टि और प्रकटीकरण के साम्राज्य उसी के हैं। सत्यतः उसने उसे प्रकट किया है, जो प्रकटीकरण का उद्गमस्थल है, जिसने सिनाई पर संवाद किया है, जिसके द्वारा सर्वोच्च क्षितिज दीप्तिमान किया गया है, और वह दिव्य तरुवर, जिसके आगे कोई राह नहीं है, बोल उठा है, और जिसके माध्यम से उन सभी के लिए जो इस धरती पर और आकाश में हैं, उद्घोषणा की गई है: ”देखो, सर्व-सम्पन्न आ गया है।“ पृथ्वी और आकाश, महिमा और साम्राज्य, समस्त जनों के स्वामी और परमोच्च सिंहासन तथा धरती के मालिक ईश्वर के हैं।“

तब वह, झुक कर, अपने घुटनों के ऊपर हाथ रखकर यह कहे:

तू मेरी और मेरे अतिरिक्त अन्य किसी की प्रशंसा से परे, मेरे वर्णन और उन सबके वर्णन से जो आकाश में और वे सब जो धरती पर है, परे है!

तब खुले हाथों से हथेली मुँह के सामने करते हुये वह कहे:

हे मेरे ईश्वर! उसे निराश न कर, जिसने अनुनयपूर्ण उंगलियों से, तेरी दया और कृपा के आंचल को थाम रखा है। हे तू जो दया करते हैं उन सबमें तू सर्वाधिक दयालु है।

तब वह, बैठ जाये और कहे:

मैं तेरी एकता और एकमेवता का साक्षी हूँ, और यह कि तू ईश्वर है, और तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं। सत्य ही, तूने अपना धर्म प्रकट किया है, अपनी संविदा पूरी की है, और तूने उन सबके लिये, जो धरती पर और आकाश में निवास करते हैं, अपनी कृपा के द्वार खोल दिये हैं। आशीष और शांति, नमन और यश, तेरे प्रियजनों पर विराजे, जिन्हें जगत के परिवर्तनों और संयोगों ने तेरी ओर उन्मुख होने से रोका नहीं है और जो तेरे पास है उसे प्राप्त करने की आशा में अपना सभी कुछ न्योछावर कर दिया है। सत्य ही, तू सदा-क्षमाशील, सर्व-उदार है।

(इस लम्बे पद के स्थान पर यदि कोई यह कहना चाहे कि: ”ईश्वर साक्षी है कि उसके अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं, संकट में सहायक, स्वनिर्भर“ तो यह पर्याप्त होगा। और इसी तरह, बैठे हुए यह कहने के लिए इन शब्दों का चयन करे कि ”मैं तेरी एकता और तेरी एकमेवता का साक्षी हूँ, और यह कि तू ही ईश्वर है और यह कि तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं“ तो यह पर्याप्त होगा।)

-बहाउल्लाह

लम्बी अनिवार्य प्रार्थना

(चौबीस घंटे में एक बार किये जाने के लिये)

जो कोई भी इस प्रार्थना का पाठ करना चाहे, वह खड़ा होकर ईश्वर की ओर उन्मुख हो, और, जब वह अपने स्थान पर खड़ा हो, वह दायें और बायें देखे, मानो अपने स्वामी, परम दयावान, सहानुभूतिकर्ता की दया की प्रतीक्षा में हो। तब वह कहे:

हे तू, जो समस्त नामों का स्वामी और आकाशों का सृजनकर्ता है! मैं उनके माध्यम से तुझसे याचना करता हूँ जो तेरे सर्वमहिमावान, परमउदात्त, अदृश्य सार के उद्गमस्थल हैं कि मेरी प्रार्थना को ऐसी ज्वाला बना दे जो उन पर्दों को जला डाले जिन्होंने तेरे सौन्दर्य से मुझे दूर रखा है, और एक ऐसा प्रकाश जो तेरी उपस्थिति के महासागर की ओर मुझे ले जाये।

वह तब अपने हाथ ईश्वर - पावन और परमोच्च है वह - कि प्रार्थना में उठाये और कहे:

हे तू, समस्त विश्व की कामना और राष्ट्रों के प्रियतम ! तू मुझे अपनी ओर उन्मुख होते हुये देख रहा है, और तेरे अतिरिक्त अन्य सभी के प्रति आसक्ति से मुक्त, मैं तेरी डोर थामे हुए हूँ,, जिसके स्पंदन से समस्त सृष्टि गतिमान हो उठी है। हे मेरे स्वामी ! मैं तेरा सेवक और तेरे सेवक का पुत्र हूँ! देख, मैं तेरी इच्छा और आकाँक्षा को पूरा करने के लिये उठ खड़ा हुआ हूँ और तेरी सुप्रसन्नता के अतिरिक्त मेरी कोई कामना नहीं है। तेरी दया के महासागर और तेरी अनुकम्पा के दिवानक्षत्र के नाम से मैं तुझसे याचना करता हूँ कि तू अपने सेवक के साथ वह कर जिसकी तू इच्छा करता और चाहता है। तेरी शक्ति की सौगन्ध ! जो समस्त उल्लेख और प्रशंसा से परे हैं। जो भी तेरे द्वारा प्रकट किया गया है वह मेरे हृदय की कामना और मेरी आत्मा को प्रिय है। हे ईश्वर, मेरे ईश्वर ! मेरी आशाओं और मेरे कर्मों को न देख, बल्कि केवल अपनी इच्छा को देख, जिसने धरती और आकाशों को घेर रखा है। हे सभी राष्ट्रों के स्वामी ! तेरे सर्वमहान नाम की सौगन्ध ! मैंने वही चाहा है जो तूने चाहा है और उसी से प्रेम करता हूँ, जिससे तू प्रेम करता है।

तब वह घुटने के बल धरती पर माथा टेक कर कहे:

तू अपने सिवाय किसी अन्य के वर्णन से परे है और स्वयं के अतिरिक्त किसी अन्य की समझ से परे है।

तब खड़ा हो जाये और कहे:

हे मेरे स्वामी, मेरी प्रार्थना को जीवंत जल की एक निर्झरनी बना दे ताकि मैं तब तक जीवित रहूँ जब तक तेरी सत्ता कायम है और तेरे लोकों के प्रत्येक लोक में तेरी चर्चा कर सकूँ।

तब वह पुनः अपने हाथों को प्रार्थना में उठाये और कहे:

हे तू, जिसके वियोग में हृदय और आत्मायें द्रवित हो गई हैं और जिसके प्रेम की ज्वाला से सम्पूर्ण संसार दमक उठा है, और तेरे उस नाम से जिसके द्वारा तूने समस्त सृष्टि को अपने अधीन किया है, तुझसे याचना करता हूँ कि जो तेरे पास है उससे मुझे वंचित न कर, हे तू जो समस्त जनों पर शासन करता है। तू देखता है, हे मेरे स्वामी ! इस अजनबी को तेरी विराटता के वितान तले, तेरी दया की परिधि में, अपने सर्वोच्च निवास की ओर शीघ्रता से जाते हुये, और पथ भटके पथिक को तेरी क्षमा के सागर की याचना करते हुये, और इस पतित को तेरी महिमा के प्रांगण की आकांक्षा लिये, और इस दीन-हीन को तेरी सम्पदा की चमक की ओर निहारते हुए। अधिकार तेरा है, तू जो चाहे आदेश दे सकता है। मैं साक्षी हूँ कि तू अपने कर्मों में स्तुत्य है और तेरे आदेशों का पालन किया जाना ही चाहिये और तू अपने आदेश में सदा ही अप्रतिबंधित रहा है।

तब वह अपने हाथ ऊपर उठाये और तीन बार महानतम नाम का उच्चारण करे। फिर अपने घुटनों पर हाथ रखकर वह ईश्वर - पावन और परमोच्च है वह - के सम्मुख घुटनों के बल झुक जाये, और कहे:

तू देखता है, हे मेरे ईश्वर, कि किस प्रकार मेरे अंग-प्रत्यंग में मेरी चेतना तेरी आराधना की आकाँक्षा लिये और तेरे स्मरण और गुणगान की लालसा लिये स्पंदित हुई है; किस प्रकार यह उसकी साक्षी है जिसका साक्ष्य तेरे आदेश की जिह्वा ने तेरी वाणी के साम्राज्य और ज्ञान के आकाश में दिया। ऐसी अवस्था में, हे मेरे ईश्वर, तेरे पास जो कुछ भी है वह मुझे तुझसे मांगना प्रिय लगता है, ताकि मैं अपनी दरिद्रता दिखा सकूं और तेरी उदारता और तेरी सम्पदाओं का गुणगान कर सकूं और अपनी शक्तिहीनता की घोषणा कर सकूं और तेरी शक्ति तथा सामर्थ्य को व्यक्त कर सकूं।

तब वह खड़ा हो जाये और दो बार अपने हाथ प्रार्थाना में ऊपर उठाये और कहे:

तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं, सर्वशक्तिशाली, सर्वउदार! तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं, तू ही आदि और अन्त का आदेशकर्ता है। हे ईश्वर, मेरे ईश्वर ! तेरी क्षमाशीलता ने मुझे साहस दिया है और तेरी दया ने मुझे शक्ति दी है; तेरी पुकार ने मुझे जगाया है और तेरे अनुग्रह ने मुझे खड़ा किया है और तुझ तक पहुँचने की राह दिखलाई है। अन्यथा मैं कौन हूँ, कि मैं तेरी निकटता के नगर के द्वार तक पहुँचने का साहस जुटा पाता या फिर, तेरी इच्छा के आकाश से प्रस्फुटित प्रकाश की ओर उन्मुख हो पाता ? देखता है तू, हे मेरे स्वामी, तेरी कृपा के द्वार पर यह तुच्छ प्राणी दस्तक दे रहा है और यह क्षणभंगुर जीव तेरी उदारता के हाथों अनन्त जीवन की सरिता

की खोज कर रहा है। हर काल में तेरा ही आदेश रहा है, हे तू जो समस्त नामों का स्वामी है, हे आसमानों के रचयिता, तेरी इच्छा के प्रति मेरी स्वीकृति और सहर्ष समर्पण !

तब वह तीन बार हाथ उठाकर कहे:

प्रत्येक महान से ईश्वर महानतर है !

तब वह घुटनों के बल धरती पर अपना माथा टेकते हुए कहे:

तू इस से परे है कि तेरे निकट जनों कि स्तुति तेरी निकटता के आकाश तक पहुँच सके अथवा तेरे प्रति समर्पित जनों के हृदय-पखेरू तेरे प्रवेश मार्ग के द्वार तक पहुँच सकें। मैं साक्षी हूँ कि तू समस्त गुणों से पावन, और समस्त नामों से पवित्र रहा है। तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं, परम उदात्त, सर्व महिमाशाली।

तब वह बैठ जाये और कहे:

मैं प्रमाणित करता हूँ, कि वह, जिसे सभी सृजित वस्तुओं ने, उच्च जन समूह ने, सर्वोच्च स्वर्ग के निवासियों ने और उन सबसे परे सर्वमहिमाशाली क्षितिज से स्वयं भव्यता की जिह्वा ने प्रमाणित किया है कि तू ही ईश्वर है, तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं और यह कि जिसे प्रकट किया गया है वह गूढ़ रहस्य, संचित प्रतीक है जिसके द्वारा 'भ' और 'व' अक्षर परस्पर जोड़े और बुन दिये गये है। मैं प्रमाणित करता हूँ कि यह वही है जिसका नाम सर्वोच्च की लेखनी द्वारा लिपिबद्ध किया गया है और जिसका उल्लेख ईश्वर की पुस्तकों में किया गया है जो ऊपर सिंहासन और नीचे धरती का स्वामी है।

तब वह सीधा खड़ा हो जाये और कहे:

हे समस्त प्राणियों के स्वामी और सभी दृश्य-अदृश्य वस्तुओं के मालिक ! तू देखता है मेरे आँसुओं को और मेरी आहों को जो मैं भरता हूँ और सुनता है तू मेरी कराह और मेरे चित्कार को और मेरे हृदय के विलाप को। तेरी शक्ति की सौगंध ! मेरे अतिक्रमणों ने मुझे तेरी समीप आने से रोका है और मेरे पापों ने मुझे तेरी पावनता के प्रांगण से बहुत दूर कर दिया है। हे मेरे स्वामी, तेरे प्रेम ने मुझे समृद्ध बनाया है और तेरे वियोग ने मुझे नष्ट कर दिया है और तुझसे दूरी ने मुझे क्षीण कर दिया है। इस वीराने में तेरे पदचापों के माध्यम से, और इन शब्दों के द्वारा कि "मैं यहीं हूँ", "मैं यहीं हूँ", जिन शब्दों का तेरे प्रियजनों ने इस विराटता में उच्चारण किया है, मैं तेरे प्राकट्य के श्वांसों के माध्यम से, और तेरे प्रकटीकरण के प्रभात की मृदुल बयारों के माध्यम से, मैं तुझसे याचना करता हूँ कि ऐसा विधान कर कि मैं तेरे सौन्दर्य के दर्शन कर सकूँ, और जो कुछ भी तेरे पावन ग्रंथ में है उसका अनुपालन कर सकूँ।

तब वह महानतम् नाम का तीन बार उच्चारण करे और घुटनों पर हाथ रखते हुए झुके और कहे:

स्तुति हो तेरी, हे मेरे ईश्वर, कि तेरा स्मरण करने और तेरा यशगान करने में तूने मेरी सहायता की है, तूने ही दिया है उसका ज्ञान जो तेरे चिह्नों का उद्गमस्थल है, तूने ही बनाया है इस योग्य मुझे कि तेरे स्वामित्व के समक्ष विनत हो सकूँ और तेरे ईश्वरत्व के प्रति विनम्र रह सकूँ और तेरी महिमा की जिह्वा द्वारा जो कुछ भी उच्चारा गया है उसे स्वीकार कर सकूँ।

तब वह खड़ा हो जाये और कहे:

हे ईश्वर, मेरे ईश्वर! मेरे पापों के बोझ से मेरी कमर झुक गई है; मेरी लापरवाही ने मुझे बर्बाद कर दिया है। जब कभी भी मैं अपने दुष्कर्मों और तेरी हितेषिता के विषय में सोचता हूँ तो मेरा हृदय, अन्दर-ही-अन्दर द्रवित हो उठता है, और रक्त मेरी शिराओं में उद्वेलित हो जाता है। तेरे सौन्दर्य की सौगन्ध, हे तू, विश्व की कामना! लज्जित हूँ मैं तेरी ओर देखने में, याचना भरे अपने हाथ तेरी कृपा के आकाश की ओर फैलाने में। तू देखता है, मेरे आँसू तुझे याद करने में तेरा गुणगान करने में कैसे अवरोध बने हैं, हे तू जो सर्वोच्च सिंहासन और धरती का स्वामी है ! तेरे साम्राज्य के चिह्नों और तेरी प्रभुत्व के रहस्यों द्वारा मैं तुझसे याचना करता हूँ कि हे सबके स्वामी! कि अपने प्रियजनों के साथ अपनी अनुकम्पा और गरिमा के अनुरूप व्यवहार कर, हे गोचर और अगोचर के सम्राट !

तब वह तीन बार महानतम् नाम का उच्चारण करे और घुटनों के बल धरती पर माथा टेक कर कहे:

स्तुति हो तेरी, हे हमारे ईश्वर ! कि तूने हम तक वह भेजा है जो हमें तेरी निकटता की ओर आकर्षित करता है और तेरे ग्रंथों और तेरे लेखों में उल्लिखित प्रत्येक उत्तम वस्तु हमें प्रदान करता है। हम याचना करते हैं, हे मेरे स्वामी, हमें व्यर्थ विचारों और निरर्थक कल्पनाओं से बचा। तू, सत्य ही, शक्तिशाली, सर्वज्ञ है।

तब वह अपना सर उठाये, बैठ जाये और कहे:

हे मेरे ईश्वर, मैं उसका साक्षी हूँ जिसके साक्षी तेरे प्रियजन हैं, और स्वीकार करता हूँ मैं उसको, जिसे सर्वोच्च स्वर्ग के निवासियों ने और तेरे शक्तिशाली सिंहासन की परिक्रमा करने वालों ने स्वीकार किया है। धरती और आकाश के साम्राज्य तेरे ही हैं, हे समस्त लोकों के स्वामी !

- बहाउल्लाह

अहमद की पाती

(128)

वह सम्राट, सर्वज्ञाता, सुविज्ञ है। देखो! स्वर्ग कोकिला शाश्वतता के तरूवर की टहनियों पर पावन और मधुर स्वर में गा रही है, ईश्वर की निकटता के शुभ समाचार की उद्घोषणा निष्कपट जनों को कर रही है, दिव्य एकता में आस्था रखने वालों को सर्वउदार के सानिध्य के प्रांगण में बुला रही है, अनासक्त जनों को परममहिमाशाली, अद्वितीय, सम्राट, ईश्वर द्वारा प्रकटित संदेश से अवगत करा रही है।

वस्तुतः यह वही परम महान सौन्दर्य है, जिसकी भविष्यवाणी संदेशवाहकों के ग्रंथों में की गई है, जिसके द्वारा सत्य को असत्य से पृथक कर दिया जाएगा तथा प्रत्येक आदेश के विवेक को परखा जाएगा। वस्तुतः यह वह जीवन-वृक्ष है जो सर्वोच्च, सर्वशक्मिान, सर्वमहान ईश्वर के फल देता है।

हे अहमद! तू साक्षी बन कि सत्य ही वह ईश्वर है, और उसके अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं: सम्राट, रक्षक, अतुलनीय, सर्वशक्तिमान और जिन्हें उसने 'अली' के नाम से भेजा है, वह सत्य ही ईश्वर की ओर से थे, जिनके आदेशों का हम सब पालन करते हैं।

कहो: हे लोगो! ईश्वर के उन आदेशों के प्रति आज्ञाकारी बनो जिनका आदेश बयान में उस महिमावंत, सर्वज्ञ द्वारा दिया गया है। सत्य ही वह संदेशवाहकों का सम्राट और उसका ग्रंथ मातृ-ग्रंथ है। काश! तुम इसे जान पाते।

इस प्रकार, इस कारागार से दिव्य कोकिला तुम्हें उसका आह्वान सुना रही है। उसे तो यह स्पष्ट संदेश देना ही है। जो चाहे वह अपने स्वामी का पथ अपनाये और जो चाहे वह इस सलाह से विमुख हो जाए।

हे लोगो! यदि तुम इन श्लोकों का खण्डन करते हो तो किस प्रमाण से तुमने ईश्वर में विश्वास किया है ? इसे प्रस्तुत करो, हे मिथ्यावादियों के समूह!

नहीं, जिसके हाथ में मेरी आत्मा है, उस ईश्वर की सौगन्ध, वे सब मिलकर भी यदि एक दूसरे की सहायता करें तब भी वे ऐसा करने में समर्थ नहीं हो पायेंगे।

हे अहमद! मेरी अनुपस्थिति में मेरी अनुकम्पाओं को न भूलना। अपने दिनों में मेरे दिनों को और इस दूरस्थ कारागार में मेरे दुख और निर्वासन को याद रखना। तू मेरे प्रेम में इतना अडिग बनना कि यदि तुझ पर शत्रुओं की तलवारों के प्रहार भी बरसने लगें और

समस्त पृथ्वी और आकाश तेरे विरूद्ध उठ खडे हो जाएं, तब भी तेरा हृदय विचलित न हो।

मेरे शत्रुओं के लिए तू अग्नि की ज्वाला और मेरे प्रियजनों के लिए शाश्वत जीवन की सरिता बन और उनमें से न बन जो संदेह करते हैं।

और यदि मेरी राह में तुझे संकट घेर लें या तुझे अनादर सहन करना पड़े तो तू उससे मत घबरा।

ईश्वर, अपने ईश्वर एवं अपने पूर्वजों के स्वामी पर भरोसा रख। क्योंकि लोग भ्रान्ति की राहों में भटक रहे हैं। विवेक से हीन वे अपनी आँखों से ईश्वर के दर्शन कर पाने में अथवा अपने कानों से उसके स्वर माधुर्य को सुन पाने में असमर्थ हैं। हमने उन्हें ऐसा ही पाया है, जिसका तू भी साक्षी है।

इस प्रकार उनके अंधविश्वास उनके तथा उनके स्वयं के हृदयों के बीच ऐसे आवरण बन गये हैं, जिससे वे उदात्त और महान ईश्वर के मार्ग से दूर हो गये हैं।

तू स्वयं में निश्चित रह कि वस्तुतः जो भी इस सौन्दर्य से विमुख होता है, वह अतीत के संदेशवाहकों से भी विमुख हो जाता है और सदासर्वदा ईश्वर के प्रति अहंकार दिखाया है।

हे अहमद, इस पाती को भलीभाँति कंठस्थ कर ले। अपने दिनों में तू इसे मधुर स्वर में गा और अपने आपको इससे विमुख न कर। इसका पाठ करने वाले के लिए ईश्वर ने अपने प्राणों का बलिदान करने वाले सौ शहीदों का कर्मफल तथा दोनों लोकों में सेवा का पुरस्कार निर्धारित किया है। ये अनुकम्पाएं हमने उदारता एवं दया स्वरूप अपनी ओर से तुझे प्रदान की हैं, ताकि तू उनमें से बन सके जो हमारे प्रति कृतज्ञ हैं।

ईश्वर की सौगन्ध! यदि कोई विपत्ति अथवा दुःख में इस पाती का पूर्णनिष्ठा से पाठ करेगा तो निश्चय ही ईश्वर उसके दुखों को दूर करेगा, उसकी कठिनाइयों का समाधान करेगा और उसकी व्यथा को हर लेगा।

वस्तुतः वह दयालु, कृपालु है। सर्वलोकों के स्वामी ईश्वर की स्तुति हो।

- बहाउल्लाह

अग्नि पाती

(129)

ईश्वर के नाम से ! सर्वमहान, अति प्राचीन!

वस्तुतः निष्कपट हृदय बिछोह की अग्नि से व्यथित हैं : कहाँ है तेरे मुखमण्डल के प्रकाश की चमक, हे सर्वलोकों के प्रियतम ?

वे जो तेरे निकट हैं वे विध्वंसन के अंधकार में परित्यक्त हैं: तेरे पुनर्मिलन के भोर की दीप्ति कहाँ है, हे सर्वलोकों की अभिलाषा ?

तेरे चुने हुये जनों के शरीर सुदूर रेत पर पड़े तड़प रहे हैं : तेरे सान्निध्य का महासागर कहाँ है, हे लोकों की मोहक ?

तेरी उदारता एवं कृपा के आकाश की ओर सहिष्णु हस्त ऊपर उठाये गये हैं: तेरी अनुकम्पा की वर्षा कहाँ है, हे सर्वलोकों के सामाधानकर्ता ?

नास्तिक हर ओर अत्याचार में उठ खड़े हुए हैंः तेरे आदेशात्मक लेखनी की बाध्यकारी शक्ति कहाँ है, हे लोकों के विजेता ?

श्वानों का भौंकना हर दिशा में तीव्र हो गया हैः तेरी शक्ति के वन के सिंह कहाँ है, हे लोकों के दण्डदाता ?

निरूत्साह ने समस्त मानवता को जकड़ लिया है: तेरा उत्साह भरने वाला प्रेम कहाँ है, हे लोकों की ज्वाला ?

आपदा अपने चरम पर पहुँच गई है: तेरी सहायता के चिन्ह कहाँ हैं, हे सर्वलोकों के मुक्ति ?

अंधकार ने बहुसंख्य जनों को घेर लिया है : तेरी कांति की प्रखरता कहाँ है, हे सर्वलोकों के दीप्ति?

लोगों की गर्दनें विद्वेष से तनी हैं: तेरे प्रतिशोध की कृपाण कहाँ है, हे लोकों के विध्वंसकर्ता ?

पतन अधमता के रसातल तक जा पहुँचा है: तेरी गौरव के प्रतीक कहाँ है, हे सर्वलोकों की महिमा ?

दुःखों ने तेरे सर्वकृपालु नाम को प्रकट करने वाले को पीड़ित कर दिया हैं: तेरे प्रकटीकरण के उद्गमस्थल का आनन्द कहाँ है , हे सर्वलोकों के आह्लाद ?

वेदना धरती के समस्त जनों पर आ पड़ी है: तेरी प्रसन्नता की पताकाएँ कहाँ हैं, हे सर्वलोकों के उल्लास ?

देखता है तू कि तेरे 'संकेतो का उदयस्थल' कुचक्रों के आवरण से ढक दिया गया है: तेरी सामर्थ्य की उंगलियाँ कहाँ हैं, हे सर्वलोकों की शक्ति ?

सभी अत्यधिक प्यास से त्रस्त हैं: तेरी उदारता की सरिता कहाँ है, हे सर्वलोकों की कृपा?

समस्त लोगों को लोभ ने अपना दास बना लिया है: अनासक्ति के साकार रूप कहाँ है, हे सर्वलोकों के स्वामी ?

तू देखता है इस प्रवंचित को अकेला, निष्कासित : तेरे आदेश के आकाश के सैन्यसमूह कहाँ हैं, हे सर्वलोकों के सम्राट ?

मैं एक अनजाने देश में परित्यक्त हूँ : तेरी विश्वसनीयता के प्रतीक कहाँ हैं, हे सर्वलोकों के विश्वस्त ?

सबको मृत्यु की वेदना ने ग्रास बना लिया है: तेरे शाश्वत जीवन का उमड़ता सागर कहाँ हैं, हे सर्वलोकों के जीवन ?

प्रत्येक कृति में शैतान ने अपने प्राण फूंक दिये हैं: तेरी ज्वाला का उल्कापिण्ड कहाँ है, हे सर्वलोकों के प्रकाश ?

अधिकांश जनों को वासना ने पथभ्रष्ट कर दिया है : तेरी पवित्रता के उद्गमस्थल कहाँ हैं, हे सर्वलोकों की अभिलाषा ?

तू इस प्रवंचित को सीरियाई लोगों के मध्य उत्पीड़न से आक्रांत देखता है : तेरे प्रकाश का उदय कहाँ से होगा। हे सर्वलोकों के प्रकाश ?

तू देखता है कि मुझे बोलने से भी रोका गया है : तो कहाँ से फूटेगी तेरा स्वर माधुर्य, हे सर्वलोकों की कोकिला ?

अधिकांश जन भ्रान्ति एवं व्यर्थ कल्पनाओं के जाल में उलझे हैं: तेरी आस्था के प्रतिपादक कहाँ हैं, हे सर्वलोकों के विश्वास ?

बहा विपदा के सागर में डूब रहा है: तेरी मुक्ति-नौका कहाँ है, हे सर्वलोकों के मुक्तिदाता?

सृष्टि के अंधकार में तू अपनी वाणी के उद्गमस्थल को देखता है: तेरी अनुकम्पा के आकाश का सूर्य कहाँ है, हे सर्वलोकों के प्रकाशदाता ?

सत्य और पावनता, निष्ठा और सम्मान के दीप बुझा दिये गये हैं: तेरे प्रतिकार रूपी क्रोध के चिन्ह कहाँ हैं, हे सर्वलोकों के संचालक ?

उन्हें जो तेरे ही लिये युद्धरत हैं या उन संकटों पर जो विचारमग्न हैं जो तेरे प्रेम-पथ पर हैं, क्या तू नहीं देख सकता, जो उन पर आन पड़ा हैं ? अब मेरी लेखनी ठहर गई है, हे सर्वलोकों के प्रियतम !

नियति झंझावात के प्रचंड वेग से दिव्य सिदरा के शाख-शाख टूटे हैं : तेरे अभय दान की ध्वजायें कहाँ हैं , हे सर्वलोकों के विजेता ?

यह मुखड़ा कलंक की धूल से ढका है: तेरी अनुकम्पा के मधुर समीर कहाँ हैं, हे सर्वलोकों की करूणा ?

पावनता के परिधान को प्रवंचकों ने कलुषित कर दिया है : तेरी पावनता का परिधान कहाँ है, हे सर्वलोकों के श्रृंगारकर्ता ?

मनुष्य ने अपने ही हाथों से जो कर डाला है, उससे दया का सागर स्तब्ध रह गया है : तेरी उदारता की लहरें कहाँ हैं, हे सर्वलोकों की अभिलाषा ?

तेरे शत्रुओं के आतंक से तेरी दिव्य उपस्थिति तक पहुँचने के द्वार बंद पड़े हैं: तेरे आशीष की कुंजी कहाँ है, हे सर्वलोकों के समाधानकर्ता ?

विद्रोह की विषाक्त समीरों से पात-पात मुरझाए हैं: तेरी उदारता की मेघ-धारा कहाँ है, हे सर्वलोकों के दाता ?

विश्व पापों की धूल से अंधकारमय हो गया है : तेरी क्षमा के पवन-झकोरे कहाँ हैं, हे सर्वलोकों के क्षमादाता ?

इस निर्जन भू पर यह युवक एकाकी है: तेरी दिव्य करूणा की वर्षा कहाँ है, हे सर्वलोकों के वरदाता ?

हे परम महान लेखनी! हमने शाश्वत साम्राज्य में तेरी अतिशय मधुर पुकार सुन ली है : ध्यान से सुन कि भव्यता की जिह्वा जो कह रही है, हे तू सर्वलोकों के 'प्रवंचित'!

यदि शीत न होता, तो तेरे शब्दों की ऊष्मा कैसे प्रबल होती, हे सर्वलोकों के व्याख्याता ?

यदि संकट न होते, तेरे धैर्य का सूर्य कैसे चमक दिखाता, हे सर्वलाकों के प्रकाश ?

दुष्ट जनों के कारण तू शोक न कर, तुझे सब कुछ सहने और भोगने को दुष्ट जनों को रचा गया था, हे सर्वलोकों के धैर्य !

कितना मधुर था तेरा संविदा के क्षितिज पर उदित होना और विद्रोह भड़काने वालों के मध्य, ईश्वर के प्रति तेरी उत्कंठा, हे सर्वलोकों के प्रेम !

तेरे ही द्वारा मुक्ति-पताका उच्चतम् शिखरों पर फहराई गई, और उदारता का सागर तरंगित हुआ। हे सर्वलोकों के प्रहर्ष !

तेरी एकमेवता का सूर्य एकाकीपन से ही चमका, और तेरे निष्कासन से एकता की भूमि अलंकृत हुई। धैर्य रख, हे सर्वलोकों के निर्वासित !

हमने अनादर को गौरव का परिधान बनाया है और तेरे मन्दिर का आभूषण दुःखों को , हे सर्वलोकों के गौरव !

तू घृणा भरे हृदयों को देखता है, तेरी महानता इसकी उपेक्षा करना है, हे सर्वलोकों के पाप को छिपाने वाले! जब तलवारें चमकें आगे बढ़, बढ़ता जा, गर तीर भी बरसते हों, हे सर्वलोकों के लिए बलिदान !

तू विलाप करे या मैं रोऊँ ? इतने थोड़े हैं तेरे समर्थक, जो अखिल लोकों के रुदन का कारण है! सत्य ही, मैने सुनी है तेरी पुकार, हे सर्वगौरवमय प्रियतम !

अब बहा का मुखमण्डल दीप्त है, दुःखों के ताप से, तेरे ज्योतिर्मय शब्दों की ज्वाला से और अब वह निष्ठापूर्वक उठ खड़ा हुआ है तेरी सुप्रसन्नता पर दृष्टि केन्द्रित किए हुए, हे अखिल लोकों के विधाता !

हे अली अकबर! धन्यवाद कर अपने ईश्वर का इस पाती के लिए, कि जब मेरी विनम्रता की सुरभि तू ग्रहण न कर सकेगा तब तू जान पाएगा कि सब के आराध्य ईश्वर के पथ पर कैसे कष्टों ने हमें घेरा था। यदि ईश्वर का सेवक पूर्ण निष्ठा से इसका पाठ करेंगे तो जग उठेंगी ऐसी ज्वालाएँ उनकी नसों में जो सर्वलोकों में अग्नि धधका देंगी।

-बहाउल्लाह

आरोग्य के लिये लम्बी प्रार्थना

(130)

वह है रोगनिवारक, परिपूरक, सहायक, क्षमाशील सर्वकरुणामय !

आह्वान करता हूँ तेरा, हे उदात्त! हे निष्ठावान, हे गरिमामय, तू परिपूरक, तू रोगनिवारक, तू चिरन्तन, हे तू चिरन्तन!

आह्वान करता हूँ तेरा, हे सम्राट, हे उन्नत्तिदाता, हे न्यायकर्ता ! तू परिपूरक है, तू रोगनिवारक, तू चिरन्तन, हे तू चिरन्तन!

आह्वान करता हूँ तेरा, हे अनुपम, हे शाश्वत, हे एकमेव ! तू परिपूरक, तू रोगनिवारक, तू चिरन्तन, हे तू चिरन्तन!

आह्वान करता हूँ तेरा, हे प्रशंसित, हे पावन, हे सहायक! तू परिपरक, तू रोगनिवारक, तू चिरन्तन, हे तू चिरन्तन!

आह्वान करता हूँ तेरा, हे सर्वज्ञ, हे महाप्रज्ञ, हे परम महान ! तू परिपूरक, तू रोगनिवारक, तू चिरन्तन, हे तू चिरन्तन!

आह्वान करता हूँ तेरा, हे दयावान, हे भव्य, हे आदेशकर्ता! तू परिपूरक, रोगनिवारक, तू चिरन्तन, हे तू चिरन्तन!

आह्वान करता हूँ तेरा, हे प्रियतम्, हे चिरवांछित, हे परमानन्द ! तू परिपूरक, तू रोगनिवारक, तू चिरन्तन, हे तू चिरन्तन!

आह्वान करता हूँ तेरा, हे परमशक्तिशाली, हे पालनहार, हे सामर्थ्यवान! तू परिपूरक, तू रोगनिवारक, तू चिरन्तन, हे तू चिरन्तन!

मैं आह्वान करता हूँ तेरा, हे चेतना, हे प्रकाश, हे परम प्रत्यक्ष! तू परिपूरक, तू रोगनिवारक, तू चिरन्तन, हे तू चिरन्तन!

मैं आह्वान करता हूँ तेरा, हे शासक, हे स्वनिर्भर, हे सर्वज्ञ। तू परिपूरक, तू रोगनिवारक, तू चिरन्तन, हे तू चिरन्तन!

मैं आह्वान करता हूँ तेरा, हे सर्वसुलभ, हे सर्वज्ञात, हे सर्वनिगूढ़ ! तू परिपूरक, तू रोगनिवारक, तू चिरन्तन, हे तू चिरन्तन!

मैं आह्वान करता हूँ तेरा, हे अगोचर, हे विजेता, हे वरदाता, तू परिपूरक, तू रोगनिवारक, तू चिरन्तन, हे तू चिरन्तन!

मैं आह्वान करता हूँ तेरा, हे सर्वशक्तिमंत, हे सहायक, हे आवरणदाता! तू परिपूरक, तू रोगनिवारक, तू चिरन्तन, हे तू चिरन्तन!

मैं आह्वान करता हूँ तेरा, हे स्वरूपदाता, हे संतुष्टिदाता, हे उन्नमूलक! तू ही है पर्याप्त, रोगनिवारक, चिरस्थायी, हे तू चिरस्थायी !

मैं आह्वान करता हूँ तेरा, हे उदीयमान, हे एकत्रकर्ता, हे उन्नायक! तू ही है पर्याप्त, रोगनिवारक, चिरस्थायी, हे तू चिरस्थायी !

मैं आह्वान करता हूँ तेरा, हे पूर्णकर्ता, हे अप्रतिबंधित, हे उदार! तू ही है पर्याप्त, रोगनिवारक, चिरस्थायी, हे तू चिरस्थायी !

मैं आह्वान करता हूँ तेरा, हे परोपकारी, हे रोकनेवाले, हे सृष्टिकर्ता! तू ही है पर्याप्त, रोगनिवारक, चिरस्थायी, हे तू चिरस्थायी !

मैं आह्वान करता हूँ तेरा, हे परम उदात्त, हे सौन्दर्यवान, हे परम उदार! तू परिपूरक, तू रोगनिवारक, तू चिरन्तन, हे तू चिरन्तन!

मैं आह्वान करता हूँ तेरा, हे न्यायकर्ता, हे दयावान, हे उदार! तू परिपूरक, तू रोगनिवारक, तू चिरन्तन, हे तू चिरन्तन!

मैं आह्वान करता हूँ तेरा, हे सर्वसम्मोहक, हे सदाअस्तित्ववान, हे परम ज्ञाता! तू परिपूरक, तू रोगनिवारक, तू चिरन्तन, हे तू चिरन्तन!

मैं आह्वान करता हूँ तेरा, हे भव्य, हे युगातीत, हे उदार! तू परिपूरक, तू रोगनिवारक, तू चिरन्तन, हे तू चिरन्तन!

मैं आह्वान करता हूँ तेरा, हे सुसंरक्षित, हे आनंद के स्वामी, हे इष्ट! तू परिपूरक, तू रोगनिवारक, तू चिरन्तन, हे तू चिरन्तन!

मैं आह्वान करता हूँ तेरा, हे सर्वदयालु, सर्वकृपालु, हे परम हितैषी! तू परिपूरक, तू रोगनिवारक, तू चिरन्तन, हे तू चिरन्तन!

मैं आह्वान करता हूँ तेरा, हे सबके आश्रय, हे सबके संरक्षणस्थल! हे सबके सुरक्षादाता, तू परिपूरक, तू रोगनिवारक, तू चिरन्तन, हे तू चिरन्तन!

मैं आह्वान करता हूँ तेरा, हे सबके सहायक, हे सबके द्वारा आह्वानित!, हे सबके जीवनदाता, तू परिपूरक, तू रोगनिवारक, तू चिरन्तन, हे तू चिरन्तन!

मैं आह्वान करता हूँ तेरा, हे प्रकटकर्ता, हे विनाशकर्ता, हे परम दयावान! तू परिपूरक, तू रोगनिवारक, तू चिरन्तन, हे तू चिरन्तन!

मैं आह्वान करता हूँ तेरा, हे तू मेरी आत्मा, हे तू मेरे प्रियतम, हे तू मेरी आस्था! तू परिपूरक, तू रोगनिवारक, तू चिरन्तन, हे तू चिरन्तन!

मैं आह्वान करता हूँ तेरा, हे प्यासहर्ता, हे ज्ञानातीत स्वामी, हे अनमोल! तू परिपूरक, तू रोगनिवारक, तू चिरन्तन, हे तू चिरन्तन!

मैं आह्वान करता हूँ तेरा, हे महानतम् स्मरण, हे सर्वोत्तम नाम, हे प्राचीनतम् मार्ग! तू परिपूरक, तू रोगनिवारक, तू चिरन्तन, हे तू चिरन्तन!

मैं आह्वान करता हूँ तेरा, हे सर्वाधिक प्रशंसित, हे परम पावन, हे परम पुनीत! तू परिपूरक, तू रोगनिवारक, तू चिरन्तन, हे तू चिरन्तन!

मैं आह्वान करता हूँ तेरा, हे बंधन मुक्त करने वाले, हे परामर्शदाता, हे मुक्तिदाता! तू परिपूरक, तू रोगनिवारक, तू चिरन्तन, हे तू चिरन्तन!

मैं आह्वान करता हूँ तेरा, हे मित्र, हे चिकित्सक, हे सम्मोहक! तू परिपूरक, तू रोगनिवारक, तू चिरन्तन, हे तू चिरन्तन!

मैं आह्वान करता हूँ तेरा, हे प्रताप, हे सौन्दर्य, हे उदार! तू परिपूरक, तू रोगनिवारक, तू चिरन्तन, हे तू चिरन्तन!

मैं आह्वान करता हूँ तेरा, हे सर्वाधिक विश्वसनीय, हे सर्वोत्तम प्रेमी, हे प्रभात के स्वामी! तू परिपूरक, तू रोगनिवारक, तू चिरन्तन, हे तू चिरन्तन!

मैं आह्वान करता हूँ तेरा, हे प्रज्वलितकर्ता, हे प्रदीप्तिकर्ता, हे आनन्द के संवाहक! तू परिपूरक, तू रोगनिवारक, तू चिरन्तन, हे तू चिरन्तन!

मैं आह्वान करता हूँ तेरा, हे उदारता के स्वामी, हे परम करुणामय, हे परम दयालु! तू परिपूरक, तू रोगनिवारक, तू चिरन्तन, हे तू चिरन्तन!

मैं आह्वान करता हूँ तेरा, हे स्थिर, हे जीवन प्रदाता, हे समस्त अस्तित्व के स्रोत! तू परिपूरक, तू रोगनिवारक, तू चिरन्तन, हे तू चिरन्तन!

मैं आह्वान करता हूँ तेरा, हे सर्वभेदी, हे सर्व द्रष्टा ईश्वर, हे वाणी के स्वामी! तू परिपूरक, तू रोगनिवारक, तू चिरन्तन, हे तू चिरन्तन!

मैं आह्वान करता हूँ तेरा, हे प्रकट, पर निगूढ़, हे अदृश्य, पर कीर्तिमान, हे दर्शक जिसकी खोज सभी करते हैं! तू परिपूरक, तू रोगनिवारक, तू चिरन्तन, हे तू चिरन्तन!

मैं आह्वान करता हूँ तेरा, हे प्रेमियों के प्राणहर्ता, हे दुष्टों पर कृपालु ईश्वर,

हे परिपूरक, मैं आहूवान करता हूँ तेरा, हे परिपूरक

हे रोगनिवारक, मैं आह्वान करता हूँ, तेरा, हे रोगनिवारक

हे चिरंतन, मैं आह्वान करता हूँ तेरा, हे चिरंतन

तू सदा चिरंतन, हे तू चिरंतन

पावन है तू हे मेरे ईश्वर ! मैं याचना करता हूँ तुझसे तेरी उदारता के माध्यम से जिससे कृपा और करुणा के द्वार खोल दिये गये, जिससे शाश्वतता सिंहासन पर तेरी पावनता का मन्दिर स्थापित हुआ। और तेरे अनुग्रह के माध्य से, जिससे तूने अपनी उदारताओं और अर्पणों के सहभोज में समस्त सृष्टि को आमंत्रित किया! और अपनी कृपा के द्वार तूने अपने स्वयं में अपने शब्द 'हाँ' से उन समस्त की ओर से जो धरती और आकाश

में है; उत्तर दिया उस घड़ी जब तेरी प्रभुसत्ता और तेरा वैभव प्रकट हुआ, और प्रभात बेला में जब तेरे साम्राज्य की शक्ति को प्रकट किया गया। इन परम सौंदर्यवान नामों के माध्यम से, इन परम उदात्त और भव्य गुणों के माध्यम से, और तेरे परम उदात्त स्मरण, और शुद्ध और निर्मल सौंदर्य के माध्यम से, तेरे परम गुप्त मण्डप में, तेरे गुप्त प्रकाश के माध्यम से और प्रत्येक प्रातः और सांय तेरी विपदा के परिधान में आवृत्त तेरे नाम के माध्यम से, इस पवित्र पाती के संवाहक की तू रक्षा कर और उसकी भी रक्षा कर जो इसका पाठ करे, जो इसे प्राप्त करे और जो भी उस घर के पास से गुजरे जहाँ यह पाती रखी हुई हो। इसके माध्यम से तू प्रत्येक रोगी, अस्वस्थ और दीन-हीन को, प्रत्येक दुःख और व्यथा से, प्रत्येक धृणित वेदना और क्लेश से आरोग्य प्रदान कर और इसके द्वारा तू उसका जो तेरे मार्गदर्शन के पथों और तेरी क्षमा और अनुग्रह के मार्गों पर चलना चाहता है, मार्गदर्शन कर।

तू सत्य ही शक्तिशाली, सर्वपर्याप्त, रोगनिवारक, संरक्षक, प्रदाता, करूणामय, सर्वउदार, सर्वदयावान है।

- बहाउल्लाह

तीर्थयात्रा की पाती

(131)

(यह पाती बाब और बहाउल्लाह की सामधियों पर पढ़ी जाती है। उनकी वार्षिकी पर भी इस पाती का हमेशा उपयोग किया जाता है।)

हे तू भव्यता के प्रकटावतार, अनन्तता के सम्राट! धरती और आकाश पर जो कुछ भी है तू उन सबका स्वामी है; तुझ पर ही वह कीर्ति आश्रित है, जो तेरी दिव्य आत्मा से उदित हुई है और वह गरिमा जो तेरे दैदीप्यमान सौन्दर्य से चमकी है। मैं साक्षी देता हूँ कि तुझसे ही ईश्वर की सत्ता और साम्राज्य, उसकी भव्यता और उसकी गरिमा प्रकट हुई और चिरस्थायी आभा के दिवानक्षत्रों ने अपनी कांति बिखेरी, तेरी अकाट्य आज्ञा के आकाश में और सृष्टि के क्षितिज पर अगोचर का सौन्दर्य चमका है। मैं पुनः साक्षी देता हूँ कि तेरी तूलिका के स्पंदन मात्र से तेरा विधान, 'तेरा अस्तित्व हो', प्रभावशाली हो उठा और ईश्वर के निगूढ़ रहस्य प्रकट हो गये, समस्त वस्तुओं को अस्तित्व प्रदान किया गया और समस्त प्रकटीकरण धरती पर भेजे गये।

मैं यह भी साक्षी देता हूँ कि तेरे सौन्दर्य के द्वारा ही उस आराध्य का मुखड़ा उद्घाटित हुआ है और तेरे मुखड़े से ही ईष्ट का मुखड़ा प्रभासित हुआ है। तूने अपने एक शब्द से अपनी सम्पूर्ण सृष्टि के मध्य अपना निर्णय सुना दिया कि जो तेरे भक्त होंगे वे गरिमा के शिखर को प्राप्त होंगे और जो अनास्थावान होंगे वे पतन की गर्त को प्राप्त होंगे।

मैं साक्षी देता हूँ कि जिसने तुझे जाना है, उसने ईश्वर को जाना है और जिसे तेरी निकटता प्राप्त हुई है उसे ईश्वर की निकटता प्राप्त हुई है। वह सौभाग्यशाली है जिसने तुझमें और तेरे चिन्हों में भरोसा किया है, और तेरी सत्ता के समक्ष विनत हुआ है और तुझसे मिलकर जिसका मान बढ़ा है और जिसे तेरी कृपा के आनन्द की अनुभूति हुई है, और जिसने तेरी परिक्रमा की है, और जो तेरे सिंहासन के समक्ष खड़ा है। उसका दुर्भाग्य होगा, जिसने तेरे मार्ग का उल्लंघन किया है और तुझे अस्वीकार किया है, और तेरे चिन्हों को अस्वीकार किया है और तेरी सत्ता को चुनौती दी है, और तेरे विरोध में उठ खड़ा हुआ है और तेरे मुखड़े के समक्ष अपना अहंकार दिखाया है, और तेरे प्रमाणों का खण्डन किया है और जो तेरे शासन और सत्ता से दूर भाग गया है और जिसकी गिनती उन अविश्वासियों में हुई है जिनके नाम तेरे आदेश की उँगलियों से तेरी पवित्र पातियों में अंकित किए हैं।

अतः, हे मेरे ईश्वर, मेरे प्रियतम्! अपनी कृपा एवं दया की दाहिनी भुजा से मुझ पर अपने अनुग्रह के पावन समीर प्रवाहित कर कि वे मुझे स्वयं मुझसे और संसार से दूर खींच कर, तेरी निकटता और सान्निध्य के प्रांगण तक ले जाये। तू जैसा चाहे वैसा करने में समर्थ है। तू सत्य ही समस्त वस्तुओं से परे है।

ईश्वर का स्मरण और उसकी स्तुति, ईश्वर का तेज और उसका प्रकाश तुझ पर विराजे; हे तू, जो उसका सौन्दर्य है। मैं साक्षी देता हूँ कि सृष्टि की दृष्टि ने तुझ जैसा अत्याचार-पीड़ित कभी नहीं देखा होगा; तू अपने जीवन के प्रत्येक दिन विपदाओं के महासिंधु के तल में डूबा रहा। एक समय तू ज़ंजीरों और बेड़ियों से जकड़ा रहा, एक अन्य समय तुझे शत्रुओं की तलवारों ने धमकाया, फिर भी, बावजूद इन सबके, तूने मानव को पालन करने योग्य वे विधान दिये जो सर्वज्ञ, सर्वप्रज्ञ के द्वारा तुझे दिये गये थे।

ऐसा हो कि मेरी चेतना उन यातनाओं की बलि चढ़ जाये, जो तूने सही और मेरी आत्मा उन कष्टों की भेंट चढ़ जाये, जो तूने सहीं। मैं ईश्वर से याचना करता हूँ तेरे और उन सबके नाम से, जिनके मुखड़े, तेरे मुखड़े के प्रकाश से प्रकाशवान हुए हैं और जिन्होंने तेरे प्रेम के वशीभूत हो समस्त आज्ञाओं का पालन किया है, कि तू अपने और अपने प्राणियों के मध्य का आवरण हटा दे, और मुझे इहलोक और परलोक के शुभ-मंगल का दान दे। तू, सत्य ही, शक्तिमान, प्रशंसित गरिमामय, क्षमाशील, दयालु है।

हे मेरे स्वामी, मेरे ईश्वर! तू अपने आशीष इस दिव्य तरूवर और इसकी शाखाओं, और इसकी टहनियों और इसकी पत्तियों और इसकी शाखाओं और इसकी प्रशाखाओं को देता रह। आक्रमणकारियों के षड़यंत्रों और विपदा के तूफ़ानों से इसकी रक्षा कर। तू सत्य ही सर्वसमर्थ, सर्वशक्तिशाली है। हे मेरे स्वामिन! मेरे ईश्वर्, तू अपने सेवकों एवं सेविकाओं को भी आशीष दे जिन्हें तेरी निकटता प्राप्त हुई है। सत्य ही, तू कृपालु है, जिसकी कृपा शाश्वत है। तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं, सदा-क्षमाशील, सर्व-उदार।

- बहाउल्लाह

तीर्थयात्रा की प्रार्थना

".....जो भी इस प्रार्थना को गहन भक्ति और विनम्रता से पढ़ेगा वह इस सेवक के हृदय को प्रसन्नता, आनन्द और उल्लास प्रदान करेगा,.....यह साक्षात् उससे मिलन के समान होगा।"

-अब्दुल-बहा

(132)

वह महिमामय है!

हे ईश्वर, मेरे ईश्वर! दीन और अश्रुपूरित मैं अपने याचक हाथ तेरी ओर फैलाता हूँ और अपना मुखड़ा तेरी देहरी की उस धूल से मंडित करता हूं, जो विद्वानों के ज्ञान और उन सबकी स्तुति से परे है, जो तेरा महिमागान करते हैं। अपने द्वार पर खड़े अपने दीन और विनीत सेवक को दयापूर्वक देख, उस पर अपने करुणामय नेत्रों की दयादृष्टि डाल और उसे अपनी अनन्त कृपा के सागर में निमग्न कर ले।

हे स्वामी ! तेरा यह सेवक असहाय है, विनीत, पूर्ण आस्था के साथ तेरे ही हाथों में अपने आपको समर्पित करते हुए, अत्यन्त भक्तिभाव से, अश्रूपूर्ण नयन से तुझे पुकार रहा है और कह रहा है:

हे स्वामी, मेरे ईश्वर ! मुझे अपने प्रियजनों की सेवा करने की कृपा प्रदान कर, अपने प्रति मेरे सेवाभाव को दृढ़ कर, अपनी पावनता के प्रांगण और महिमामय भव्य साम्राज्य में स्तुति और प्रार्थना के प्रकाश से मेरा ललाट आलोकित कर दे और अपनी महिमा के साम्राज्य की प्रार्थना की ज्योति प्रदीप्त कर दे। अपने दिव्य प्रवेश द्वार पर स्वार्थविहीन रहने में मेरी सहायता कर और अपनी पावन परिधि में समस्त वस्तुओं से अनासक्त होने में मुझे समर्थ बना। हे स्वामी, निःस्वार्थता के पात्र से मुझे पान करने दे, निःस्वार्थता का ही परिधान पहना और मुझको इसके महासागर में निमग्न कर दे। मुझे अपने प्रियजनों की राहों की धूल बना और मुझे ऐसा आशीष दे कि मैं, अपनी आत्मा उस धरती के लिये बलिदान कर सकूँ जिस पर, तेरे पथ में तेरे प्रियजन चले हों, हे सर्वोच्च महिमा के स्वामी!

इस प्रार्थना के द्वारा तेरा यह सेवक तुझे दिन-रात स्मरण करता है, इसके हृदय की अभिलाषा पूर्ण कर दे, हे स्वामी! इसके हृदय को प्रकाशित कर दे, इसके अंतर्तम को

आनंदित कर दे, इसकी ज्योति जला दे, ताकि यह तेरे धर्म और तेरे सेवकों की सेवा कर सके।

तू दाता, करुणामय, दयालु, कृपालु है!

-अब्दुल-बहा

अधिदिवस

(अधिदिवस उपवास, चार दिन (पाँच दिन अधि वर्ष में) बहाई वर्ष के अंतिम माह 'उच्चता' के पहले आते हैं (26 फरवरी से 1 मार्च़) बहाउल्लाह ने 'किताब-ए-अक़दस ' में आदेशित किया। इन दिनों को 'अय्याम-ए-हा' के दिवस के रूप में सम्मिलित किया ये दिवस आध्यात्मिक रूप से उपवास की तैयारी को समर्पित होते हैं,। परोपकार, अतिथि-सत्कार, दानादि और उपहार देने के दिवस हैं।)

(133)

मेरे ईश्वर, मेरी अग्नि और मेरे प्रकाश! वे दिन जिन्हें तूने "अय्याम-ए-हा" (हा के दिवस, या अधिदिवस) अपने ग्रंथ में कहा है, प्रारम्भ हो गये हैं। हे तू, जो नामों का सम्राट है, और उपवास जिसे तेरी परमोच्च तूलिका ने उन सभी के लिए के लिये आदेशित किया है जो तेरी सृष्टि के साम्राज्य में निवास करते है, निकट आ रहे हैं। इन दिनों के नाम से और उन सबके नाम से जो इस दौरान तेरे आदेशों की बागडोर को दृढ़ता से थामे हुए हैं और जो तेरी शिक्षाओं से अभिभूत हैं, मैं तुझसे विनती करता हूँ, हे मेरे स्वामी, कि प्रत्येक आत्मा के लिये अपने प्रांगण में एक स्थान नियत कर और तेरे मुखारबिंद की ज्योति की भव्यता के प्रकटीकरण में प्रत्येक को एक आसन दे।

हे स्वामी ! तूने अपनी परम पावन पुस्तक में जो कुछ भी निर्दिष्ट किया है उससे कोई भी भ्रष्ट प्रवृत्ति उन्हें विमुख नहीं कर पाई है। ये तेरे धर्म के सम्मुख नत हुए हैं और तेरी परम पावन पुस्तक का इन्होंने ऐसे दृढ़ संकल्प से स्वागत किया है जो संकल्प स्वयं तुझसे जनित है। तूने उनके लिये जो भी आदेश दिया है उसका इन्होंने पालन किया है और जो कुछ तेरे द्वारा भेजा गया है उसके अनुसरण का चयन किया है।

तू देखता है, हे मेरे स्वामी, उन्होंने कैसे तेरे द्वारा तेरी पावन पुस्तक में प्रकटित सब कुछ को पहचाना और स्वीकार किया है। उन्हें, हे मेरे स्वामी, अपनी उदारता के हस्त से अपनी शाश्वत जलधाराएँ पीने को दे और तब उनके लिये वह पुरस्कार लिख जो तेरी निकटता के महासिंधु में निमग्न होने वालों के लिये और तुझसे मिलन की दिव्य मदिरा को प्राप्त करने वालों के लिये नियत किया गया है। मैं तुझसे याचना करता हूँ, हे राजाधिराज! कि उनके लिये इहलोक तथा परलोक का शुभ-मंगल विधान कर और उनके लिये वह अंकित कर जो तेरा कोई भी प्राणी नहीं खोज पाया है और उनकी गणना ऐसे लोगों के साथ कर जिन्होंने तेरे चतुर्दिक परिक्रमा की है और जो तेरे लोकों में से प्रत्येक लोक में, तेरे सिहांसन की परिधि की परिक्रमा करते हैं।

तू सत्य ही, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञाता, सर्वसूचित है।

- बहाउल्लाह

उपवास

परम पावन पुस्तक ”किताब-ए-अक़दस“ में लिखा है:

”हमने प्रौढ़ता (15 वर्ष की आयु) प्राप्त करने के प्रारम्भ से ही तुम्हें प्रार्थना एवं उपवास रखने का आदेश दिया है। यह ईश्वर द्वारा निर्धारित विधान है, जो तुम्हारा और तुम्हारे पूर्वजों का स्वामी है। इस दायित्व से उसने उन्हें मुक्त किया है जो बीमार या अधिक आयु के कारण अशक्त हैं।.....यात्रा करने वाले, बीमार तथा वे महिलाएँ जो बच्चों के साथ हैं या स्तनपान कराती हैं उन्हें अपनी करुणा के संकेतस्वरूप ईश्वर ने इस नियम से मुक्त रखा है।....सूर्योदय से सूर्यास्त तक खान-पान से परहेज कर और सावधान रह कि तेरी वासना इस पुस्तक में निर्दिष्ट इस कृपा से तुझे वंचित न कर दे।“

(134)

मैं तुझसे याचना करता हूँ, हे मेरे ईश्वर, तेरे समर्थ चिन्ह के नाम से और मानवों के मध्य तेरे अनुग्रह के प्रकटीकरण के नाम से कि मुझे अपनी निकटता के नगर द्वार से दूर न हटा। तेरे प्राणियों के मध्य व्याप्त तेरी कृपा की जो मैंने आशा की है, उसे निराशा में न बदल। हे मेरे ईश्वर! तू देखता है कि मैं तेरे पवित्रतम्, प्रकाशोत्तम्, शक्तिशाली, महानतम्, उच्चतम्, भव्यतम् नाम का स्मरण करता रहता हूँ और तेरे उस परिधान के आंचल की छोर से बंधा हूँ, जिससे इहलोक और परलोक में सभी बंधे हैं।

मैं तुझसे याचना करता हूँ, हे ईश्वर, तेरी मधुर वाणी और तेरे महान शब्द के नाम से कि मुझे निरंतर अपनी देहरी के निकट ला और मुझे अपनी दया की छाया और अपनी उदारता के चंदोवे से दूर न हटा। हे ईश्वर! तू देखता है कि मैं तेरे पवित्रतम्, प्रकाशोत्तम्, शक्तिशाली, महानतम्, उच्चतम्, भव्यतम् नाम का स्मरण करता रहता हूँ और तेरे उस परिधान के आंचल की छोर से बंधा हूँ, जिससे इस इहलोक और परलोक में सभी बंधे हैं।

मैं तुझसे याचना करता हूँ, हे मेरे ईश्वर, तेरे तेजोमय भाल की प्रभा और तेरे मुखड़े की उस ज्योति की उज्ज्वलता के नाम से जो उस सर्वोच्च क्षितिज से आलोकित होती है कि मुझे अपने परिधान की सुरभि से आकर्षित कर, और मुझे अपनी वाणी की दिव्य मदिरा का पान करा। हे ईश्वर! तू देखता है कि मैं तेरे पवित्रतम्, प्रकाशोत्तम्, शक्तिशाली, महानतम्, उच्चतम्, भव्यतम् नाम का स्मरण करता रहता हूँ और तेरे उस परिधान के आंचल की छोर से बंधा हूँ, जिससे इहलोक और परलोक में सभी बंधे हैं।

मैं तुझसे याचना करता हूँ, हे मेरे ईश्वर, तेरे उन केशों के नाम से जो तेरी सृष्टि के साम्राज्य में गूढ़ अर्थों की कस्तूरी सुगंध फैलाते हुए तेरे मुखमंडल पर उस समय लहराते हैं जब तेरी यशस्वी तूलिका तेरी पातियों के पृष्ठों पर गतिशील होती है, कि मुझे तेरे धर्म की सेवा करने के लिये ऐसी शक्ति दे कि मैं पीछे न हटूँ और न ही उनके संकेतों से बाधित हो पाऊँ जो तेरे चिन्हों को अस्वीकार कर चुके हैं और तेरे मुखड़े से विमुख हो गये हैं। हे ईश्वर! तू देखता है कि मैं तेरे पवित्रतम्, प्रकाशोत्तम्, शक्तिशाली, महानतम्, उच्चतम्, भव्यतम् नाम का स्मरण करता रहता हूँ और तेरे उस परिधान के आंचल की छोर से बंधा हूँ, जिससे इहलोक और परलोक में सभी बंधे हैं।

मै तुझसे याचना करता हूँ, हे मेरे ईश्वर, तेरे नाम से, जिसे तूने नामों का सम्राट बनाया है, जिसके द्वारा वे सब, जो आकाश में हैं, और वे सब, जो इस धरती पर हैं, आनन्द विभोर हो गये हैं, कि मुझे अपने सौन्दर्य के सूर्य के दर्शन के योग्य बना और मुझे अपनी वाणी की दिव्य मदिरा का पान करा। हे ईश्वर! तू देखता है कि मैं तेरे पवित्रतम्, प्रकाशोत्तम्, शक्तिशाली, महानतम्, उच्चतम्, भव्यतम् नाम का स्मरण करता रहता हूँ और तेरे उस परिधान के आंचल की छोर से बंधा हूँ, जिससे इहलोक और परलोक में सभी बंधे हैं।

मैं तुझसे याचना करता हूँ, हे मेरे ईश्वर, उच्चतम् शिखर पर बने हुए तेरी भव्यता के वितान के नाम से, और सर्वोच्च पर्वत पर तेरे धर्मप्रकाशन के चंदोवे के नाम से, कि मुझे अनुग्रहपूर्वक वह करने में सहायता दे, जो तेरी इच्छा है और जिसे तेरे उद्देश्य ने प्रकट किया है। हे ईश्वर! तू देखता है कि मैं तेरे पवित्रतम्, प्रकाशोत्तम्, शक्तिशाली, महानतम्, उच्चतम्, भव्यतम् नाम का स्मरण करता रहता हूँ और तेरे उस परिधान के आंचल की छोर से बंधा हूँ, जिससे इहलोक और परलोक में सभी बंधे हैं।

मैं तुझसे याचना करता हूँ, हे मेरे ईश्वर! अपने अनन्त सौन्दर्य के नाम से ऐसा वर दे कि मैं उन सबके प्रति मृतप्राय हो जाऊँ जो मेरा है और सदा-सर्वदा उसके प्रति जीवित रहूँ जो तेरा है। वह चिरस्थायी सौन्दर्य है, जिसके प्रकट होते ही सौन्दर्य का साम्राज्य भी आराधना में विनत हो यशोगान करने लगा है। हे ईश्वर! तू देखता है कि मैं तेरे पवित्रतम्, प्रकाशोत्तम्, शक्तिशाली, महानतम्, उच्चतम्, भव्यतम् नाम का स्मरण करता रहता हूँ और

तेरे उस परिधान के आंचल की छोर से बंधा हूँ, जिससे इहलोक और परलोक में सभी बंधे हैं।

मैं तुझसे याचना करता हूँ, हे मेरे ईश्वर! तेरे उस परमप्रिय नाम के प्रकटीकरण के माध्यम से जिसने प्रेमियों के हृदय को दग्ध कर दिया है और जिसका यशोगान करने के लिये धरती के समस्त निवासी उठ खड़े हुए हैं। मेरी सहायता कर कि मैं तेरी सृष्टि में, तेरे जनों के मध्य, तेरा स्मरण कर सकूँ। हे ईश्वर! तू देखता है कि मैं तेरे पवित्रतम्, प्रकाशोत्तम्, शक्तिशाली, महानतम्, उच्चतम्, भव्यतम् नाम का स्मरण करता रहता हूँ और तेरे उस परिधान के आंचल की छोर से बंधा हूँ, जिससे इहलोक और परलोक में सभी बंधे हैं।

मैं तुझसे याचना करता हूं, हे मेरे ईश्वर ! तेरे नामों के साम्राज्य में तेरी वाणी के पवन झकोरों के कारण दिव्य वृक्ष में होने वाले स्पंदन के नाम से कि मुझे उन सबसे दूर, बहुत दूर कर दे जिनसे तू दूर रहता है और मुझे उस बिन्दु तक ले चल, जहाँ तेरे संकेतों का अरुणोदय हुआ है। हे ईश्वर! तू देखता है कि मैं तेरे पवित्रतम्, प्रकाशोत्तम्, शक्तिशाली, महानतम्, उच्चतम्, भव्यतम् नाम का स्मरण करता रहता हूँ और तेरे उस परिधान के आंचल की छोर से बंधा हूँ, जिससे इहलोक और परलोक में सभी बंधे हैं।

मैं तुझसे याचना करता हूँ, हे मेरे ईश्वर! उस पावन अक्षर के नाम से, जिसके उच्चरित होते ही महासागर उमड़ पड़े, पवन प्रवाहमान हुआ, सुफल सामने आये, वृक्षों को बसंत का वैभव मिला, अतीत की धूंध छट गयी, समस्त आवरण हट गये और तेरे भक्तगण अपने अप्रतिबंधित स्वामी के मुखारबिंदु के प्रकाश की ओर बढ़ चले, कि अपने ज्ञान के खज़ाने और विवेक के पात्र से मुझे वह ज्ञान दे जो अब तक छिपा हुआ था। हे ईश्वर! तू देखता है कि मैं तेरे पवित्रतम्, प्रकाशोत्तम्, शक्तिशाली, महानतम्, उच्चतम्, भव्यतम् नाम का स्मरण करता रहता हूँ और तेरे उस परिधान के आंचल की छोर से बंधा हूँ, जिससे इहलोक और परलोक में सभी बंधे हैं।

मैं तुझसे याचना करता हूँ, हे मेरे ईश्वर! तेरे प्रेम की उस अग्नि के नाम से, जिसने तेरे चुने हुए जनो और प्रियजनों की आँखों से नींद चुरा ली है और मैं इस प्रभात के नाम से तुझसे याचना करता हूँ कि मुझे उनमें गिन, जिन्होंने तेरे द्वारा भेजे गये ग्रंथ में तेरी इच्छा से प्रकट हुए को पा लिया है। हे ईश्वर! तू देखता है कि मैं तेरे पवित्रतम्, प्रकाशोत्तम्,

शक्तिशाली, महानतम्, उच्चतम्, भव्यतम् नाम का स्मरण करता रहता हूँ और तेरे उस परिधान के आंचल की छोर से बंधा हूँ, जिससे इहलोक और परलोक में सभी बंधे हैं।

मैं तुझसे याचना करता हूँ, हे मेरे ईश्वर, तेरे मुखमंडल के प्रकाश के माध्यम से, जिसने तेरे भक्तजनों को तेरे विधानों के अनुपालन के लिये प्रेरित किया है और उन समर्पित लोगों के माध्यम से जिन्होंने तेरी राह पर चलते हुए तेरे शत्रुओं के प्रहारों का सामना किया, कि अपनी महान तूलिका से मेरे लिये उसका विधान कर जो तूने अपने विश्वासपात्र और चुने हुए लोगों के लिये किया है। हे ईश्वर! तू देखता है कि मैं तेरे पवित्रतम्, प्रकाशोत्तम्, शक्तिशाली, महानतम्, उच्चतम्, भव्यतम् नाम का स्मरण करता रहता हूँ और तेरे उस परिधान के आंचल की छोर से बंधा हूँ, जिससे इहलोक और परलोक में सभी बंधे हैं।

मैं तुझसे याचना करता हूँ, हे मेरे ईश्वर, तेरे नाम से जिसके माध्यम से तूने जो तेरे अभिलाषी हैं अपने प्रेमियों की पुकार सुनी है। जिनके माध्यम से तूने उनकी आहें सुनी हैं और जो तेरी निकटता पाना चाहते हैं, जिसके माध्यम से तूने उनकी अर्न्ततम की पुकार सुनी है और जिनकी आशा-आकांक्षा तुझसे ही जुड़ी हैं, जिनके माध्यम से तूने उनकी इच्छा पूरी की है; मैं तेरी कृपा और अनुकम्पा के नाम से याचना करता हूँ, जिनके माध्यम से क्षमाशीलता का महासिन्धु उमड़ा है, जिनके माध्यम से तेरे सेवकों पर तेरी उदारता के मेघ बरसे हैं, कि उन सबके लिये, जो तेरी ओर उन्मुख हुए हैं और जिन्होंने तेरे द्वारा आदेशित उपवास धारण किया है, वह विधान कर, वह पुरस्कार प्रदान कर जो समुचित है। ऐसे लोग तेरे आदेश के बिना नहीं बोलते और तेरे पथ में तेरे प्रेम के लिये अपना सर्वस्व न्योछावर कर देते हैं।

मैं तुझसे याचना करता हूँ, हे मेरे ईश्वर! तेरे नाम से और तेरे संकेतों के नाम से और तेरे प्रतीकों के नाम से और तेरे सौन्दर्य-सूर्य के जाज्वल्यमान प्रकाश के नाम से और तेरी महान शाखाओं के नाम से कि उनके पापों को क्षमा कर, जिन्होंने तेरे विधानों के अनुकूल उपवास धारण किया है और उसका पालन किया है जो तेरी परम पावन पुस्तक में विहित हैं। हे ईश्वर! तू देखता है कि मैं तेरे पवित्रतम्, प्रकाशोत्तम्, शक्तिशाली, महानतम्, उच्चतम्, भव्यतम् नाम का स्मरण करता रहता हूँ और तेरे उस परिधान के आंचल की छोर से बंधा हूँ, जिससे इहलोक और परलोक में सभी बंधे हैं।

- बहाउल्लाह

(135)

स्तुति हो तेरी, हे स्वामी मेरे ईश्वर! मैं तुझसे इस प्रकटीकरण के माध्यम से याचना करता हूँ जिससे अंधकार प्रकाश में परिवर्तित हो गया है, जिसके माध्यम से बार-बार उपासना स्थल का निर्माण हुआ है, और लिखित पाती प्रकट की गई है, लिपटे हुये बंडल को फैला दिया गया है। मैं तुझसे याचना करता हूँ कि मुझे और उन्हें, जो मेरे संगी हैं, वह प्रदान कर जो हमें तेरी सर्वातीत महिमा के आकाश में ऊँचे विचरण करने में समर्थ बनाये और हमें ऐसे सन्देहों के कलुष से मुक्त कर दे जिन्होंने शंकाशील लोगों तेरी एकता की छत्रछाया में आने से रोका है।

मैं वह हूँ, हे मेरे ईश्वर, जिसने तेरी स्नेहमयी उदारता की डोर को दृढ़ता से थाम लिया है और तेरी दया और तेरी अनुकम्पा के आंचल से बंधा हुआ है। तू मेरे लिये और मेरे प्रियजनों के लिये इहलोक और परलोक के शुभ-मंगल का विधान कर और तब उन्हें वह गुप्त उपहार प्रदान कर जिसका विधान तूने अपने सबसे चुने हुए जनों के लिये किया है।

ये वे दिन हैं, हे मेरे ईश्वर, जिसमें तूने अपने सेवकों को उपवास करने का आदेश दिया है। वह धन्य हैं जो मात्र तेरे लिये और तेरे अतिरिक्त अन्य समस्त वस्तुओं से पूर्णतया अनासक्त होकर, उपवास करता है। हे मेरे ईश्वर! मेरी सहायता कर और उन्हें भी सहायता दे, कि हम सब तेरी आज्ञा का पालन करें और तेरी शिक्षाओं पर चलें। सत्य ही तू अपनी इच्छानुसार सब कुछ करने में समर्थ है।

तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं। तू सर्वज्ञाता, सर्वप्रज्ञ है। स्तुति हो ईश्वर की, अखिल लोकों के ईश्वर की।

- बहाउल्लाह

(136)

हे दिव्य विधाता! जिस तरह में दैहिक कामनाओं, अन्न और जल से विरक्त हूँ, वैसे ही मेरे हृदय को भी अपने अतिरिक्त अन्य सब के प्रेम से शुद्ध और निर्मल कर दे। मेरी आत्मा को भ्रष्ट इच्छाओं और भ्रष्ट प्रवृत्तियों से बचा, इसकी रक्षा कर, ताकि मेरी चेतना पवित्रता की श्वांस के साथ संलाप कर सके और तेरे अतिरिक्त अन्य सबका परित्याग कर सके।

-अब्दुल-बहा

नवरूज़ की प्रार्थना

(137)

हे ईश्वर! तेरी ही स्तुति हो, तूने नवरूज़ को उनके लिये एक उत्सव के रूप में दिया है जिन्होंने तेरे प्रेम के कारण उपवास धारण किया है और उस सबका परित्याग किया है जो तेरी दृष्टि में अमान्य है। हे मेरे ईश्वर! वरदान दे, कि तेरे प्रेम की अग्नि और तेरे द्वारा विहित उपवास से उत्पन्न ताप उन सबको तेरे धर्म में प्रदीप्त कर दे और तेरे स्मरण और यशगान में प्रवृत्त कर दे।

हे मेरे स्वामी! जब तूने ही उन्हें अपने द्वारा निर्धारित उपवास के आभूषण से अलंकृत किया है, उन्हें अपनी करुणा और उदार कृपा से, अपनी स्वीकृति का आभूषण प्रदान कर, क्योंकि मानव का प्रत्येक कर्म तेरे ही अनुग्रह पर निर्भर है, तेरी ही आज्ञा पर आश्रित है। यदि तू उपवास तोड़ने वाले को उपवास करने वाला घोषित कर दे, तो उसकी गणना अनन्त काल से उपवास करने वालों में होगी; और यदि तेरे निर्णय में उपवास करने वाला उपवास तोड़ने वाला घोषित हो जाये, तो उसकी गणना उन लोगों में होगी जिन्होंने तेरे प्रकटीकरण के परिधान को अस्वच्छ कर दिया है, और जो तेरे जीवन-निर्झर के स्फटिक जल से दूर कर भटक गये हैं।

तू वह है जिसके माध्यम से 'प्रशंसनीय है तू निज कार्यों में' की ध्वजा फहरायी गई है और "अनुपालित है तू निज आदेश में" की पताका फहराई गई है। हे मेरे ईश्वर! अपने सेवकों को तू अपने पद का ज्ञान करा, ताकि वे जान सकें कि प्रत्येक वस्तु की उत्तमता तेरी आज्ञा, तेरे पावन शब्द पर आश्रित है; प्रत्येक कर्म का गुण तेरी इच्छा और अनुकम्पा पर निर्भर है, ताकि वे जान सकें कि मानव के कर्म की बागडोर तेरी स्वीकृति और तेरी आज्ञा की पकड़ में है। उन्हें यह ज्ञान करा दे कि कुछ भी उन्हें तेरे सौन्दर्य से वंचित नहीं कर सकता। ईसामसीह के उद्गार हैं: "हे दिव्य चेतना (ईसा) के महान जनक! समस्त साम्राज्य तेरा है।" और इसी के लिये तेरे मित्र (मुहम्मद) ने आवाज लगाई: "तेरी स्तुति हो, हे परम प्रियतम, कि तूने अपने महान सौन्दर्य के दर्शन कराये हैं और अपने प्रियजनों के लिये उसका विधान किया है, जो उन्हें तेरे सर्वमहान नाम के सिंहासन के निकट लायेगा, जिनके माध्यम से, उनके अतिरिक्त, जिन्होंने तेरे सिवा अन्य सभी कुछ से स्वयं को अनासक्त कर लिया है, अन्य लोगों ने विलाप किया है। जो अनासक्त हुए हैं वे उसकी ओर उन्मुख हुए हैं, जो तेरे अस्तित्व को साकार करता है, जो तेरे गुणों का अवतार है।"

हे मेरे ईश्वर, वह जो तेरी शाखा है उसने और तेरे समस्त मित्रों ने आज के दिवस में अपना उपवास समाप्त किया है, जिसे उन्होंने तेरी सुप्रसन्नता के लिये तेरे विधानों के अधीन धारण किया था। हे ईश्वर, उनके लिये और उन सबके लिये जिन्होंने उपवास के दिनों में तेरी निकटता पाई है, वह सब मंगल विधान कर जिसे तूने अपने परम महान पुस्तक में विहित किया है। तब उन्हें वह प्रदान कर जो उनके लिये इहलोक और परलोक में लाभदायक हो। तू सत्य ही, सर्वज्ञाता, सर्वप्रज्ञ है।

- बहाउल्लाह

रिज़वान की पाती

(रिज़वान उत्सव 21 अप्रैल बहाउल्लाह् द्वारा अपने अनुयायियों के समक्ष अपने आगमन के उद्देश्य की परम महान उद्घोषणा की याद ताजा कराता है। बहाउल्लाह् ने इसे ”उत्सवों का सम्राट“ कहा है और परम पावन पुस्तक ”किताब-ए-अक़दस“ में इसकी तुलना उस महान दिवस से की गई है जिसमें समस्त सृजित वस्तुएँ पावनता के सागर में निमग्न हो गईं।)

(138)

दिव्य वसंत आ गया है, हे महालेखनी, सर्वदयालु का महापर्व शीघ्र ही निकट आ रहा है। अपने को तैयार कर ले और सम्पूर्ण सृष्टि के समक्ष ईश्वर के नाम को मुखरित कर और उसका यशगान कुछ इस प्रकार कर कि सम्पूर्ण सृष्टि पुनर्जीवित हो एक नवीन चेतना से भर जाये। बोल, चुप न रह। हमारे आशीर्वादयुक्त नाम के क्षितिज पर कृपा का सूर्य चमक उठा है, क्योंकि स्वर्गों के रचयिता तुम्हारे स्वामी के नाम के आभूषण से नामों का साम्राज्य अलंकृत हुआ है। धरती के समस्त राष्ट्रों के सम्मुख उठ खड़ी हो, सर्वमहान नाम की शक्ति से स्वयं को सुसज्जित कर और उनमें से न बन जो प्रतीक्षा करते हैं.....।

यह वह दिवस है जब अदृश्य जगत से आवाज आई है, ”हे वसुंधरा! तू सौभाग्यशाली है कि ईश्वर के पावन पग तुझ पर पड़े हैं और उसके शक्ति सम्पन्न सिंहासन के लिये तू चुनी गई है।“ महिमा का साम्राज्य हर्षोन्मादित हो कह रहा है: ”तेरे लिये मेरा जीवन न्योछावर हो जाये, क्योंकि जो सर्वदयालु का परमप्रिय है उसने तुझ पर अपनी सत्ता स्थापित की है। उस परम पावन नाम के सहारे जिसका वचन अतीत में दिया गया था, जो भविष्य का नियंता है.....।

परम प्रियतम आ गया है, उसके दाहिने हाथ में परम पावन नाम की दिव्य मदिरा है। वह सौभाग्यशाली है जो उसकी ओर उन्मुख हुआ है और जिसने जी भर कर उसका पान किया है। तभी वह हर्षोन्माद में कहता हैः ”तेरी स्तुति हो, हे ईश्वर के संकेतो के दर्शन कराने वाले! ईश्वर के न्याय की सौगंध! सत्य की शक्ति के माध्यम से समस्त गुप्त रहस्य प्रकट कर दिये गये हैं। ईश्वर की समस्त अनुकम्पाएँ उन पर कृपास्वरूप बरसाई गई हैं। शाश्वत जीवन का अमृत-घट मानव को मिला है। सर्वप्रिय ने अमृत-घट की हर बूंद को अपना स्पर्श दिया है। आओ, प्रतीक्षा मत करो, पल भर तो पास आओ इस अमृत-घट के।“.....

हे बहा के लोगो! आनन्द के अतिरेक के प्रवाह में बह चलो और अनन्त आनन्द के दिन का स्मरण करो, जब पुरातन काल के सर्वशक्तिमान ईश्वर ने उस स्थान पर उद्घोष किया था, जहाँ से सर्वदयालु ईश्वर ने सम्पूर्ण विश्व को अपने नाम की ज्योति का प्रकाश दिया था। ईश्वर हमारा साक्षी है, यदि उस ईश्वर के समस्त गुप्त रहस्य प्रकट कर दिये जायें तो धरती के समस्त निवासी मूर्छित और मृतप्राय हो जायेंगे; वही जीवन पायेंगे जिन्हें ईश्वर देना चाहेगा, जो सर्वज्ञ, सर्वप्रज्ञ है!

संदेह से परे ईश्वर के प्रमाणों को प्रकट करने वाली तूलिका पर ईश्वर के शब्दों का कुछ ऐसा प्रभाव पड़ा कि वह आगे कुछ भी न लिख सकी और इन शब्दों के साथ उसने अपनी पाती को समाप्त किया: ”मेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं, मैं सर्वोच्च सर्वशक्तिमान, सर्वश्रेष्ठ और सर्वज्ञाता हूँ।“

- बहाउल्लाह

कार्मल की पाती

(139)

इस दिवस की सर्वत्र महिमा हो, एक ऐसा दिवस जिसमें दया की सुरभि समस्त सृजित वस्तुओं पर तरंगित हुई है, एक ऐसा समृद्ध दिवस जिसकी समानता अतीत के कालों और शताब्दियों से कभी भी नहीं की जा सकती, एक ऐसा दिवस जब प्राचीनतम ईश्वर ने अपना रूख अपने पावन-स्थल की ओर किया है। वहाँ समस्त सृजित वस्तुओं ने और उनके अतिरिक्त देवदूतों ने गुहार लगाई है, ”हे कार्मल तू शीघ्रता कर, देख! ईश्वर के मुखमंडल का प्रकाश, नामों के साम्राज्य के सम्राट और स्वर्गों के रचयिता का पदार्पण यहाँ हुआ है।“

आनन्दविह्वल कार्मल का स्वर कुछ इस प्रकार गूंजा, ”मेरा जीवन तेरे लिये न्योछावर हो जाये, तूने मेरी ओर निहारा है, अपनी कृपा मुझ पर बरसाई है और अपने पग मेरी ओर बढ़ाये हैं। हे अनन्त जीवन के उद्गम, तेरे वियोग में मैं प्राणविहीन हो गया, विरह ने मेरी आत्मा झुलसा दी है। तुझे शत्-शत् नमन, कि तूने मुझे अपनी पुकार सुनने के योग्य बनाया, अपने पग मेरी ओर बढ़ाकर मुझे मान दिया और अपने इस दिवस की जीवनदायिनी सुरभि से मेरी आत्मा को नवस्फूर्ति दी, तेरी महालेखनी की गूंज तेरे लोगों के मध्य तेरा आह्वान है और जब वह घड़ी आई तब तुम्हारा प्रतिरोधरहित धर्म प्रकट किया गया तब तूने अपनी महालेखनी में अपनी श्वांस फूंक दी और देखो, समस्त सृष्टि कम्पायमान हो उठी और उस ईश्वर के खज़ाने में छिपे, समस्त गुप्त रहस्यों पर से आवरण हट गया, ईश्वर जो सभी सृजित वस्तुओं का स्वामी है।“

जैसे ही उसकी आवाज ईश्वर के पावन पर्वत तक पहुँची वैसे ही हमने उत्तर दिया, ”हे कार्मल, अपने स्वामी को धन्यवाद दे। मुझसे विरह की अग्नि तुम्हें दग्ध करती जा रही थी, मेरी उपस्थिति का महासागर जब तेरे समक्ष उमड़ा तो तेरे नेत्रों में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई और समस्त सृष्टि हर्षोन्मान्दित हो गई तथा समस्त दृश्य तथा अदृश्य वस्तुओं के मध्य आनन्द व्याप्त हो गया। खुशियाँ मनाओ, क्योंकि इस दिवस में ईश्वर ने तुझ पर अपना सिंहासन स्थापित किया है, तुझे अपने चिन्हों का उद्गमस्थल बनाया है और अपने प्रकटीकरण के प्रमाणों का दिवानक्षत्र बनाया है। उसका सौभाग्य है जो तेरी परिक्रमा करता है जो तेरी महिमा के प्रकटीकरण का उद्घोष करता है और उस आशीष का स्मरण करता है जो तेरे स्वामी ने कृपापूर्वक तुझ पर बरसाई है। सर्वमहिमाशाली अपने स्वामी

के नाम से अमरत्व के पात्र को कसकर थाम लो और उसे धन्यवाद दो, क्योंकि तुझ पर अपनी दया के प्रतीकस्वरूप उसने तुम्हारी वेदना को प्रसन्नता में बदल दिया है और तेरे कष्टों को आशीषपूर्ण आनन्द का रूप दिया है। वस्तुतः, वह उस स्थान को प्रेम करता है जो उसका सिंहासन बनाया गया है, जिस पर उसके पग पड़े हैं, जो उसकी उपस्थिति से सम्मानित हुआ है, जहाँ से उसने शंखनाद किया है और जिस पर उसने अपने अश्रू बहाये हैं।“

”हे कार्मल, जिऑन को गुहार लगा और यह शुभ संदेश दे: वह जो नश्वर नेत्रों से ओझल था, प्रकट हो गया है! उसकी सर्वविजयी सत्ता स्थापित हुई है, उसकी सर्वग्राही भव्यता प्रकट हुई है। सावधान! कहीं तुम संकोच न कर बैठो या अपने कदम रोक न लो। शीघ्रता करो और आगे बढ़ कर ईश्वर के नगर की परिक्रमा करो जो दिव्य काबा से अवतरित हुआ है, जिसके इर्द-गिर्द ईश्वर के प्रिय पात्रों ने, शुद्ध हृदयी जनों ने और देवदूतों ने परिक्रमा की है। देखो, किस प्रकार से धरती के कोने-कोने में, इसके प्रत्येक नगर में इस प्रकटीकरण के शुभ संदेश का उद्घोष करने के लिये आकुल हूँ - एक ऐसा प्रकटीकरण जिसकी ओर सिनाई पर्वत का हृदय आकर्षित हुआ है और जिसके नाम की गुहार सदा ”प्रज्वलित झाड़ी“ ने लगाई है, ”धरती और आकाश के समस्त साम्राज्य स्वामियों के स्वामी ईश्वर के हैं“ सत्य ही, यह वह दिवस है, जिसमें धरती और सागर दोनों इस उद्घोष पर आनन्दविह्वल हुए हैं, वह दिवस जिसके लिये नश्वर मानव के मन-मानस की समझ से परे वे समस्त वस्तुएँ दी गई हैं जिन्हें ईश्वर ने अपने कृपास्वरूप निर्धारित किया है। शीघ्र ही ईश्वर अपने संदेश की नौका तुम्हारे मन-सागर तक लायेगा और बहा के उन जनों को प्रकट करेगा जो ”सर्वमहान नामों की पुस्तक“ में वर्णित किये गये हैं।“

समस्त मानवजाति के स्वामी की स्तुति हो, जिसके नाम मात्र की चर्चा से धरती का कण-कण कम्पायमान हो उठा और महिमा की जिह्वा ने मुखरित हो उसे अनावृत किया जो ईश्वर के ज्ञान से आवृत उसकी शक्ति के खज़ाने में अब तक गुप्त था। सत्यतः वह सर्वशक्तिशाली, सर्वोच्च ईश्वर अपने नाम की अंतःशक्ति के सहारे उन सब का सम्राट है जो धरती और आसमानों पर हैं।

- बहाउल्लाह

सेवा

हे ईश्वर और समस्त नामों के ईश्वर और आसमानों के निर्माता! मैं तेरे उस नाम से तुझ से विनती करता हूँ, जिसके द्वारा, वह जो तेरे सामर्थ्य का उद्गमस्थल और तेरी शक्ति का उदयस्थल है, प्रकट हुआ है, जिसके द्वारा प्रत्येक ठोस वस्तु को प्रवाहमान किया गया है और प्रत्येक मृत शरीर को जीवित किया गया है और प्रत्येक गतिमान चेतना की सम्पुष्टि की गई है - मैं तुझसे विनती करता हूँ कि तेरे अतिरिक्त, मुझे हर प्रकार की आसक्ति से छुटकारा पाने, तेरे धर्म की सेवा करने और वह इच्छा पूरी करने के लिए, जिसकी इच्छा तूने अपनी प्रभुसत्ता की शक्ति के द्वारा की है, उस इच्छा को पूरा कर सकूँ।

इसके अतिरिक्त, हे मेरे ईश्वर, मैं तुझसे विनती करता हूँ कि मेरे लिए उसका विधान कर जो मुझे इतना सम्पन्न बना दे कि तेरे अतिरिक्त मुझे किसी अन्य की आवश्यकता न रहे। हे ईश्वर, तू मुझे देख रहा है कि मैं तेरी ओर उन्मुख हूँ, और मेरे हाथ तेरी कृपा की डोर को थामे हुए हैं। मुझ पर अपनी दया भेज और मेरे लिए वह लिख दे जो तूने अपने चुने हुए लोगों के लिए लिखा है। तू जो चाहे वह करने में समर्थ है। तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं, सदा क्षमाशील, सर्वउदार।

-बहाउल्लाह

मैं तेरी स्तुति करता हूँ, हे मेरे ईश्वर कि तेरी स्नेहमयी कृपा की सुगंध ने मुझे आनंदविभोर कर दिया है, तेरी दया की मंद समीरों ने मुझे तेरे उदारतापूर्ण अनुग्रह की ओर प्रवृत्त किया है। हे मेरे स्वामी, अपनी मुक्तहस्तता की उंगलियों से उस जीवन जल का जिसने प्रत्येक को, जिसने उसे ग्रहण किया है, समर्थ बनाया है, तेरे अतिरिक्त सभी आसक्तियों से छुटकारा दिलाने के लिए और तेरी समस्त प्राणियों से अनासक्ति के वातावरण में उड़ान भरने के लिए और तेरे बहुविध उपहारों और तेरी स्नेहमयी कल्याण भावना पर दृष्टि जमाने के लिए, मुझे एक घूँट पिला दे।

हे मेरे स्वामी, हर परिस्थिति में तेरी सेवा करने और तेरे प्रकटीकरण एवं सौंदर्य के आराध्य मंदिर की ओर अग्रसर होने मे मुझे तत्पर रख। अगर यह तेरी इच्छा हो तो अपनी कृपा के चारागाह में मुझे पर एक कोमल शाख की भांति बहने दे, ताकि तेरी इच्छा की मंद समीरे मुझे तेरी प्रसन्नता के अनुरूप इस प्रकार स्पंदित करें कि मेरी गतिमानता और निश्चलता पूर्णतया तेरे द्वारा संचालित हो।

तू वह है जिसके नाम से निगूढ़ रहस्य प्रकट हुए और संरक्षित नाम उद्घाटित हुआ और मोहरबंद प्याले की मोहरें खोली गईं, समस्त सृष्टि पर, चाहे भूत की हो या भविष्य की, इसकी सुगंध बिखेरी गयी। वह जो प्यासा था, हे मेरे स्वामी, तेरी कृपा के जीवंतजल की प्राप्ति के लिए दौड़ पड़ा है और भाग्यहीन प्राणी ने तेरी समृद्धि के महासागर की तलहटी में स्वयं को डुबाने की लालसा की है।

मैं तेरी महिमा की सौगंध खाता हूँ, हे जगत के प्रिय स्वामी और उन सभी की कामना, जिन्होंने तुझे पहचाना है। मैं अत्यधिक दुखी हूँ तुझसे अपने वियोग की पीड़ा से उन दिनों में जब तेरी उपस्थिति के सूर्य ने तेरे जनों पर अपनी प्रभा बिखेरी है। तब मेरे लिए वह पुरस्कार लिख दे जो उनके लिए आदेशित है जिन्होंने तेरे मुखड़े को एकटक निहारा है, और तेरी अनुमति से तेरे सिंहासन के प्रांगण में प्रवेश प्राप्त किया है और तेरे आदेश से तुझसे मिलन किया हैं।

मैं याचना करता हूँ तुझसे, हे मेरे स्वामी, तेरे उस नाम के द्वारा जिसकी भव्यता ने धरती और आकाश को आवृत किया है, कि मुझे शक्ति दे कि मैं अपनी इच्छा को, जो कुछ तूने अपनी पातियों में आदेशित किया है, समर्पित कर दूँ ताकि मैं अपने अंदर कोई भी इच्छा न खोज सकूँ सिवा उसके जो अपनी प्रभुसत्ता की शक्ति द्वारा अपनी इच्छा से तूने मेरे लिए नियत की है।

मैं किस ओर उन्मुख होऊँ, हे मेरे ईश्वर, उस मार्ग के अतिरिक्त जिसे तूने अपने चुने हुये जनों के लिए निर्धारित किया है, मैं किसी अन्य मार्ग को खोज पाने में असमर्थ हूँ। पृथ्वी के सभी परमाणु उद्घोषित करते हैं, कि तू ईश्वर है और साक्ष्य देते हैं कि तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं। तू अनादिकाल से वह करने में जिसकी तूने इच्छा की, और वह आदेशित करने में जिसे तूने चाहा है समर्थ रहा है।

क्या तू मेरे लिए वह नियत करेगा हे मेरे ईश्वर, जो हर हाल में मुझे तेरी ओर अग्रसर करे और मुझे तेरी कृपा की डोर से बंधे होने, तेरे नाम की उद्घोषणा करने और जो कुछ तेरी लेखनी से प्रवाहमान हुआ है उसे खोजने के योग्य बनाये। मैं भाग्यहीन और अकेला हूँ, हे मेरे ईश्वर और तू सर्वसम्पन्न, सर्वउदात्त है।

मुझ पर दया कर, अपनी करूणा के आश्चर्यों द्वारा और मेरे जीवन में प्रति क्षण, उन वस्तुओं को भेज जिनके द्वारा तूने अपने प्राणियों के हृदयों की पुनर्रचना की है, जिन्होंने तेरी एकता में विश्वास किया है और वे समस्त प्राणी जो पूर्णरूप से तुझे समर्पित हैं।

तू सत्य ही, सर्वशक्तिशाली, सर्वउदात्त, सर्वज्ञाता, सर्वज्ञ है।

-बहाउल्लाह

प्रार्थना का प्रभाव

प्रार्थना के माध्यम से किसी समस्या का समाधान पाने के लिये पाँच चरणों का सुझाव प्रिय धर्मसंरक्षक शोग़ी एफ़ेंदी ने एक अनुयायी को दिया था जिन्हें नीचे दिया जा रहा है। यह वक्तव्य ”पिलग्रिम्स नोट्स” की श्रेणी में आता है, इसलिये इसे अधिकारिक वक्तव्य नहीं माना जा सकता, किन्तु यह निर्णय लेने में सहायक हो सकता है, इसलिये यह महसूस किया गया कि अनुयायियों को इससे वंचित नहीं रखा जाये।

पहला चरण:

प्रार्थना करें और उसके बारे में ध्यानपूर्वक चिन्तन करें। अवतारों द्वारा प्रकट की गई प्रार्थनाओं को करें क्योंकि इनमें सर्वाधिक शक्ति है। प्रार्थना के पश्चात कुछ पलों के लिये शांत भाव से गहन चिन्तन की अवस्था में रहें।

दूसरा चरण:

एक निर्णय लें और उस पर अटल रहें। सामान्यतः यह निर्णय ध्यानपूर्वक चिन्तन की अवस्था में लिया जाता है। लिये गये निर्णय के अनुरूप आगे कदम बढ़ाना शुरू में शायद असम्भव जान पड़े, लेकिन यदि आपको लगता है कि आपके द्वारा लिया गया निर्णय आपकी प्रार्थना का उत्तर है अथवा ऐसा लगता है कि समस्या का सामधान इसी से हो सकता है तो तुरंत अगले चरण की ओर बढ़ें।

तीसरा चरण:

लिये गये निर्णय के अनुरूप काम करने का दृढ़ संकल्प करें। इस स्थिति तक पहुँच कर अनेक लोग असफल हो जाते हैं। निर्णय दृढ़ संकल्प की अवस्था तक पहुँचते-पहुँचते बिखर जाता है और मात्र एक इच्छा अथवा अस्पष्ट आकांक्षा बन कर रह जाता है। जैसे ही दृढ़ संकल्प करें, तुरंत अगले चरण की ओर बढ़ें।

चौथा चरण:

अपने अंदर यह भरोसा जगायें कि आपके अंदर से शक्ति प्रवाहित होगी, सही मार्ग नज़र आयेगा, सही विचार आयेंगे, सही संदेश आपको प्राप्त होगा, सही सिद्धांत समझ में आयेंगे अथवा सही पुस्तक आपको दी जायेगी और समाधान के द्वार आपके सम्मुख खुल जायेंगे। आत्मविश्वास को सुदृढ़ करें और सही मार्गदर्शन आपके समक्ष होगा। आप जैसे ही प्रार्थना की स्थिति से उठें, तुरंत पाँचवे चरण की ओर बढ़ें।

पाँचवाँ चरण:

इस प्रकार कार्य करें जैसे आपकी समस्या का समाधान मिल चुका है। फिर अथक शक्ति के साथ उस दिशा में बढ़ें। और जब आप निर्धारित दिशा में बढ़ेंगे तो स्वयं महसूस करेंगे कि आप उस चुम्बक की भाँति हो गये हैं जो असीम साहस और शक्ति आपके अंदर तब तक बटोरता रहेगा जब तक आप अबाधित ईश्वरीय शक्ति के प्रवाहित होने का माध्यम नहीं बन जाते।

अनेक लोग प्रार्थना करते हैं, लेकिन पहले चरण की आधी दूरी भी तय नहीं कर पाते। कुछ जो गहन चिन्तन के बाद निर्णय की स्थिति में आते हैं, उस पर टिके रहने में असफल हो जाते हैं। कुछ अपने निर्णय के साथ आगे बढ़ने के दृढ़ संकल्प तक पहुँचते हैं, लेकिन कुछ ही लोग ऐसे होते हैं जिन्हें यह भरोसा होता है कि उनकी ज़रूरत के अनुसार सही समाधान ही उन्हें मिल पायेगा। कितने ऐसे लोग हैं जो इस मनोदशा में आगे बढ़ते हैं कि उनकी प्रार्थना सुन ली गई है, उनकी समस्या का समाधान उन्हें मिल गया है? ये शब्द कितने अर्थपूर्ण हैं, ”प्रार्थना से बढ़कर वह भावना है जिसके साथ यह कही गई है“ और भावना से भी बढ़कर है दृढ़ संकल्प और आत्मविश्वास जिसके साथ अपने निर्णय के अनुसार सफलता की राह पर हम आगे बढ़ते हैं।

- शोग़ी एफ़ेंदी

****